चमको

अजीमबेग चग़ताई

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७

पुस्तकालय संस्करण

मूल्य : सात रुपये

प्रकाशक
भारती पॉकेट बुक्स
५१८/६ बी, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-३२

मुद्रक : विवेक प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा, हरिहर प्रेस, दिल्ली

१

सोलह-सत्तरह साल की उम्र में मुझ बे-माँ बाप का आखिरी सहारा भी टूट गया। यानी छोटे चाचाजी का देहान्त हो गया और मुझे चिन्ता करनी पड़ी आजीविका कमाने की। तेल के महकमे के एक इंस्पेक्टर थे जो मुझे और मेरे चाचाजी को जानते थे। उन्होंने मुझे अपने महकमे के एक एजेन्ट की दूकान पर दस रुपये का बाबू नुमा कुली करा दिया। मेरी तालीम नवीं जमात तक थी और यहाँ मेरे सिपुर्द दफ्तर का ऐसा काम था जिसमें बिल बनाने, पार्सल छुड़ाने तथा खोलने से लेकर अपने बड़े बाबू के घर की तरकारी ला देने तक के काम भी शामिल थे। दस रुपये की तनख्वाह में बड़ी मुश्किल से गुजर चलती थी। एक टूटा-फूटा कच्चा मकान मैंने किराये पर ले लिया था। खुदा भला करे एक बड़ी बी का जो एक रुपया महीना तनख्वाह मुझसे लेतीं और घर में झाड़ देतीं, रोटी पका देतीं। फिर मुझे उनकी जात से भी बड़ा आराम मिलता था। मुहल्ले की गरीब पर्दे वाली औरतों के घर के सौदे लाने का काम भी यही किया करती थीं। कभी यह भी करतीं कि मेरी रोटी किसी और के यहाँ से पकवा लातीं और खुद किसी खास दौड़-धूप में लगी रहतीं। गरज यह कि उनकी जात से मुझे बड़ा आराम मिल रहा था कि तभी एक अजीब मामला पेश हुआ।

सचमुच दो चार रोज से लक्षण ही कुछ ऐसे थे। जरा गौर कीजिएगा कि पचपन वर्ष के लगभग तो उम्र और अपने हिसाबों करीब-करीब शादी के कपड़े पहिने, आँखों में सुरमा लगाए, गिने-चुने

खिचड़ी वालों को ताने चली आ रही हैं। मुझ अभागे को क्या मालूम कि बड़े मजे में कोर्टशिप फरमायी जा रही है और उनकी खिदमत से बहुत जल्द मुझको वंचित होना है।

बात वास्तव में यह थी कि मसजिद के मुल्ला और बड़ी बी में न सिर्फ 'कोर्टशिप' ही हो रही थी बल्कि मुहब्बत के पैंग भी बढ़ रहे थे। और लोगों ने गौर भी न किया कि यह जो मुल्लाजी ने हफ्ते के हफ्ते नाई से सिर पर पान बनवाना और दाढ़ी पर दफा १४४ लागू कर दी है तो जल्द इसका कुछ-न-कुछ नतीजा निकलने वाला है। इन मुल्लाजी का भी हुलिया सुन लीजिए कि कोई साठ-पैंसठ वर्ष की आयु होगी, एक आँख भी नहीं थी जिसके कारण आमतौर पर उनको लोग एक दूसरे मुल्ला जी से अलग-थलग रखने के लिए 'काणे मुल्ला' भी कहते थे। बड़ी बी की तरह उनके दूर के रिश्ते-दारों को छोड़ कर करीब के रिश्तेदारों में सिवा अल्ला मियाँ के और कोई न था और यह मसजिद की एक कोठरी में रहते थे।

नतीजा इसका यह निकला कि एक रोज बिजली गिरी। मुहल्ले में खलबली मच गई जब यह खबर आम हुई कि बड़ी बी ने मुल्लाजी से शादी कर ली। सचमुच खुद दुलहन अपनी शादी के छुहारे घर-घर बाँटती फिर रही थी कि मुहल्ले के लड़के पीछे लग गए। छुहारे फेंक-फांक मुल्लानीजी यानी पहले की बड़ी बी अपनी ससुराल अर्थात् मसजिद की ओर भागीं जहाँ पहुँच कर फौरन क़िलेबन्द हो गयीं। मैं घर से निकला तो क्या देखता हूँ कि एक हुल्लड़-सा मचा है। मुल्ला जी मसजिद के दरवाजे पर खड़े ढेले हाथ में लिए लड़कों को ललकार रहे हैं। सच्चाई यह है कि यह हुल्लड़ वैसे बन्द भी मुश्किल ही से हो पाता अगर मुहल्ले के दो-चार आदमी इन शैतानों को न भगाते।

इस शादी से एक घर बस जाने के कारण मेरे ऊपर नाक़ाबिले बरदाश्त मुश्किलें आ पड़ीं। रोटी खुद पकानी शुरू की क्योंकि मुल्लानीजी मसजिद से निकलती ही न थीं। कुछ तो नववधू होने की

वजह से और कुछ लड़कों की वजह से। तीसरे दिन मैं खुद उनके पास गया; मुझे उनसे एक रुपये का हिसाब लेना जो था।

मसजिद का अहाता विस्तृत था। कोठरी सहन से कुछ फासले पर थी। मैं जो पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि मुल्लानीजी कोठरी के सामने बैठी रोटी पका रही हैं और मुल्लाजी अपने कबूतरों को दाना डाल रहे हैं। करीब ही एक चारपाई बिछी थी।

मुल्लाजी ने कहा—'वालेकुम अल सलाम' और खातिर से चारपाई घसीट दी। मुल्लानीजी ने कुछ शरमाई हुई नजरों से मुझे देखा और उन्होंने भी बैठने को कहा। बहुत जल्द मतलब समझ गयीं। रुपये का भी हिसाब दिया और फिर मेरी तकलीफ का भी जिक्र किया। मुल्लाजी भी हुक्का भर कर चारपाई पर बैठ गए और बहुत जल्द एक-दो बातें करने के बाद ही उन्होंने विवाह-विज्ञान के कतिपय धुँधले पहलुओं पर ऐसा प्रकाश डाला कि मेरी तो आँखें खुल गयीं।

जरा गौर कीजिए कि इससे पूर्व खुद रोटी पकाते थे। बीमार पड़ जाएँ तो इतना भी न था कि कोई पानी भी दे दे। दुनियाँ में कोई सहानुभूति रखने वाला जीवन साथी तथा आत्मीय न था। कभी दुःख पहुँचे तो दुःख में साथ देने वाला कोई नही। दिल को अगर मजबूरन कभी प्रसन्न होना पड़े तो हाँ में हाँ मिलाने वाला कोई नहीं। उम्र का आखिरी हिस्सा इस अकेलेपन की दुनियाँ में अनोखी आत्मिक वेदना झेलता हुआ बीत रहा था। एक आबाद मुहल्ले में रहते हुए वस्तुतः वह अकेले थे। जिस किसी के पास जाकर खड़े होते वह थोड़ी देर बात करके अलग होता और अपने घर चला जाता। ठीक यही दशा उन बड़ी बी की थी। लेकिन अब क्या हाल था ? बस कुछ न पूछिए, मुहल्ले के उन व्यक्तियों की बुद्धिमत्ता पर वे शोक मना रहे थे जो व्यर्थ इस शादी का मजाक उड़ाते थे और उनमें से कुछ दुराचारी लोग तो यहाँ तक उच्छृंखल हो गए थे कि उन्होंने गुण्डे तैनात कर दिए जो अत्यधिक असभ्यता से मुहल्ले की आबादी

में वृद्धि करने के इच्छुक थे। मैं चलने को ही था कि दरवाजे पर किसी ने आवाज दी—

'अरे मुल्लाजी हैं ?'

'क्यों !'

'लड़का हुआ कि नहीं !'

'तेरी ऐसी-तैसी। ठहर तो जा' कह कर मुल्लाजी हुक्का छोड़-छाड़ कर कूद-फांद करते दौड़े। मगर तोबा कीजिए, वह फलीता हाथ आता है। बड़बड़ाते-गालियाँ देते लौटे। मैंने परामर्श दिया कि इस ओर ध्यान न दिया करें। लेकिन मुल्लाजी ने खयाल जाहिर किया कि अगर रोक-थाम न की गई तो लोग और दिक करेंगे।

संक्षेप में, मुल्लाजी के इस विवाहित जीवन पर ईर्ष्या करता हुआ मैं घर चला आया।

२

दफ्तर जाने से पहले जब मैं रोटी पकाता तो मकान का दरवाजा बन्द कर लेता था। एक रोज का जिक्र है कि किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खोला तो मालूम हुआ कि बड़ी बी नं० २ हैं। कोई चालीस वर्ष की उम्र, जेवर की कुछ-कुछ शौकीन, चेहरे से स्थिरता एवं सन्तोष टपकता था। असाधारणतः तन्दुरुस्त और सिपाहियों की सी अदा। ऐसी कि मालूम हो अभी डबल मार्च को जा रही हैं। सचमुच दुनियाँ का काम कभी बन्द नहीं रहता। मुल्लानीजी ने शादी कर ली तो यह आ गयीं।

वास्तव में वे मुहल्ले का जनरल रिव्यू फरमाने आई थीं—यह अंदाजा लगाने कि इस मुहल्ले में काम-काज करना बेहतर होगा

या अपनी मौजूदा रफ्तार पर क़ायम रहना बेहतर होगा। उनके मौजूदा काम-धंधे बकौल उनके खुद इस क़दर फायदेमंद थे कि वह मुहल्ले में शुरू से ही आने के खिलाफ थीं; किन्तु जिस तरह पुस्तक लिखने वाले, लोगों के अनुरोध पर किताबें छपवाने को मजबूर हो जाते हैं कुछ उसी तरह इन्हें भी यहाँ आने के लिए विवश होना पड़ा था।

मैंने अपने यहाँ काम की तफसील सुनाते हुए जब तनख्वाह का फैसला चाहा तो मामले पर उन्होंने इस तरह रोशनी डाली कि काम ही काम नजर आए और रुकते-रुकते तथा डरते-डरते उन्होंने यह मालूम करना चाहा कि मैं यह बतला दूं कि मुल्लानीजी को क्या देता था। मैं ले-देकर दस रुपल्ली का नौकर और फिर मामला वैसे भी बड़ा महत्वपूर्ण था अतः इस जरूरी बात को छिपाए रखना चाहा और ऐसा गोल जवाब दिया कि वह यह समझें कि कभी कुछ और कभी कुछ देता था। और देता क्या था बस आपस का मामला था। अतः बेहतर है कि इसका जिक्र ही न किया जाए। वाद-विवाद के पश्चात् बड़ी बी ने अपनी सेवाओं का जो मुआवजा बतलाया तो मैं सन्नाटे में आ गया। एक न दो—इकट्ठे पाँच रुपये! इस दशा में मेरी यह इच्छा कि मेरे भोजनादि का कुल व्यय आठ रुपये से अधिक न हो, एक तमन्ना ही रह गई। मैंने कुछ घबरा कर और झुंझला कर एक रुपया महीना कहा और यह भी बताया कि मुल्लानी जी को यही पहुँचता था तो बड़ी बी ने मुझे विश्वास दिलाना चाहा कि इन शर्तों पर मुल्लानी जी ही खिदमत कर सकती थीं; क्योंकि वह पाँच से अधिक की रकम ऊपरी तौर से उड़ा लेती होंगी। मैंने कहा कि बड़ी बी तुम पाँच के बदले दस उड़ा लेना, मगर तनख्वाह इससे अधिक नहीं दे सकता। बात वास्तव में यह है कि तनख्वाह सचमुच कम थी, मगर मजबूरी थी। मुझे दफ्तर को देर हो रही थी। बड़ी बी मेरे यहाँ काम की अधि-

कता और तनख्वाह की कमी की शिकायत करती चली गयी।

मगर गरज है कि मजबूरियाँ फिर मजबूरियाँ ही होती हैं। उन बड़ी बी को इस मुहल्ले का चार्ज लेना ही पड़ा और फिर मेरे ऊपर भी कृपा दृष्टि करनी ही पड़ी—वही एक रुपये महीने पर।

बड़ी बी को मैंने जरूरत से ज्यादा खुश्क और खुर्रा पाया; लेकिन यह खुश्की और खर्रापन मेरी गरीबी और लाचारी के आगे न चल सका। बहुत जल्द उनको मालूम हो गया कि मैं अत्यन्त 'सीधा' और 'शान्तिप्रिय' लड़का हूँ और जब कुल महीने की आमदनी खुद उनके हाथ से गुजरने लगी तो उनको मालूम हो गया कि मेरे पास ले-देकर हैं तो यही दस रुपये माहवार।

मकान की कुन्जी बड़ी बी के पास रहती थी और चूँकि उनका मकान किसी दूसरे मुहल्ले में था अतः दूरी की वजह से दोपहर को मेरे ही मकान में दम लेती थी। इस तरह धीरे-धीरे उन्होंने मेरा घर अपना हैड क्वार्टर बना लिया जिसके सिलसिले में मैंने देखा कि वहाँ विभिन्न साइज की कतिपय पोटलियाँ स्थायी रूप से रहने लगीं। फिर दो-चार छोटी-छोटी मटकियों और ठिलियों की वृद्धि हुई। इन पोटलियों और मटकियों में हल्दी-धनियाँ किस्म की चीजें रहती थीं। बड़ी बी मुहल्ले वालियों का सौदा लाकर पहले यहाँ आती और फिर जाकर सब को वितरण कर देतीं। ईश्वर जाने, क्या हिसाब था! कभी बाजार से लाए हुए सौदे में से कुछ निकाल कर उन पोटलियों और मटकियों में रखा जाता था और कभी उनमें से लेकर वृद्धि भी की जाती थी। फिर अलग-अलग नाप-तोल कर हिसाब होता था कि मँगाने वालों को समझाया जा सके कि किस तरह से कितने वजन की कितनी चीज है। मुझे अनुमानतः ऐसा मालूम होता था कि या तो बड़ी बी हर सौदे में से कुछ टैक्स लेकर जमा करती जाती हैं और फिर किसी खरीदार को बेच देती हैं या फिर खुद माल लाकर तिजारत करती हैं। कुछ भी हो इस सिल-

सिले में कम-से-कम चटनी की सामग्री बड़ी बी ने मेरे लिए बिल्कुल फ्री कर रक्खी थी।

मुझसे शपथ ले लीजिए, मैंने इन मटकियों या पोटलियों में से कभी कोई चीज नहीं चुराई और बड़ी बी ने भी जब देख लिया कि इत्मीनान है तो हैड क्वार्टर के सामान में और भी वृद्धि होने लगी।

बड़ी बी सचमुच लड़ाई-झगड़े के लिए कटिबद्ध और साथ ही परिश्रमी थीं जिसका अनुमान आप इससे लगा सकते हैं कि स्लीपर वह नहीं पहिनती थीं बल्कि हिन्दुस्तानी जूता वगैरा एड़ी चपटा किये पहनती थीं। और बड़ी तेजी से एक सोल्जर की तरह चलती थीं। दौड़-धूप के मामले में वे नैपोलियन से कम न थी। बस दिन भर भागते देख लीजिए। परिणाम यह कि बहुत जल्द सारे मुहल्ले की जरूरत बन कर रह गईं। उन्हें स्थायी रूप से दोपहर को जाना बन्द करना पड़ा और हैड क्वार्टर पर रहने लगीं। खाना वह या तो दूसरी जगह से झपट लेती वर्ना अन्य दशा में मेरे खाने के साथ 'एक दो रोटियाँ' अपनी भी डाल लेतीं।

बहुत जल्द मैंने देखा कि मेरे मकान पर वह जरूरत से अधिक काबिज हो गयीं। जगह अलग घेर ली और फिर सबसे कुरुचिपूर्ण एवं आपत्तिजनक बात जो थी वह यह कि प्रायः मुहल्ले की दूसरी बुढ़िया समय बर्बाद करने को यहाँ आतीं तब वे व्यर्थ ही बैठाई जातीं और मेरी चारपाई से ड्राइंग-रूम का काम लिया जाता। ऐसी बेहूदा बातें होतीं कि कभी-कभी मैं उठकर ही चला जाता अन्यथा मेरी आजादी में तो बिल्कुल खलल पड़ जाता। जब देखिए कोई बड़ी बी को पूछता चला आ रहा है। कोई दो पैसे दे गया कि बड़ी बी आएँ तो उनको दे देना कि हल्दी मंगायी है। मगर मैंने यह सब कुछ इस वजह से बर्दाश्त किया कि बड़ीबी अबमुझसे बड़ी शराफत का बर-ताव करने लगी थीं और वह जानती थीं कि उन्होंने मेरी कुटिया को अपना हैड क्वार्टर बना कर मेरे ऊपर एक प्रकार से बड़ी कृपा की है।

३

बड़ी बी को डाकुओं और चोरों से बहुत डर लगता था। इसलिए अक्सर डाकुओं और चोरों के स्वभावों की चर्चाएँ होती थीं। मुरब्वती में मुझसे भी फरमाइश होती थी कि उनसे डरूँ और सहमूँ या और न सही तो कम-से-कम उन्हें बुरा-भला ही कहूँ। मगर जनाब यहाँ तो वह मजमून था—'रहा खटका चोरी का, दुआ देता हूँ रहजन[1] को।' भला खुद सोचिए कि मैं चोरों या डाकुओं से क्यों डरता। मुझको दरअसल कतई मालूम न था कि बड़ी बी के पास चोरों वगैरह से डरने के कारण मौजूद हैं। इतना तो मालूम था कि जिस मकान में बड़ी बी रहती हैं वह खुद उन्हीं का है मगर इस पर भी कभी ग़ौर न किया था कि सिपाहियाना जिन्दगी की कमाई आखिर कहाँ गयी। चाँदी के जेवर हाथों में, कान में और गले में थे मगर जरूरत के मुताबिक इतने कि सिर्फ सौन्दर्य में वृद्धि कर सकें और बस।

रात को चलते समय बड़ी बी का हमेशा का दस्तूर था कि होशियारी से सोने की बिना नागा ताकीद करतीं। जब तक दरवाजा बन्द न कर लेता न जातीं। अगर बाहर किसी के यहाँ बैठा हूँ तो मकान बन्द करके कुंजी मुझे देतीं; मगर किसी तरह न टलतीं। नतीजा यह कि मैं उठता तो फिर मकान पर साथ वापिस आतीं और दरवाजा बन्द कर लेता जब जातीं। मुझे उनकी यह हरकत कभी-कभी नागवार गुजरती। मैं तो बैठा मुहल्ले में किसी से बातें कर रहा हूँ

---

१. बटमार, चोर।

और यह हैं कि वहीं सामने तकाजे की प्रतिमूर्ति बनी खड़ी हैं। यद्यपि न कहें जबान से मगर जबानी तकाजे से साकार तकाजा बन जाना ज्यादा सख्त होता है। मैंने अक्सर शिकायत की तो यही कहा कि मैं तकाजा तो नहीं करती।

मामलात इसी रफ्तार पर थे। जाड़ों के दिन थे कि एक दिन नित्य के व्यवहार के मुताबिक बड़ी बी न आयीं। मुहल्ले के छोकरों का और बड़ी बी को तलाश करने वालों का घर पर तांता बँध गया। जिसे देखो पूछने चला आता है। फिर मानता नहीं और वजह पूछता है। कई एक से मैंने कुपित होकर भी कहा। खाना भी खुद ही पकाया और बड़ी बी की इस अप्रत्याशित् अनुपस्थिति का सबब कुछ समझ में न आया। बीमार पड़ने से ये खुदा की मेहरबानी से कोई सम्बन्ध ही न रखती थीं। शाम को जब गयीं तो भली चंगी थीं और अगर किसी जरूरत से रुक गयी होंगी तो कम से कम कह तो जातीं।

दफ्तर से वापसी पर मालूम हुआ कि बड़ी बी के घर सख्त डाका पड़ा। रात को डाकू घर में घुस पड़े। सारा माल व असबाब लूट लिया और क़त्ल करते-करते छोड़ा। नतीजा यह कि डाके की पुलिस तहक़ीक़ात कर रही है और खुद बड़ी बी अस्पताल में मरने को पड़ी हैं। जितने मुँह उतनी बातें। कोई कहता कि हजारों रुपयों का माल लूट ले गए। कोई बड़ी बी की इमारत पर ताज्जुब कर रहा था। कोई आँखों देखे हालात बयान करता था कि घर में जगह-जगह से चोर गड़ी दौलत खोद ले गए।

शाम को बड़ी बी को देखने गया और हकीकत मालूम हुई। सख्त 'सन्नाटा' छाया हुआ था। रात को दीवार फाँद कर तीन चोर मकान में दाखिल हुए। बड़ी बी का हाथ पीठ की ओर मरोड़ कर खींचा। बल्कि सारे जिस्म को दुहरा करने की कोशिश की और इस कष्टप्रद कार्य को बार-बार इस तरह दुहराया कि सारे बदन की रगें न मालूम किस-किस तरफ खिंच गयीं। कमर टूट गयी। दोनों पैरों के

पंजों में मोच आ गई। कूल्हा उतर गया, घुटने टूट गए और एक फाजिल घुटना रान में नया कायम हो गया। यही करतब कम व अधिक हाथों के जरिए बड़ी बी से कराए गए और बाजू में और कलाई में नई कुहनियाँ कायम करने की खूब कोशिश की गयी। मगर इस प्रकार की मीठी कुटाई-पिटाई के बावजूद भी बड़ी बी ने यह न बताया कि जेवर या रुपया कहाँ गड़ा है। वजह साफ थी, कुछ था ही नहीं। बेचारी बताएँ क्या खाक। चुनांचे चोरों ने फिर खुद ही अन्दाजा लगा-लगा कर जगह-जगह जमीन खोदी, दीवारें और ताक खोदे; मगर वहाँ होता तो कुछ मिलता। तंग आकर सिर्फ उन्हीं दस-बीस रुपयों के 'कीमती' जेवर पर सन्तोष किया जो वह शरीर पर पहिने हुए थीं। दो-चार बर्तन जो हाथ लगे, ले गए और बड़ी बी को बाँध-बाँध कर अधमरा करके छोड़ गए। मगर ये चोर कौन थे ? बड़ी बी के एक रिश्ते के भतीजे के यार-दोस्त। वह भतीजा दिन-रात बुआ से जबरदस्ती रुपया-पैसा माँगा करता था कभी कहता कि मकान लिख दो। उसी ने अपने दोस्तों को सिखा-पढ़ा कर भेजा था। चलते समय चोर फुरसत के समय बड़ी बी से क़त्ल करने का पुख्ता वायदा कर गए थे। चोर अपना मुँह छिपाए हुए थे और आवाजें बदली हुई थीं। लिहाजा पहचानने का प्रश्न ही न था। भतीजे को पुलिस ने सन्देह में जो पकड़ा तो वह निर्दोष सिद्ध हुआ और रोया-पीटा तो खुद बड़ी बी का शक उससे हट कर दूसरे पर आ जमा, क्योंकि उनके मुहल्ले में दो-तीन गुण्डे और भी थे जो उन पर जबरदस्ती 'मोटी आसामी है' की आवाजें कसते थे।

मुझे बड़ी बी ने हिदायत की और खुदा की कसमें खिलायीं कि जब तक वे बीमार हैं, मैं रात को उनके मकान पर जाकर सो जाया करूँ। मैंने अव्वल तो टालना चाहा मगर जब उन्होंने आँखों में आँसू भर कर कहा कि 'मेरा कोई नहीं है, तो मुझे रहम आ गया और सोचा कि बुढ़िया मेरी सेवा करती है, लाओ इसका काम भी कर दूँ।

बड़ी बी के घर में जो कुछ भी थोड़ा-सा सामान था वह कोठरी में खुद ताले में बन्द कर गयी थीं। सिर्फ चारपाई बाहर थी और मैं समझने में नितान्त असमर्थ रहा कि फिर आखिर इस चौकीदारी का मतलब क्या हो सकता है। लेकिन चूंकि मैंने वायदा कर दिया था अतः रात को वहीं जाकर पड़ रहता था। और शायद इसी खिदमत के सिलसिले में उन्होंने एक और बड़ी बी से मेरा परिचय करा दिया जो मुझे बड़े नियम से पका-पकाया खाना पहुंचा देती थीं। इस दशा में खाने की खूबी मुझसे रोज यही कहती थीं कि बच्चा यह तर माल तुम्हें इसी खिदमत के सिलसिले में तो मिल रहे हैं।

जब तक बड़ी बी अस्पताल में रहीं मैं दूसरे-तीसरे दिन देखने उनको जाता रहा। पन्द्रह दिन में वह उठ खड़ी हुईं; बल्कि इतने दिन तबीयत को आराम जो मिला तो चेहरे पर रौनक आ गयी। जिस दिन वे अस्पताल से आयीं, मेरे यहाँ ठहरीं और इस क़दर घबराई हुई थी कि अपने घर में किसी तरह रहने को तैयार नहीं थीं। अतः मेरे आराम के कोने को बैकुण्ठ से बढ़कर बनाने की शर्तें मुझसे पूछीं।

भला गौर कीजिएगा मेरे पास क्या शर्तें थीं? जो कुछ भी वे चाहें मुझे मंजूर था, बशर्ते कि वह मेरे साथ न रहें। अतः मैंने कुछ संकोच के साथ आपत्ति प्रकट की; लेकिन बड़ी बी न मानीं और मुझे तरह-तरह के फायदे बताए जैसे कि चलो भई, खाना पकाने में लकड़ियाँ उनके जिम्मे, नमक भी सही। मगर मैं अस्वीकार ही किए चला गया। यहाँ तक कि शर्तें इस स्थिति तक पहुँचीं कि बिना तनख्वाह के मुझे रोटी पकी-पकायी मिलेगी। सिर्फ आटे के दाम देने पड़ेंगे और मकान का आधा किराया और बड़ी बी की खिदमत और चाकरी रही सो अलग।

अब साफ बात यह है कि मैंने जो गौर किया तो मालूम हुआ कि बड़ी बी चोरों के डर के मारे अब अकेली तो रहने से रहीं और यह भी सोचा कि उनको इन शर्तों पर कोई दूसरा बड़ी आसानी से

मिल जाएगा; लेकिन मुझे शायद ये शर्तें न मिलें। अतः जब मैंने देखा कि यह दो रुपये महीने के खर्च में सब कुछ हाथ आ रहा है तो राजी हो गया। दूसरे ही दिन बड़ी बी ने अपने मकान को किराए पर उठा दिया और जो कुछ भी सामान वहाँ था, उठा लायीं। सामान कुल का कुल इस किस्म का था कि क़रीब-क़रीब एक चौथाई के तो फोड़ा जा सकता था और शेष को फेंक देने में सिर्फ दो पैसे खर्च होते—अलावा दो-एक चीजों के जिनमें से एक दरी थी जो शायद खुद दरी के आविष्कर्ता के हाथ की बुनी हुई थी और एक जाजम, जो किसी पुरातत्व संग्रहालय के किसी जल्से के शामियाने के लिए सम्भवतः अत्यन्त उपयुक्त होती।

बड़ी बी ने मकान को अपने तरीके से जब खूब सजा लिया तो खुद फरमाया कि दुलहिन की तरह सज गया है। एक कोठरी को कमरे का नाम देकर उसमें एक चटाई का फर्श बिछा कर उस पर दरी बिछाई गयी और उस पर जाजम बिछा दी गयी और उसको बड़ी बी ने निहायत ही तमीज से अपना ड्राइंग-रूम बनाया। शेष मकान के राजसी-ठाठ के बारे में इससे अधिक और कुछ नहीं कहना चाहता कि दफ्तर जाने से पहले और आने के बाद भी मैं साधारणतः बाहर किसी पड़ोसी के वसीले या सहारे बैठा रहना ज्यादा बेहतर समझता था, और घर तथा घर के आने-जाने वालों से भी यथासम्भव अलग रहना चाहता था।

लेकिन ये तबदीलियाँ मेरे लिए निहायत आराम देने वाली और सस्ती साबित हुईं। मैंने बड़ी बी को अत्यधिक उदार, विशाल-हृदया और सतर्क पाया तथा मैं देखता था कि वे किस तरह मेरे खाने-पीने और आराम का ध्यान रखती थीं।

४

जहाँ तक मेरी बात का सम्बन्ध है, मैं इश्क के कूचे से उतना ही वाकिफ था जितना कि यूनीवर्सिटी से एक बैल। दरअसल वाकया यह है कि गरीबी और आशिनाई का क्या साथ ! मैंने होश सँभाला तो गरीबी की गोद में। आप कहेंगे कि इसके होते हुए यह जरूरी नहीं कि मैं इश्क से सरोकार ही न रखूं। मुझको यह मंजूर है, लेकिन इसके यह मानी भी तो नहीं हो सकते कि मजे से ये बड़ी बी इस खादिम पर चुपके ही चुपके आशिक हो जाएँ। यह सच्चाई थी कि बड़ी बी मुझ पर आशिक हो चुकी थीं, हालाँकि मैं इस मामले से बिल्कुल बेखबर था।

धीरे-धीरे बड़ी बी की महरबानियाँ मेरे ऊपर और अधिक होती गयीं। उसकी शुरूआत बढ़िया किस्म के खानो से हुई। मेरे आराम की तरफ अधिक से अधिक ध्यान देने लगी। मैं यह कहना भूल गया कि बड़ी बी दो माह बाद ही मेरी खजांची बन गयी थीं। अक्सर खर्चे, यद्यपि थोड़े से पैसों के थे, मगर मेरे हिसाब में डाले जाने चाहिए थे, वह नहीं डाले गये। जब-तब मिठाई भी खाने में आने लगी। मुझ अभागे को क्या मालूम कि यह केवल मेरे लिए है। मैंने देखा कि मुझे जो खाना मिल रहा है उसकी लागत कतई आठ रुपये से कम न होगी। फिर दूसरी सुविधाएँ और आराम जो मिलता था उसको भी मैंने देखा अनुभव किया। स्पष्ट है कि मेरे हृदय में इन अनुभूतियों के कारण बड़ी बी के लिए कितना स्थान था। किन्तु मूर्खता कहिए कि मैं अब भी कुछ नहीं समझा। मुझे सन्देह तक न हुआ कि सचाई क्या है। मैंने यह तब न देखा कि बड़ी बी धीरे-धीरे

सिपाहियाना चाल-ढाल और सज-धज की [illegible] और सिपाहियापन हुए जा रही है। पहिनने के लिबास और रहाइश हर चीज में फर्क था। कायदे से सुरमा लगातीं और कंघी चोटी से हमेशा दुरुस्त रहतीं।

दैवयोग से इसी बीच मैं बीमार पड़ गया। कोई डेढ़ हफ्ते बुखार में पड़ा रहा। बड़ी बी ने मेरी जो कुछ भी खिदमत की है उससे मैंने यह अन्दाज लगाया कि यदि ये न होतीं तब क्या होता। कौन तो मुझे खाना देता और कौन दवा देता। मैं नही कह सकता कि बीमारी में बड़ी बी ने मेरी कैसी सेवा की है। घंटों मेरा सिर दबाना, दिन में दस बार हकीम के यहाँ से दवा लाना, दवा और उपयुक्त आहार समय पर देना। मुहल्ले के जरूरी कामों पर उन्होंने खाक डाली। रात हो या दिन, जब मेरी आँखें खुलीं मैंने न इनको सिर्फ मौजूद पाया, बल्कि फौरन दौड़ कर पट्टी के पास झुक कर पूछतीं, और अगर कोई जरूरत हो तो फौरन पूरी करतीं। नतीजा यह कि जब मैं कुछ अच्छा हुआ तो इनके अहसानों का खयाल करके मैंने इनका हाथ दोनों हाथों से दबा कर सच्चे दिल से शुक्रिया अदा किया, ऐसा कि मेरी आँखों से आँसू निकल आए। बड़ी बी खुद बेचैन हो गयीं और उन्होंने मुझे सचमुच पहली बार मेरी गर्दन में हाथ डाल कर अपने कलेजे से लगा लिया तथा मुझे विश्वास दिलाया कि वह इसी प्रकार सदैव मेरी सेवा करती रहेंगी। अच्छी तरह मुझे पुचकारा और मुहब्बत से अपने खरोरे हाथों से मेरे गालों पर से आँसू पोंछे और दिलासा देती रहीं। सचमुच इस छोटे-से सीन ने मुझे इन पर लट्टू बना दिया। बड़ी देर तक आँखें बन्द किए मैं इस नेक औरत की मुहब्बत और सेवाओं को अपने लिए अप्रत्याशित अलभ्य वस्तु समझ कर दिल ही दिल में इसका आभार मानता रहा। मगर यह मुझको अब भी नहीं मालूम था कि बड़ी बी किस रास्ते जा रही हैं। अगर मुझको तनिक भी अनुभव होता तो कम से कम सन्देह तो दिल में जरूर होता, लेकिन होता कैसे? वह तो मेरी माँ की आयु

के बराबर होंगी और मैं तो यही समझता कि भले बरताव को मातृ-स्नेह के अतिरिक्त और किससे समता दी जा सकती है।

इस बीमारी के बाद मेरी ओर से यह हुआ कि बड़ी बी का इस दरजा खयाल रहने लगा कि जो बातें इनको नापसन्द थीं, वे छोड़ दी। जैसे—उनको यह बात पसन्द न थी कि मैं रात गए तक मस-जिद के चबूतरे पर बैठा गप्पें ठोंकता रहूँ या खाने के मौके पर इनकी मर्जी के खिलाफ चलूँ। मेरे पास इसके सिवाय दूसरा साधन ही क्या था, जो इनके अहसानों से बरी होता। यही सोचा कि चलो, भी हमारा क्या नुकसान है, जैसे ये कहती हैं वैसे ही कर दो।

इस बीमारी के कोई दो-महीने बाद की बात है। रात का समय था और हम दोनों नित्य की भांति अपनी-अपनी चारपाइयों पर लेटे बातें कर रहे थे। मेरी तनख्वाह में दो रुपए की वृद्धि हुई थी। फिर मैंने यह जिक्र छेड़ा कि मैं खाने के सिलसिले में अधिक देना चाहता हूँ। यह बात बड़ी बी ने बड़ा हठ करने पर भी अस्वीकार कर दी तथा अन्ततोगत्वा यह कह दिया कि उनके पास जो कुछ है वह भी मेरा ही है और फिर आखिरी बात यह है कि 'मेरे कौन बैठा है ? मैं भी तुम्हारी ही हूँ।'

मैंने इनकी मुहब्बत का शुक्रिया अदा किया तो बड़ी बी ने चारपाई पर करवट ली और उठकर कहने लगीं—'क्यों जी, यह मेरी मुहब्बत और खिदमत का खाली जबानी धन्यवाद है या दिल से भी कुछ है ?'

मैंने कहा—'भला, कैसे विश्वास दिलाऊँ ?'

बड़ी बी उठ कर मेरे पलंग के समीप आकर जमीन पर बैठ गयीं और मुस्कुरा कर बोलीं—'कैसे विश्वास दिलाऊँ ?'

मैंने कहा—'हाँ।'

वह बोलीं—'ऐसे कि जैसे मैंने कहा।'

'क्या ?'

''जिस तरह मैं तुम्हारी हो गयी हूँ उसी तरह तुम भी मेरे हो जाओ।'

बड़ी बी का यह वाक्य एक खटके की तरह गिरा। मैं मानो चौंक पड़ा। एकदम से शुरू से लेकर आज तक की घटनाओं पर से मानो पर्दा हट गया। अपनी असावधानी पर आश्चर्य हुआ। मैं चुप का चुप होकर रह गया। हाय गरीबी और लाचारी। एक नीच औरत एक सैयद[1] पर इस प्रकार कीचड़ उछाले! और वह सह ले! बड़ी बी ने मुझे हाथ पकड़ कर बैठाया और कहा—'क्यों, बोलते नहीं? मेरा इस दुनियाँ मे कोई नहीं है। मैं तुम्हारी हो चुकी हूँ। आठ सौ रुपए की कीमत का यह मकान है। लगभग हजार रुपया मेरी मेहनत की कमाई का नक़द है। यह सब तुम्हारा है। उम्र भर इसी प्रकार तुम्हारी खिदमत करती रहूँगी···?'

मैंने बोलने की कोशिश की; किन्तु बोला न गया। भला इस मूर्खता का जवाब ही क्या हो सकता था! इसके अतिरिक्त यदि एक शब्द भी और कहा गया तो मैं पागल हो जाऊँगा। जब मैं कुछ न बोला तब वह फिर बोलीं—

'मैं जानती हूँ, मेरा तुम्हारा जोड़ नहीं। देख कर ज़माना हँसेगा। तुमसे अधिक मेरी हँसाई होगी। तुमसे अधिक मैं ख्वार हूँगी और तुम फिर नासमझ हो। दुनियाँ यही कहेगी कि बुढ़िया ने उल्लू बना लिया। अतः तुम खूब अच्छी तरह सोच लो। महीने, दो महीनें, चार-छः महीने खूब सोच लो। जल्दी नहीं है। यह काम समझ कर करना चाहिए। मगर तुम्हें यह बात नामंजूर हो तो भी कोई हर्ज नहीं। जैसे रहते हो, रहो। मुझे तुमसे वैसे क्या कम सहारा है?'

मैं फिर भी कुछ न बोला और चुप पड़ा सुनता रहा। इस बात को पोशीदा रखने के लिए उन्होंने कहा 'मगर किसी से जिक्र न

---

१. मुसलमानों में उच्च जाति।

करना ।' और यह कह कर अपने पलंग पर जा कर लेट रहीं ।

बड़ी देर तक मैं खामोश पड़ा रहा । मैंने निश्चय कर लिया कि शीघ्र यहाँ से पृथक् हो जाना चाहिए । समझ में न आता था किस तरह इस बबाल से छुटकारा पाऊँ । तबीयत में सख्त बेचैनी थी । सचमुच अपनी शराफत आड़े आ रही थी । रह-रह कर यही खयाल होता था कि इस गरीब ने मेरे पर वे अहसानात किए हैं, जिनका मैं कुछ कोई बदला नहीं दे सका । एक बार खयाल आया कि बेहतर है जो भी रुपया बड़ी बी के पास जमा है वह उनकी सेवाओं के बदले में उन्हीं के पास छोड़कर उनके अहसान के भार से मुक्त हो जाऊँ । मगर फौरन फिर प्रश्न पैदा होता है कि यह तो ठीक है; किन्तु खुदा के बन्दे ! फिर आगे कैसे गुजरेगी । रहने, सहने और खाने का प्रबन्ध ! निस्सन्देह, ऐसा आराम तो क्या नसीब होगा । मगर लाचारी है ।

किस्से को इस तरह संक्षिप्त करता हूँ कि चार-पाँच रोज बाद मैंने अकेले में बड़ी बी के आगे हाथ जोड़ कर कहा कि मैं मजबूर हूँ और तुमने जो मेरे ऊपर अहसान किए उन्हें उम्र भर न भूलूँगा, मगर मुझे माफ करो और बेहतर है कि मैं अब दूसरी जगह जाकर रहूँ और किसी तरह अब ज्यादा अहसान नहीं लेना चाहता तथा मेरे पचास-साठ रुपये जो तुम्हारे पास हैं, तुमको देता हूँ ।

मैं यह समझता था कि बड़ी बी कुछ लैला-मजनू वाली हरकतें करेंगी मगर उन्होंने मेरा निर्णय बड़ी दृढ़ता और धैर्यपूर्वक सुना । केवल इतना कहा—'मेरी तकदीर !' और बड़ी खुशी से मुझे अपने निर्णय पर स्थिर रहने की अनुमति दी । मगर रुपया लेने पर सहमत न हुईं और न इस पर सहमत हुईं कि घर छोड़ दूँ । मुझे समझाया कि सख्त तकलीफ होगी । ऐसा ही है तो खाने का वाजिबी देने लगूँ । जिसको लेने के लिए वे सहर्ष तैयार हो गयीं । मगर मैं न माना तो आखिरी निर्णय उन्होंने जो किया वह मुझे मानना पड़ा कि मैं उनको

पाँच रुपये महीने दिया करूँगा। और वह मुझे खाना पका पकाया वक्त से पहुँचा दिया करेंगी और यह भी कि मुझे कोई तकलीफ होगी तो मैं फौरन उनसे जाहिर कर दूंगा।

अतः इस निर्णय के साथ दो दिन बाद मैंने इस मुहल्ले और घर को आखिरी सलाम झुकाया। डेढ़ रुपये महीने का एक मकान मिल गया और मैं दूसरे मुहल्ले में जा बसा। चलते वक्त मैंने देखा कि बड़ी बी की आंखें नम हो गयीं। मेरे दिल पर भी काफी असर था, मगर मैं इस तरह जा रहा जैसे आफत से जान छूटी।

नयी जगह पहुँच कर यद्यपि मुझे तकलीफ थी यानी वह आराम न था जो बड़ी बी के यहाँ प्राप्त था, मगर दिल को बड़ी तसल्ली थी। और चूँकि आगे जाकर फिर बाबू था अतः विगत दशा में जो एक किस्म की तौहीन महसूस करता था उससे भी छुटकारा मिला। और अब मैं भी इस योग्य था कि किसी कम उम्र मिलने-जुलने वाले को अपने घर का पता दे सकूँ।

बड़ी बी ने दोनों वक्त पाबंदी से खाना लाना शुरू कर दिया, मगर सच कहता हूँ कि मुझे यह भी गवारा न था और जिस दिन एक दूसरी बुढ़िया खाना लाती तो मुझे शान्ति मिलती। यह दूसरी बुढ़िया अब बड़ी बी के साथ ही रहने लगी थी। वास्तव में, बड़ी बी ने धीरे-धीरे कुछ दूकान का सा डौल डालना शुरू कर दिया था। शक्कर और छालियाँ तथा इसी किस्म की खराब चीजें वह रुपये-रुपये की ले आती थीं और रोज के दो-दो पैसे के खरीदारों को वे बाजार-भाव देती थीं। इससे उनकी दौड़ की दौड़ बच जाती और काम का काम हो जाता। मगर जब मैं आया हूँ तो ये बातें गुप्त ही थीं; क्योंकि उनकी आदत थी कि किसी की मँगायी चीज किसी को दे दी और उसे फिर ला दी। अतः लोग यही समझते कि किसी और के सौदे में से दे देती हैं और फिर उसका पूरा कर देंगी और लोग घर आकर ही ले जाते थे। और मैं देख रहा था कि खासी

अच्छी दूकानदारी की दागवेल डाली जा रही है।

इस बात को मुश्किल से महीना भर भी न हुआ होगा कि थोड़े-से जीवन में एक अनोखी घटना घटी।

५

रात के कोई दो बजे होंगे। सब मुसाफिर सो रहे थे या ऊँघ रहे थे। जाड़े का जमाना था और जगह की कमी के सबब से एक कोने में बैठा मैं भी सिकुड़ रहा था। रेल एक रफ्तार से जंगल की छाती पीटती, दनदनाती, बलखाती, चीखती-चिंघाड़ती चली जा रही थी। मेरी पीठ की ओर लकड़ी के पर्दे की दीवार थी जिसको लगा करके दो बैंचें अलग करके एक छोटा-सा दरजा कायम कर दिया गया था। उसमें से उस वक्त औरतों के हँसने-बोलने की आवाजें आ रही थीं। कुछ तो इस वजह से कि पर्दे की यह दीवार सिर्फ आदमी के कद के बराबर ऊँची थी और शेष दीवार लोहे की जाली की थी और फिर यह कि मैं खिड़की से मिला बैठा था और खिड़की से खिड़की मिली हुई थी। उस हिस्से में जाने का दरवाजा भी मेरे करीब ही था।

मैंने एक फुरेरी ली। नींद की तकलीफ असह्य हो चुकी थी और हाल यह कि ऊँघने की भी इजाजत नहीं थी; क्योंकि एक दुखदायी मुसाफिर हर दस मिनट बाद बेखबरी में अपनी टाँगे फैलाने की कोशिश में दो-एक लातें मार देता था। मजबूरन अब मैंने यह किया कि असबाब रखने की ऊपर की तंग व तकलीफदेह जगह पर सोने की ठानी। उठ कर मैंने कम्बल उस पर रक्खा और अपना ओवरकोट समेट कर बैंच के तकिये पर पैर रख कर ऊपर चढ़ गया और इस तंग जगह में आधा कम्बल ओढ़ कर और आधे का तकिया

बना कर गुड़ी-मुड़ी बन कर सिमिट रहा। लेकिन मैंने सामने जो नजर की तो बराबर वाले जनाने दर्जे में क्या देखता हूँ कि नजरों के बिल्कुल सामने एक खूबसूरत लड़की का चेहरा है। नीले रंग की सुर्ख गोट की एक रजाई ओढ़े कोने से लगी बैठी मुस्कुरा रही थी। वास्तव में वह साथ वाली से बातें कर रही थी। बातें सुनाई नहीं दीं। मैंने यह देख कर अपना सिर लपेट लिया मगर इस प्रकार कि आँख के कोने से उसको देखता रहूँ। धीरे से मैं तनिक और ऊपर को सरका तो और समीप हो गया और आधे से अधिक इस दर्जे का हिस्सा सामने आ गया। दो औरतें थीं। वास्तव में दोनों की दोनों बातों में लगी हुई थीं। प्रकट में कुछ हँसी-मजाक की बातें हो रही थीं। यद्यपि फासला कुछ भी नहीं था, मगर रेल की खड़खड़ाहट के कारण कुछ न सुन सका। मैं ध्यानपूर्वक इस नौजवान औरत के सुन्दर चेहरे को देखता रहा। उसकी आँखों में असाधारण चमक थी और बिजली की रोशनी में उसका नौजवान सुन्दर चेहरा, नीली रजाई में लिपटा अनोखा दृश्य उपस्थित कर रहा था। विशेषतः जबकि उसके चेहरे पर मुस्कुराहट या हँसी के कारण प्रफुल्लता छा जाती थी या आँखों के झपकाने के साथ चेहरे पर एक हल्की-सी कंपन पैदा हो जाती थी। इस दृश्य को मैं ध्यान-पूर्वक देख रहा था कि गाड़ी की चाल धीमी हुई और वह रुक गयी।

गाड़ी की रफ्तार के साथ ही उसने अपनी आवाज हलकी कर दी। मगर मैं चूँकि बहुत ही पास था इसलिए अब मैंने बातचीतें सुनीं। डिब्बे के मुसाफिरों ने एक फुरेरी-सी ली और दूसरे मुसा-फिरों की बातों और रेलवेवालों की चकल्लिश से मालूम हुआ कि डाकगाड़ी आ रही है और यहाँ मेल होगा। यह कोई अप्रसिद्ध छोटा-सा स्टेशन था। गाड़ी में फिर खामोशी छा गयी और मैंने कान लगाकर उन दोनों औरतों की बातों को सुना। वे बहुत धीरे-धीरे बोल रही थीं। दूसरी औरत की रजाई का एक हिस्सा मुझे

नजर आता था, उसने कहा—

'मुसीबत तो मेरी है। तेरा क्या है। कोई देखे तो यही कहेगा कि अभी कुमारी है। किसी तरफ बेवा नहीं मालूम होती।'

वह बोली—'तोबा बहिन। बेवाओं को कौन पूछता है! फिर हमारे यहाँ बेवा की शादी नहीं होती। मुझसे भी कम उम्र की विधवाएं बैठी हैं—एक से एक खूबसूरत।'

'फिर शादी क्यों नहीं करतीं?'

'बिरादरी की रीति ही यही है—न कोई पैगाम दे और न करे।'

वह बोली—'यह तो बड़ा जुल्म है।'

उसने कहा—'चाहे जो समझो, कोई पैगाम नहीं देता।'

'क्या तुम इसे पसन्द करती हो? यह सूरत, यह सुहानी शक्ल और यह उम्र! क्या तुम पसन्द करती हो कि बाकी उम्र इसी तरह बसर करोगी। सच कहती हूं, हजार में एक सूरत दी है तुम्हें खुदा ने। कोई भी जवान तुमको देखे तो खुशी से तुम्हारे साथ शादी कर ले। सौ कुमारियों को छोड़ कर तुम्हें पसन्द करे।'

वह मुस्कुरा कर बोली—'पसन्द करने से क्या होता है। शादी नामुमकिन है। बाप-भाई भला मानेंगे? नाक कट जाय बिरादरी में।'

वह बोली—'और मैं तुम्हारी जगह होती···।'

'तब? तब क्या करती?'

'कुछ नहीं' उसने खामोशी से जवाब दिया, 'करती कुछ भी नहीं मगर मेरा खयाल है कि बाप और भाई कुछ उजर न करते। न तुम्हारे बाल न बच्चा। तुमने देखा ही क्या है। आठ महीने की ब्याही बेवा हो गयीं। मेरी तो यही राय है कि अगर कभी मौका आए तो तुम जरूर शादी कर लेना वरना मुझे देखो मेरी उम्र निकल गयी। नतीजा यह कि वही चाहने वाले माँ-बाप और भाई जो ताजा घाव होने की वजह से मेरे साथ खून के आँसू रोते थे, और हो सकता है कि जबान से अब कुछ न कहें यह बात और है;

लेकिन सच्चाई यह है कि एक बोझ समझते हैं। भावजों की बातें न सहो तो जूतियाँ सहो, भाई के घर नौकरानियों की तरह काम करो, बच्चे खिलाओ और रोटी खाओ।'

मैंने देखा कि बेवा के चेहरे पर एक गम्भीरता-सी छा गयी। उसका सुन्दर चेहरा कुम्हला-सा गया हो। उसी समय मेरे दिल में खयाल आया कि क्या ही अच्छा होता कि मैं इस नौ उम्र लड़की से शादी कर सकता। ठीक इसी मौके पर डाकगाड़ी की खड़खड़ाहट ने रंग में भंग डाल दिया और यह नौ उम्र बेवा अपनी जगह से उठ कर डाकगाडी देखने सामने से हट गयी। रेल चल दी और यह किस्सा यहीं का यही खतम हो गया, क्योंकि अगले स्टेशन पर वह उतर गयी बात आयी-गयी हो गयी, लेकिन यह सच्चाई है कि इस नौ उम्र बेवा की खूबसूरत तस्वीर मेरे दिल पर इस तरह जम कर रह गयी कि नित्य लगातार इसका चेहरा सामने आकर रह-रह कर उसका खयाल दिलाता रहा। परन्तु गरीबी ऐसी चीज है कि इस किस्म के आसारों को बहुत जल्दी मिटा देती है। अतः यह आसार भी महीना भर के भीतर मिट कर रह गया।

दफ्तर के तकाजों के लिए मैं अक्सर बाहर ही जाता रहता था। और फिर कोई डेढ़ महीने बाद मुझे जाने का सुयोग मिला।

स्टेशन पहुँचने में तनिक अबेर हो गयी। टिकट खरीद ही रहा था कि गाड़ी रवाना हो गयी। लपक कर चलती गाड़ी में बैठ गया। यह एक तीसरे दर्जे का डिब्बा था जिसमें सिवा एक बुरका-पोश औरत के और कोई न था और जैसे ही मैं दाखिल हुआ मैंने एक झलक खूबसूरत चेहरे की देखी। यह वही खूबसूरत बेवा थी। उस वक्त गाड़ी में उसके साथ मैं बिल्कुल अकेला था। उसने अपना चेहरा बुरका से छिपा लिया। मेरी ओर घूंघट में से देखा और मुँह मोड़ लिया। मैं आश्चर्यान्वित हो खड़ा रह गया कि मेरी नजर उसके खूबसूरत हाथों पर पड़ी। बिना सोचे समझे हुए या यों कहिए

मानो किसी खास आकर्षणवश करीब ही जाकर उसके सामने वाली लम्बी बैंच पर बैठ गया और खिड़की से सिर बाहर निकाल कर झाँकने लगा। सामने वाली बेंच पर वह थी; मगर मैं बिल्कुल आमने-सामने नहीं, बल्कि इस तरह कि अगर बाएं हाथ को मैं दो खिड़कियाँ और सरक जाऊँ तो हम दोनों बिल्कुल एक दूसरे के सामने हो जाएँ।

मेरी इस हिम्मत पर उसको अपना रुख बदल कर दीवार की तरफ मुँह कर लेना पड़ा। ऐसा करने में शायद उसने गलती की; क्योंकि अब अगर सरक कर मैं उसके समीप पहुँचूं तो वह ऐसा करते मुझे नहीं देख सकती थी। मैंने चाहा कुछ बात करूँ, मगर असम्भव हुआ।

सम्भव है कि मेरा कार्य व्यावहारिक दृष्टिकोण से निन्दनीय हो, लेकिन संप्रति चूँकि नैतिक सम्बन्धी शिक्षा देने की अपेक्षा अपनी नैतिक कमजोरियों की तस्वीर पेश कर रहा था अतः यह बतलाने में मुझे संकोच नहीं कि मैंने धीरे-धीरे सरकना प्रारम्भ किया। वह इस ख़याल से कि क्यों न बिल्कुल ही उसके सामने बैठूं।

जब बिल्कुल ही समीप पहुँच गया तो मैंने खिड़की से तकिया लगा कर दोनों पैर सामने वाली बेंच पर रख लिए। इस तरह कि मेरे पैरों का फासला बमुश्किल उसकी पीठ से हाथ भर रह गया होगा। उसने इस मौके पर मुड़ कर मेरी ओर देखा—कुछ बेचैन होकर। और मैंने धीरे-से कहा—

'जब से मैंने आपको देखा है···।'

मैं रुक गया और उसने और भी बेचैन होकर बल्कि भयभीत होकर मुझे देखा।

मैंने कहा—'तुम घबराओ मत। मैं तुमको जानता हूँ। तुम एक बेवा हो। आठ महीने बाद शादी के बेवा हो गयीं। मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ···।'

मैं फिर रुक गया और उसने मुझे आश्चर्य से देखा ।' मैंने कहा—

'मैं एक गरीब आदमी हूँ । नौकरी पेशा हूँ । आप हैरत अंगेज न हों । आपको याद होगा, दो-डेढ़ महीने हुए रात को आप सफर कर रही थीं और आपके साथ कोई औरत थी, वह भी बेवा थी'''।'

कदाचित् उसने विकल होकर सुना और सम्भवतः कुछ कहना भी चाहा । मैंने रुक कर कहा—

'मैंने आपकी और उसकी बातचीत सुनी थी'''।'

'मैं आपसे शादी करना चाहता हूँ'''।'

'मैं अकेला हूँ'''।'

'मुझको मालूम है—आप उसके खिलाफ भी नहीं'''।'

'जब से मैंने तुमको देखा और तुम्हारी बातें सुनीं, बेकल हूँ । बहुत समय तक तुम्हारा खयाल दिल में रहा । रात और दिन परेशान था कि आज अकस्मात इस तरह मिलना हुआ । मुझे उम्मीद है कि मैंने जो कुछ भी कहा'''।'

इतना कहकर मैं उसके बराबर बैठ गया । मैंने कहा—'बोलो ।' वह चुप रही । मैंने बार-बार तकाजा किया । उसने गरदन झुका ली । मैंने हिम्मत करके हाथ से टहोका देकर कहा । और हिम्मत हुई, कंधा हिलाकर कहा । बार-बार, तकाजे के साथ जोर देकर कहा । कुछ जवाब न मिला । मैं तो चकित रह गया । मैंने जल्दी से एक कागज पर अपना नाम और पता लिखा और कहा—'यह मेरा पता है । इसको रख लीजिए ।' बिना यह सोचे-समझे हुए कि प्रतिपक्षी के पते की लाइल्मी का क्या इलाज और यह समझते हुए कि इस बातचीत का परिणाम पूर्णरूपेण शुभ होगा । मैं घबरा कर खड़ा हो गया । बहुत सम्भव है कि बलाओं को निवारण करने वाला तावीज समझ कर उसने लिया हो कि यह बला किसी तरह टले तो । उसने अत्यधिक भोलेपन से हाथ बढ़ा कर कागज ले लिया । तुरन्त मेरे ऊपर बिजली-सी गिरी । तफसील जाने दीजिए । रजा-

मन्दी या गैर रजामन्दी का सवाल बेकार है। हम दोनों बैठे हुए बातें कर रहे थे। मैंने बुरके का घूँघट उसके सिर पर रख दिया था। वह आँखें लज्जा से कुछ झुकाए हुए थी और जवाब निहायत ही नरम और कमजोर आवाज से देती थी। रेल की घड़घड़ाहट अलग। मैंने दो-चार ही बातों के बाद कहा—'अरे भाग्यशालिनी मैं बहरा हूँ।' उसने मुस्करा कर मुँह मोड़ लिया। मैंने कहा—'नहीं, हूँ वहरा ही, खुदा के वास्ते और जोर से बोलिए।'

हम दोनों ने बहुत संक्षिप्त बातें कीं। उसने कहा कि मैं कुछ नहीं जानती। मेरे माता-पिता जानें। यह भी कह दिया कि उनसे कहना बेकार भी होगा। मेरी इस तजवीज से इन्कार किया कि मेरे साथ चली चलो और डालो सबको जहन्नुम में। उसने बुरा मान कर कहा—'हर्गिज नहीं। मुझसे इस किस्म की बातें न कीजिए।' उचित-अनुचित का प्रश्न बेकार। पिताजी को खत लिखने से भी मना किया। फिर उनको पैगाम भेजने से भी मना किया। तनिक विचार तो कीजिएगा। कि हर तरह राजी हैं। मगर न तो साथ चलने को रजामन्द न इसकी इजाजत कि बाप को पैगाम दो। फिर, आखिर क्या करूँ ? जवाब यह कि 'मैं भला क्या बता सकती हूँ।'

बड़ी मुश्किल से मैंने पत्र-व्यवहार की इजाजत चाही और पता माँगा। तनिक विचार कीजिएगा। पता दिया जाता है—फलाँ गाँव में पहुँच कर फलाँ स्वर्गीय साहब के मकान पर बरखुदार फलाँ को मिले। यह किसी पड़ोस का पता था और इस पते पर खत भेजूँगा तो मिल जायगा। इस बातचीत का यह नतीजा निकला कि अपने मिल-जुलकर जीवन बिताने के बहुत ही विचित्र पहलू को वास्तविकता के प्रकाश में देख लिया और बस यह सोचा कि अभी यही सन्तोष की बात है। आगे चलकर पत्र-व्यवहार से मामले राह पर आ जाएँगे। मालूम हुआ कि बड़े मजे से अकेली सफर कर रही हैं। दो स्टेशन का मामला है और अगले ही स्टेशन पर कोई लेने को

आया होगा। बिठाने वाले की मूर्खता थी जो इस मरदाना गाड़ी में तीन-चार औरतों को देखा तो वहीं बिठा दिया कि दो स्टेशन तो जाना ही है। यह भी खुशी की बात थी कि असल जन्म स्थान मेरे हैड-क्वार्टर से केवल एक स्टेशन दूर था।

मैंने दिल खोल कर बातें कीं। अपनी पाक मुहब्बत का विश्वास दिलाया और उसके जवाब में सच्ची और जायज मुहब्बत का वायदा लिया। हर तरह रजामन्द कर लिया। कदाचित् रजामन्द से भी अधिक। यहाँ तक कि उसने हिम्मत करके कह दिया, 'अगर मेरा बस चलता तो मैं अभी तुम्हारे साथ चलती और मुझे किसी तरह इन्कार नहीं'''हर तरह अपनी तरफ से रजामन्द हूँ'''आदि-आदि।

जब स्टेशन करीब आया तो मुझे खयाल हुआ कि जो भी इसे लेने आएगा वह मुझे और इसे अकेले गाड़ी में देखेगा। मेरा तो कुछ नहीं भगवान जाने इस पर कुछ मुसीबत पड़े। मेरे दिल में यह खयाल आया ही था कि स्वयं उसने यही खयाल जाहिर किया। मैंने बेहतर खयाल किया कि गाड़ी रुकने से पहले ही प्लेटफार्म के दूसरी ओर वाली खिड़की के पायदान पर खड़ा हो जाऊँगा और गाड़ी रुकने पर उस तरफ उतर जाऊँगा। अतः मैंने ऐसा ही किया। मगर गाड़ी रुकने को थी कि एकदम से वह लपक कर अपनी जगह से उठ आयी। जल्दी से खिड़की में झाँक कर मुझसे कहा—'सुनिये तो!'

मैंने कहा—'क्यों? क्या है।' उसने कुछ जवाब नहीं दिया। मैंने कहा—'बोलती क्यों नहीं हो। क्या कहती हो?'

उसने एक अजीब अन्दाज से मुझे देखा। उसके जादू भरे चेहरे पर एक स्त्रियोचित लज्जा की सी झपकी आयी। आँखें झपका कर उसने बड़े कोमल स्वर में न मालूम किस तरह अत्यधिक कोशिश करके कहा—

'मुझे भूलोगे तो नहीं?'

ईश्वर जानता है कि मेरा क्या हाल हो गया। खैर हुई कि

हैंडिल नहीं छूट पड़ा। बेताब होकर मेरे मुंह से चीख निकलते-निकलते रुकी। पागलों की तरह मैंने खिड़की खोलकर अन्दर आकर उसको कलेजे से चिपटा लिया और फिर सहसा उसे छोड़कर खिड़की खोल कर कूद गया। गाड़ी की ओर मैं दो डिब्बे छोड़कर तीसरे में जा बैठा। रेल छूटने से कुछ क्षण पूर्व मैंने देखा कि किसी आदमी के साथ-साथ वह जा रही है। आदमी की पीठ मेरी तरफ थी अतः पहिचान न सका। दूसरे दिन मैं वापिस आया। तबीयत पर जो कुछ भी बेचैनी थी जाहिर है। इश्क का पागलपन सिर पर सवार हो चुका था। उम्र की पहली मुलाकात थी। अपनी पूरी ताकत के साथ कामदेव ने अपने बाण की नोक मेरे सीने में घुसा दी थी।

दिन और रात मैं उस दोस्त की मुहब्बत में डूबा रहता। मेरी तरह वह भी किसी निहायत गरीब जमींदार या काश्तकार की लड़की थी। मेरी तरह वह भी मुझे याद करती होगी। जिस समय उसका आखिरी कहना याद आता 'भूलना मत' तो मालूम होता कि चलते-चलते दिल रुक जायगा।

लेकिन भाग्य को देखिए! यहाँ मेरा तो यह हाल और बड़ी बी ने अब भी इस सेवक का नाम अपनी फेहरिस्त से खारिज नहीं किया था। उनकी तमाम असम्बन्धित बातें और हरकतें उनके रहस्यों की निन्दा करती थीं तथा उनके बे-गिनती अहसान मेरी शोकाकुल जान पर न होते तो सम्भवतः मैंने कब का उनका मुंह नोंच लिया होता।

दो-तीन दिन का अन्तर करके मैंने एक खत बताए हुए पते पर लिखा। खत पहुँच गया। उसका जवाब भी आ गया और अब बातचीत का वह सिलसिला जारी हुआ जिसने मेरी जिन्दगी में एक जबरदस्त इन्कलाब पैदा कर दिया।

६

इश्क को दो किस्मों में बाँटा गया है—मजाजी[1] और हक़ीक़ी[2] और जब मैं इश्क में फँसा तो जान गया कि यह इश्क हक़ीक़ी है तथा आसार से भी मालूम हो गया कि यह मजनूँ या फरिहाद वाली किस्म है। इसके नतीजे मजनूँ और फरिहाद की तरह अच्छे न निकलेंगे। लेकिन यह मुझको नहीं मालूम था कि नतीजा बुरा निकलने पर भी मेरा हर्ष मजनूँ और फरिहाद से बिल्कुल भिन्न होगा—ऐसा कि मैं इन दोनों पर ईर्ष्या ही करता रह जाऊँगा।

चन्द दिनों में ही बखुदा मैं इश्क की तेज आग में जलने लगा। मुहब्बत की आग फूँके देती थी। रातों की नींद उड़ गयी। उठ कर घंटों टहलता। अकेले ही अकेले अपनी बेबसी पर रोता। दिन-भर चुप-चुप-सा रहने लगा कि जो भी देखता यही पूछता कि क्या हो गया है। बड़ी बी खाना लाती तो मुझे देख कर हैरान रह जातीं। मैं कुछ न बोलता। हूँ-हाँ करके टाल देता। हर खत इस आग को तेज से तेजतर कर रहा था। फिर मुश्किल यह कि उधर से इसकी इजाजत नहीं कि सक्रिय कदम उठाऊँ और सिलसिला जारी करूँ। अभी कुछ देर थी और नेक सलाह बीच में बाधक थी। सामाजिक रस्में, बिरादरी की बंदिशें और उस पर देहात की जहालत—यह थीं वे कठिनाइयाँ जो चट्टान की तरह रुकावट डालने वाली थीं और मेरा यह विचार कि 'आखिर इस सागर लबरेज की मैं क्या

---

१. नकली। २. असली।

होगी[1] ?' उलझनें बढ़ रही थीं कि आग पर तेल पड़ गया।

एक खत आया। किसी दूसरे गाँव का पता लिखा था कि वहाँ किसी खुशी के मौके पर जाती हूँ। मेरी एक सहेली हैं, उनके घर जाकर ठहर जाना। बाप उनके अन्धे हैं। ठहरने का प्रबन्ध कर दिया गया है। अन्धा क्या चाहे दो आँखें। मैं नियत तारीख को पहुँच गया। यह एक बहुत ही गरीब काश्तकार का मकान था। घर के मालिक बूढ़े और अन्धे थे। जाहिरा दो-चार खेतों के गल्ले पर गुजरान होगी। इन बड़े मियाँ से जो मैंने दो-चार ही बातें कीं तो मैं खटका। यह तो ऐसी बातें कर रहे थे जैसे मैं अपने बीवी-बच्चों समेत किसी खुशी के मौके पर आया हूँ और बीवी-बच्चे खुशी मनाने वाले घर में और जगह की कमी के कारण मैं यहाँ ठहरा हूँ। मालूम हुआ कि उनकी साहबजादी ने उनको धोखा दिया था—यानी मेरी माशूका की सहेली।

किस्से को इस प्रकार संक्षिप्त करता हूँ कि दूसरे दिन रात को मौका मिला। स्वामी की लड़की मय अपनी सहेली साहिबा के मौजूद थीं और मैं अपनी माशूका से मिला। बयान नहीं कर सकता, क्या हाल हुआ। निर्णय हुआ कि मुझे अख्तियार है, मैं अपनी माशूका के बाप से मिलकर शादी का पैगाम दूँ। मगर वह जो किसी ने कहा है, किस्मत का लिखा पूरा होता है। या तो बात यहीं फूट गई या वहाँ फूट गई। कुछ भी हो। नतीजा यह निकला कि मुझको खबर भी नहीं हुई और मेरे खत वहाँ पकड़े गये। इस दशा में मेरे किसी खत में भी सिवा पाक-मुहब्बत के कोई अशिष्ट बात न थी और हर खत में तकाजा था कि मैं तुम्हारे पिताजी की खिदमत में पैगाम पहुँचाना चाहता हूँ। संक्षेप में, खुशी-खुशी वहाँ से वापिस आ गया और वापसी के एक हफ्ते भर बाद खत लिखा,

---

१. आखिर इस भरे हुए शराब के प्याले की शराब का क्या होगा ?

जवाब नदारद। फिर खत लिखा जवाब नदारद। यहाँ तक कि पन्द्रह-बीस दिन निकल गये। इन खतों में यही पूछा था कि तुम्हारे वालिद से मिलने कब आऊँ। जब मैंने खत पर खत लिखे और कोई जवाब नहीं आया तो मेरा बुरा हाल हो गया।

दुनिया अन्धेरी हो गयी। रात और दिन आहें भरते गुजरतीं। जब यह हालत नाकाबिल बरदाश्त हो गयी तो बिस्मिल्लाह कह कर मैंने तीन दिन की छुट्टी ली और जा पहुँचा।

गालिब के शेरों के प्रायः मानी समझने में मुश्किल होती है और इश्क से सम्बन्धित जो शेर हैं, उनमें एक यह भी है—

'गदा समझ के वह चुप था मेरी जो शामत आये।

उठा और उठके कदम मैंने पासबां के लिये।'[1]

इस शेर के मानी जो कुछ भी मैंने समझे, यहाँ अरज किये देता हूँ।

इतवार का दिन था। सुबह की गाड़ी से रवाना होकर मैं गाँव पहुँचा। गाँव में पता चलना कठिन ही क्या था। अपनी माशूका के वालिद साहब का नाम मालूम ही था; मकान पर पहुँचा तो एक खुशहाल काश्तकार के मकान का नक्शा पेश नजर आया। एक चौपाल थी उसमें दो तख्त और चारपाइयाँ पड़ी थीं। तीन-चार देहाती मुसलमान बैठे हुए थे। गाँव की बेतकल्लुफी के सबब घर के मालिक का पता चलना कठिन था। मैंने 'सलाम अलैकुम' करके बुजुर्गवार को पूछा। एक बलिष्ट युवक ने मेरा नाम-पता और अभिप्राय पूछा। मैंने नाम व पता बताकर अभिप्राय को गुप्त रक्खा। कह दिया कि उन्हीं से मिलना है। उन्होंने बैठाया और कहा, 'ठह-

१. पहरेदार मुझे भिखारी समझ कर चुप था, किन्तु जब मैंने अपनी प्रेमिका के बारे में पूछा तो मेरी मुसीबत आ गयी और मैंने उठ कर उसके (पहरेदार के) पैर पकड़ लिये।

रिये जरा। अभी आते हैं।' फौरन उठ कर गये और अन्दर जाकर अपने बड़े भाई को बुलाकर लाये। दोनों भाई आकर बैठ गये और फिर मुझसे एक शब्द न पूछा। मगर हाँ, मैंने महसूस किया कि और लोग जो बैठे थे उनको जानबूझ कर रुखसत कर दिया गया और फिर मुझसे कहा कि आइये सामने कमरे में चलिये। एक भाई मेरे आगे और एक दूसरा पीछे। कमरे में पहुँचा तो एक बड़े मियाँ चारपाई पर सुशोभित थे। यह मेरे होने वाले ससुर यानी दोनों भाइयों के वालिद थे। मैंने निहायत ही अदब से सलाम किया। एक मूढ़ा पड़ा था उस पर मुझे बैठने का हुक्म दिया गया। मंशा जाहिर करने के लिए मैंने एकान्त चाहा। दोनों भाई उठकर चले गये। मैंने निहायत ही अदब से और हाथ जोड़ कर अपना मंशा जाहिर किया कि मैं आपकी गुलामी में दाखिल होना चाहता हूँ। बड़े मियाँ ने एकदम से अपना चेहरा बिगाड़ लिया और बजाय जवाब देने के अपने बेटों को आवाज दी। यह कहकर कि 'अरे यह वही है।' अब मैंने देखा कि त्यौरी पर बल डाले दोनों भाई आये 'अच्छा!' दोनों ने एक जबान होकर कहा—'यह वही बदमाश है।'

मैं अरज नहीं कर सकता कि मेरा क्या हाल हुआ। पैरों तले से जमीन निकल गई। मुझसे निहायत ही सख्ती से पूछा गया कि मैंने क्या समझ कर एक शरीफ लड़की को खत लिखे और जब मैंने अपनी नेकनीयती का जिक्र किया, जो मेरे यहाँ आने से साबित थी तो उसका उन्होंने जवाब दिया कि यह मेरा दुस्साहस है और मैंने उनको ऐसा कमीना समझा कि अब खुद आया। उनके यहाँ पुनर्विवाह नहीं होता बल्कि उसका जिक्र सख्त तौहीन है। उनसे ऐसी छेड़-छाड़ करने की अब क्या सजा है। यहाँ सिर्फ यह लिख देना काफी है कि कोई हुज्जत या बहस कारगार न हुई। उलटी आँतें गले पड़ीं। बड़े मियाँ ने गाली देकर अपने लड़कों को हुक्म दिया कि मुझे खोदकर गाड़ दें। पलक झपकते में सवाल ही इसका पेश हो गया। मुकाबले

या लड़ाई-झगड़े का नहीं; बल्कि ख़ालिस पिटने का। और फाँद-फूँद कर निकल जाना इश्क़ की इन्तहा।

यह तफसील कुछ दिलचस्प नहीं है। बस यों समझिये कि मेरी ख़ूब पिटाई हुई। बहुत या कम से आप अंदाजा शायद न लगा सकें बस यों समझ लीजिए कि सारा इश्क वहीं का वहीं ठोक-बजाकर मूजियों ने झाड़ दिया। तब कहीं मैं निकल कर भागा; मगर फिर पकड़ा गया और घर में चोरी की नीयत से घुसने के जुर्म में पुलिस में दे दिया गया। थाने की नजरबन्दी मुझे गनीमत मालूम हुई। बहुत जल्द मुझे मालूम हुआ कि या तो जमानत दूँ वरना हवालात में जाऊँ। यह उनको नहीं मालूम कि मेरे घर और हवालात की तकलीफ में अधिक फर्क नहीं। लेकिन सवाल मुलाजमत का था। मेरा कौन मरा-जीता था जो मुझे जमानत पर छुड़ाता। लाचार हो गया, लेकिन इस लाचारी की हालत में जरा फुरसत जो मिली सोचने की तो जहन किसी दूसरी तरफ चला गया। क्या मुमकिन था कि बड़ी बी को अगर इस वक्त तार दिया जाए तो वह मेरी मदद कर सकें। सचमुच उस वक्त इश्क के जज़बात ऐसे लुप्त थे कि ख़याल ही न था कि हम आशिक भी हैं। मार और हवालात फिर नौकरी जाने का अन्देशा अलग। और कहीं जेल हो गयी तब! घबरा कर बड़ी बी को तार दिलवाया। थाना दरअसल स्टेशन के करीब ही था।

रात-भर तो हवालात में रहा। दूसरे दिन सुबह की गाड़ी से बड़ी बी आ पहुँचीं। एक तजुर्बेकार ठहरीं। ख़ुदा जाने क्या बात-चीत की कि तीसरे पहर की गाड़ी से हम वापस घर आ गए। एक कानूस्टेबुल साथ था। उसको पचास रुपये गिन कर दिए गए तब जाकर मामला रफ़ा-दफ़ा हुआ, मगर गए दिन के लिए। मूजियों ने पुलिस की शिकायत मजिस्ट्रेट के यहाँ की और अदालत में मुकद्दमा खड़ा कर दिया। फिर मेरी जमानत हुई। बड़ी बी ने अपना मकान जमानत में दिया और मुकद्दमा चला। पूरे दो महीने में मेरी जान

इस मुकद्दमे से छुटी। सवा सौ रुपया इस मुकद्दमे की नजर हो गया। गोया बड़ी बी का ढाई सौ रुपए का कर्जदार हो गया। जरा ग़ौर कीजिएगा इस दोहरी पराजय पर। सचमुच कुचल कर रह गया— ऐसा कि बिल्कुल गुम-सुम हो गया यहाँ तक कि बड़ी बी को धन्यवाद प्रदान करने तक को भी जबान न थी। बड़ी बी ने मेरी उस खर्ची को देखा। तजवीज की कि मैं पहले की शर्तों पर उनके साथ चलकर रहूँ। मैं चुप बैठा देखता रहा और असबाब के साथ बड़ी बी के यहाँ पहुँच गया। वस्तुतः शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कठिनाइयों के पहाड़ तले ऐसा कुचल गया था कि जिन्दगी बवाल और बेकार मालूम होती थी।

७

इसके पूर्व कि मैं अपना किस्सा आगे बयान करूँ बेहतर समझता हूँ कि यह बात जाहिर कर दूँ कि न तो मेरा इरादा है कि आशिकों की जमायत में मेरा नाम भी शामिल कर लिया जाय और न किसी गजटेड आशिक का नाम फेहरिस्त से खारिज कराना है। लेकिन यह जरूर अरज करना है कि जहाँ तक इश्क का ताल्लुक है मुझे भी सच्चा इश्क ही हुआ था। यह और बात है कि इसका बेशकीमती हिस्सा कुछ तो मार-कूट से गायब हो गया और बाकी जो बचा वह पुलिस और अदालत की घसीटन में कहीं से कहीं जा पहुँचा। मुमकिन है, आप कहें कि इश्क फिर इश्क होता है। कहीं इन माद्दी ताकतों के बस का रोग थोड़े ही है, लेकिन अरज है किबला[1] कि

---

१. पिता, गुरु आदि पूज्य लोग।

गरीबी और कर्जदारी एक तरफ और उन देहाती मूजियों का धड़का एक तरफ। वह भी कैसा कि माशूक के खयाल के साथ गँवारू डंडे भी खयाल की सामग्री बनकर रह जाएँ। दरअसल मजनूँ और फरहाद की कसौटी पर आजकल का इश्क जाँचना ही गलती है; क्योंकि सही अरज है कि उस जमाने में न तो सिरे से यह महकमे ही थे न क्लर्की थी। न ऐसी पुलिस, न वकील और न अदालत। न यह फन्दे और न करजदारी। वरना यह वाकया है कि इश्क भी वही है और आशिक भी वही है। वैसे ही सच्चे, बल्कि शायद इससे अधिक और बखुदा मैं भी अपने इश्क में सच्चा था। मगर इसको क्या करूँ कि एक तरफ तो करजदारी और नौकरी का डर तो दूसरी तरफ उन मूजियों के डंडों का डर जिन्होंने कह दिया था कि अगर अब मैंने जरा कुछ भी किया तो जान की खैरियत नहीं। ऐसी दशा में क्या करता। घुट कर सचमुच गुम-सुम होकर रह गया। खुदा भला करे उन बड़ी बी का कि उन्होंने भी मामलों की नजाकत का लिहाज करते हुए शायद अन्दाजा लगा लिया कि मुझे मानसिक शान्ति की अत्यधिक आवश्यकता है।

इस दौरान में बड़ी बी के यहाँ आकर मैंने देखा कि उन्होंने अपना पहले का काम छोड़-छाड़ दूकान का-सा डौल गाँठ लिया है और सड़क के किनारे के मकान की खिड़की में से बैठी-बैठी वह रोजी कमा लेती हैं। घर क्या बनिये की दूकान थी पूरी और काम उनका शीघ्रता से बढ़ ही रहा था; क्योंकि परिश्रम साहिष्णुता और सच्चाई से जो काम किया जाये वह जरूर ही कामयाब होता है।

मैंने खुद जोर देकर बड़ी बी को उनके कर्ज का कागज लिख दिया और यह किया कि पूरी आमदनी लाकर उनको सौंप देता कि खाने-पीने से जो बचे वह कर्ज में मुजरा हो। हालांकि तबीयत को शान्ति थी, मगर यह सोचते ही झंझट सवार हो जाता था कि बड़ी बी मुझसे क्या कमा रही हैं। बैठ कर हिसाब करता दिल में, लेकिन

फिर खुद उनके साथ रहने और उनको चोरों के धड़के से बेखबर रखने की कीमत जब मुकर्रर कर लेता तब जाकर इत्मीनान होता। लेकिन इस दौरान में बड़ी बी ने एक और ही पाँसा फेंका।

सचमुच मुझको सन्देह तो बहुत पहले था, मगर पुष्टि हो गयी। स्थिति यह थी कि एक काठ का उल्लू रोजाना आता और पानी पर कुछ मन्त्र फूंक जाता था फिर यही पानी बड़े मजे से मुझे पिलाया जाता था। मैं जो खटका तो सारा भेद खुल गया। मेरे तकिये में तावीज रख दिया था। कभी पान में इलायची खाऊँ तो वह पढ़ी हुई। लाहौलवलाकूवत उनके असरों को कबूल करने से बहस नहीं। सवाल केवल यह था कि उनके अहसास पर गौर कीजिए। इस दशा में मेरी नजरों में अब भी वही नक्शा बसा हुआ था। हँसी भी आती जब मैं बड़ी बी को देखता और गौर करता कि इन तावीजों के जोर से बड़ी बी पर आशिक होना मुमकिन है। बल्कि मैं यह जानता था कि इस 'छू छक्का' का पूरा कोर्स लेने के बाद अगर बड़ी बी में कुछ अक्ल आ जाय तो बेहतर। देख तो लें वह कि पत्थर में जोंक लगाए कहीं लगती है!

उस जमाने का जिक्र है कि मुझे बड़ी बी की एक और कार्य-वाही का ज्ञान हुआ। सोते में वह मेरे करीब आकर बड़े गौर से मेरे चेहरे को देखा करती थीं। कई बार मुझे आँख खुलने पर शक-सा हुआ। इस शक की एक रोज मैंने मकर गाँठ कर जाँच कर ली। सोता बन गया। मैंने चुपके से देखा—बड़ी बी उठीं। दबे पाँव आकर मेरे चेहरे को देखने लगीं। उसके साथ ही एक और बात भी मालूम हुई। नमाज तो वह पहले भी पढ़ती थीं, मगर कैसी? बस यह समझिए कि पढ़ तो रही हैं नमाज, किन्तु दिल बाजार में पड़ा है। टक्करें मार मूर यह जा—वह जा। मगर अब न नमाज सिर्फ दूसरी थी बल्कि मय वजीफा[1]। खैर यहाँ तक भी कुछ नहीं; लेकिन

१. मुसलमानों का जप या स्तोत्र-पाठ।

मैंने यह देखा कि शाम, सुबह और रात की नमाज के संक्षिप्त या बड़े वजीफे के बाद ही वह घूम-घाम कर मेरे करीब जरूर हो जाती थीं। परन्तु इन घटनाओं के होते हुए और बावजूद इसके कि मैं बदस्तूर सेवाओं का केन्द्र बना हुआ था, कृपा-दृष्टियों का केन्द्र न बना। बड़ी बी के रवैये में एक लापरवाही की शान पायी जाती थी। यह कदाचित् उनकी कमजोरी का परिहार था जिसका बयान वह कर चुकी थीं।

मौजूदा हालत मुकर्ररा मुश्किलों पर कायम थी। दिन और महीने गुजरते गए और कोई जिक्र करने के काबिल बात पेश न आयी। सरदी का मौसम आया तो बड़ी बी ने मेरा और अपना बिस्तर कमरे में पहुँचाया। कमरा जिसमें फर्श—नरम-नरम घास पर दरी और उस पर जाजम और उस पर बिस्तर। रात को एक कड़ुए तेल का चिराग उस कमरे में अँधेरे और उजाले का दंगल कायम कर देता और यह कुश्ती सुबह सूरज की किरणों की मदद से फैसला होती।

चढ़ती सरदी का जमाना था कि मैं बीमार पड़ गया। मामूली बुखार था, मगर सिर के दर्द ने बरबाद कर दिया। मेरे मना करने पर भी बड़ी बी ने तीमारदारी को बीमारी से अधिक तकलीफदेह बना दिया। बिस्तर से बिस्तर मिलाया गया और सिर का दर्द क्या हुआ कि सिर की मिल्कियत[1] का सवाल दरपेश हो गया। मगर बड़ा गैर मुनासिब होगा यदि इस तीमारदारी का शुक्रिया अदा न करूँ और यही बीमारी मेरे लिए घातक सिद्ध हुई। सचमुच औरत फिर औरत है। चाहे वह बूढ़ी हो कि जवान और मरद एक नाचीज हस्ती है।

मामूली बुखार की शिकायत थी जो जाती रही, लेकिन हकीम जी ने बदकिस्मती से बादाम और कद्दू का तेल सिर में लगाना

---

१. स्वामित्व का अधिकार।

मुकर्रर किया था। नतीजा यह कि बीमारी के बाद यह सिर का दर्द जारी हुआ कि सोते समय बड़ी बी घंटे दो घंटे मेरे सिर में तेल लगाया करती थीं या यों कहिए कि लतीफे और किस्से इधर-उधर के हो रहे हैं, मैं लेटा हुआ हूँ, जांघों पर उनके सिर है और वह मेरे सिर, बालों और पेशानी से शौक़ फरमा रही हैं।

एक दिन की बात है कि इसी तरह सिर दबवाते मैंने कहा 'नींद-सी आ रही है।' मगर बड़ी बी न मानी। मैंने आँखें बन्द कर लीं और ऊँघ-सी आ गयी। नहीं कह सकता कि मैं कब और कितनी देर में सो गया और सोते में मैंने एक ख्वाब देखा।

क्या देखता हूँ कि वही अन्धे का मकान है, जहाँ मैं अपनी माशूका से मिलने गया था। वही कमरा है और मैंने उसको आगे बढ़ कर अत्यधिक अनुराग से अपने बेकरार सीने से लगा लिया। उसने भी मुहब्बत से मुझे दबाया और अपना सिर मेरे सीने से लगा दिया। मैंने उसके सिर को बोसा दिया और जोर से दबाया तथा उसने अपना सिर मेरे सीने पर रख दिया, हल्की-हल्की सुबकियाँ लीं और ऐसा मालूम हुआ कि वह रो रही है।

जज़बात से मैं बेकाबू हो गया। मैंने और भी मुहब्बत से उसको अपने सीने से लगाया। अपने पर ठंडक-सी महसूस की। आँख खुल गयीं। जहाँ तक हकीकत का सवाल है स्वप्न सच्चा था। यानी यह सच्चाई थी कि मैं अत्यधिक गरमजोशी से बड़ी बी को सीने से लगाए उनके सिर को बोसे से सम्मानित कर रहा था। 'इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलैह राजऊन'[1]। और उन्होंने अपने आँसुओं से मेरा सीना तर कर दिया था जिसकी शीतलता मैं महसूस कर रहा था।

अब ऐसी हालत में मैं क्या करता? विवश होकर उसी तरह सोता बन गया। मगर क्या अब बड़ी बी मुझे छोड़ने वाली थीं?

१, सत्य, ईश्वर है और उसी की ओर हमें लौटना है।

तोबा कीजिए। इस मुहब्बत की मारी बुढ़िया ने अपनी गिरफ्त को उसी तरह कायम रक्खा। नतीजा यह कि अधिक-से-अधिक मैं यह कर सकता था कि अपने हाथ ढीले कर दूं। मगर छुड़ाना और अलहदा होना बगैर अच्छी तरह जागने के नामुमकिन था और मुझे बहुत जल्द ही तसलीम कर लेना पड़ा कि मैं जाग उठा हूं। और इसमें बड़ी बी की जीत थी। नतीजा यह कि मुझको आँखें खोल कर चिराग की धीमी रोशनी में अपनी डरावनी हालत को देखना पड़ा। खुद सोचिए कि मैं क्या करता। यह तो कहने से रहा कि बड़ा धोखा रहा। कुछ हल्कापन, कुछ शरम। नतीजा यह कि विवशतः वर्तमान दशा को निभाना पड़ा। इसी मुहब्बत की मारी बुढ़िया की मुहब्बत की गोद एक समस्या बन गयी, जिससे छूटने से पूर्व अपने स्वप्न का पूरा फल देखना पड़ा।

दूसरे दिन हम दोनों चुप रहे। मगर मैंने इस वाकया की अहमियत[1] का अहसास किया। यह वाकया एक वारदात से कम न था। क्या मानी कि खुद तो पेशकदमी[2] करूं और दूसरे दिन यह उज्र करूं कि धोखे में और ख्वाब की हालत में मैंने ऐसा किया था। सवाल यह था कि इस उलझन से निकलने का कोई रास्ता भी है। मैं इसी सोच में था कि रात को बड़ी बी खामोशी से सिर दाबने के लिये आयीं और बिना बात कहे-सुने उन्होंने सिर की मालिश शुरू कर दी। मैं इस सम्भावना पर ही गौर करता रहा कि किस तरह इस भ्रम से निकलूं। नतीजा जाहिर है। मैं सोचता ही रह गया। अपनी बेबसी का अहसास भी था। इज्जत-आबरू का लिहाज अलग। मगर घटनाओं के हाथ में किसी बच्चे की तरह बेबस था। दूसरे दिन बड़ी बी से शादी करनी पड़ी और इस शादी के बाद मैं खूब

---

१. महत्ता। २. किसी काम में आगे बढ़ना, नेतृत्व, आक्रमण, आगे पैर बढ़ाना।

और खूब ही रोया। अपनी बेबसी पर या बरबादी पर। हकीकत का अहसास दिल में बरछी-सी मारता था। या मेरे अल्लाह ! क्या यह सच्चाई थी कि एक सैयद जादा एक नीच औरत के साथ शादी का तमाशा करे। क्या यह शादी थी ?

मैंने इस शादी के 'हनीमून' को एक विचित्र तरीके से मनाया कि दफ्तर से दस दिन की छुट्टी लेकर कोठरी में बन्द रहा। रह गयीं बड़ी बी तो उन्होंने मुहल्ले में हिस्से बाँटे। मैं जब आराम-गृह से निकला हूँ तो बात पुरानी हो चुकी थी, मगर फिर भी यार लोग खँकारने, आवाजकशी करने से बाज न आए। लेकिन जिनको यह मालूम था कि बड़ी बी ने मेरे साथ क्या सलूक किए हैं और क्या अहसान किए हैं उन्होंने मेरी हिम्मत की तारीफ की।

लेकिन इस अनोखी शादी के दूसरे पहलू पर भी रोशनी डालना चाहता हूँ। यह शादी जैसी भी मूर्खतापूर्ण, निरादरपूर्ण, उपहासास्पद, मजाकयुक्त, अत्यन्त भद्दी और बे-जोड़ा शादी थी, इसका अंदाजा लगाना आसान है। यानी मतलब यह कि बगैर इस किस्म की खुद बेवकूफी किए हुए आप आसानी से राय कायम कर सकते होंगे। यही मेरा खयाल था। लेकिन ''बखुदा मैं औरत की दिलकशी का कायल हो गया। औरत और फिर बीवी एक दिलकश रागिनी है जो दिल को बिरमाती चली जाती है। मुझको नहीं मालूम था कि औरत है क्या चीज। औरत की तमाम ऐन्द्रजालिक शक्तियों से मैं बेखबर था। सिवा सूरत-शक्ल और स्पष्ट बनाव-शृंगार तथा माशूकपन की अदा के, शेष तमाम दूसरी शक्तियों की ओर बुद्धि ही नहीं जाती थी। आपको अख्तियार है चाहे मेरे शौक के चुनाव की तारीफ करेंऔर चाहेमेरी गरकाबी पर करें मातम। मैं तो इन अधिक आयु वाली बड़ी बी (जिनको मैंने अब सम्मान में बड़ी बीवी कहना शुरू किया) में डूब कर रह गया। एक अधेड़ औरत मेरे लिए चन्द ही रोज में माशूका बन गयी। ऐसी कि मैं इनकी मुहब्बत में दीवाना हो गया। यह

ख़्याल कि दफ्तर की आरजी जुदाई मेरे लिए कयामत थी। वक्त काटे न कटता और दफ्तर से दीवानों की तरह घर पहुँचता और ज्यों-ज्यों वक्त गुजरता गया मुहब्बत में बजाय भटकने के मुस्तकिली और पुख्तगी आती गई। इस बेजोड़ शादी में मुझे इश्क व मुहब्बत का खजाना मिला। आत्मा को सुख एवं शान्ति मिली। हर किस्म के शारीरिक और आत्मिक सुख के साथ वह आराम और वह आत्मिक शान्ति जो एक मर्द को एक अत्यन्त दिलचस्प बीवी के हासिल करने के बाद मिलना सम्भव है।

फिर खुदा की शान देखिए, यह शादी थी कि नेक पाँसा। इस शादी के साथ ही मेरी तकदीर ने भी एक शानदार पलटा खाया। ऐसा कि उसके बाद हर कदम पर तरक्की और कामयाबी थी। यहाँ तक कि यह सोचने पर मजबूर होता कि इलाही! क्या यह सचाई नहीं है कि दुनियाँ की तरकीबों का राज भी दरअसल एक कामयाब शादी ही में छिपा हुआ है। खुदा खूब जानता है।

अब मैं उस जमाने पर नजर डालता हूँ जो मैंने बहुत ही आराम और शान्ति के साथ बड़ी बीबी के साथ गुजारा।

८

माशूका के इश्क में सैयद खानदान की इज्जत भी गई। यह मजमून मेरा था। मेरा खानदानी अहम एक नीच औरत मिट्टी में मिला चुकी थी। कुनबा, खानदान, रिश्तेदारी बिरादरी में मुँह दिखाने के काबिल न रहा। लेकिन अफसोस कि विष्ठा के कीड़े की तरह अपनी हालत में खुश था। और फिर जैसा मैंने अरज किया इस शादी के बाद ही मेरी दुनियाई तरक्कियों का दरवाजा खुल गया।

बड़ी बीवी अपनी तिजारत में व्यस्त थीं और मैं अपनी नौकरी में। उधर उनका कारोबार तरक्की पर था और इधर मैं अपनी मेहनत और ईमानदारी से तरक्की करता गया। चार साल के थोड़े से समय में दस रुपये से तरक्की करके साठ रुपये पर पहुँचा और पाँचवाँ साल शुरू ही हुआ था कि इस मुलाजमत के बदले में मुझको दूसरी अस्सी की जगह मिली। शहर छोड़ना पड़ा और अब मैं ऐसे महकमे में दाखिल हो गया कि ईमानदारी और मेहनत द्वारा मेरे लिए दुनियाई तरक्की का एक विस्तृत मैदान था।

जमाना गुजरते देर नहीं लगती और फिर ऐश व आराम की घड़ियाँ! पलक झपकते में दस साल गुजर गये। इस लम्बे अरसे में अपने ख़याल किए हुए जीवन की तरफ से बिल्कुल सन्तुष्ट रहा। बड़ी बीवी की मुहब्बत में हमेशा साबित कदम रहा और मेरी समझ ही में न आ सका कि खूबसूरती और नौ उम्री भी कोई खास चीज है जिससे मेरी बीवी वंचित है। इस गैर मामूली हालत का राज मुमकिन है कि शायद इसमें छिपा हो कि मेरी मुहब्बत तो एक संयम पर कायम थी लेकिन बड़ी बीवी को जो मुझसे मुहब्बत थी वह कभी संयम पर नहीं आई; बल्कि उनकी मुहब्बत का अन्दाजा हमेशा आशिकाना रहा। और ज्यों-ज्यों वक्त गुजरता गया उनकी मुहब्बत में पाकीजगी और सचाई बढ़ती गई बे-मुरव्वती और खुद-गरजी घटती चली गई। यहाँ तक कि मैंने देखा कि बड़ी बीवी की प्रीति का विशुद्धभाव मेरी पूजा होकर रह गया। अपनी हस्ती को वह धीरे-धीरे भूलती जा रही थीं और हर कदम पर उनके व्यक्तिगत स्वार्थ समाप्त हो रहे थे। यहाँ तक कि मामलात ने एक खास नौबत पर जाकर एक अजीब पलटा खाया।

उनको एक अनोखे अहसास ने परेशान करना शुरू किया। दस साल गुजर गये थे और मैं औलाद से वंचित था। अपनी जवानी का बेहतरीन हिस्सा बड़ी बीवी के उन्मत्त प्रेम में व्यय कर

चुका था। अपनी खानदानी शान और गर्व को उनके पीछे मिट्टी में मिला चुका था और फिर अपनी डरावनी दशा की अनुभूति से त्रुटिपूर्ण था यानी अपने हाल में खुश और मगन था। उनकी उम्र साठ के पेटे में आ चुकी थी और मैं अभी तक तीस साल का भी नहीं था उनकी उम्र आखीर पर पहुँच चुकी थी और मेरी जवानी का विकास था। उनका अन्तःकरण उनको झिड़कता था। यद्यपि मुझको उनसे कभी कोई शिकायत तो बड़ी चीज है, शिकायत का खयाल तक नहीं हुआ लेकिन उनको महसूस हुआ कि उन्होंने मेरे साथ बड़ा जुल्म किया है। मेरी जवानी मिट्टी में मिलायी है। मैं यह बातें सुनता तो हँसने लगता; मगर उन पर आनन्दातिरेक के कारण आवेश छा जाता और वह फूट-फूट कर रोतीं। मुझसे क्षमा माँगती और तोबा करतीं। और अब उन्होंने स्वयं अपने पापों का प्रायश्चित करने का इरादा किया। मुझको तो नहीं, हाँ, उनको अहसास था कि मेरे औलाद नहीं है और उम्र का बेहतरीन हिस्सा गुजरा जाता है। खुद न समझूँ लेकिन वह तो समझती थीं कि आखिर इन्सान हूँ और जवान हूँ तथा मेरी जवानी बहुत मिट्टी में मिल चुकी है। अब इसकी हद होनी चाहिए। अतः उन्होंने अब मेरी शादी का मसला छेड़ा। पहले तो चर्चाएँ चलीं फिर गम्भीरता से इस निर्णय को कार्य रूप में परिणित करने का निश्चय हुआ। मैं किसी तरह राजी नहीं हुआ; मगर उन्होंने कुछ परवाह न की। मेरी भलाई वह मुझसे अधिक समझती थीं। न केवल आज़ाद बल्कि खुदमुख्तार क्या हाकिमे-वक्त भी वही थीं। मैं मना ही करता रहा और उन्होंने इधर-उधर मेरी शादी के लिए बातचीत करना भी शुरू कर दी। बल्कि इस उद्देश्य के लिए दौड़ना-घूमना खुद शुरू किया और खबर ले जाने वाले और कारिन्दे दौड़ाने शुरू कर दिए। मेरी शादी का इन्तजाम दरपेश था या कोई मजाक। जैसे वक्त के बादशाह के लिए लड़की छाँटी जाती है, सूरत-शक्ल, उम्र खान-

वान—गरज तमाम ही बातों पर नजर थी। मुझे कौन भला-मानस अपनी लड़की न दे देता। मगर लोगों को दुविधा थी तो शायद बड़ी बी की वजह से। लेकिन बड़ी मेहनत, खोज तथा दौड़-धूप के बाद उन्होंने हजारों में से एक लड़की छाँटी और उसकी शक्ल व सूरत का जो नक्शा मेरे सामने पेश किया तो मैं हँसने लगा। खुद बड़ी बी ने परियों की कहानियाँ सुनाई थीं। उन परियों में से एक यह भी थी और मैंने पूछा—'बड़ी बीवी, क्या वह तुमसे भी अधिक खूबसूरत है?' 'खाकसारी मुलाहिजा हो कि कहती हैं—दूर हटाओ, खाक पड़े मेरे वहाड़े पर।' मेरे मन्सूबे की खूबसूरती का अन्दाजा खुद लगा लीजिए कि खुद बड़ी बी का हुस्न उसके आगे खाक था।

किस्सा संक्षेप में, बड़ी बी ने मेरी शादी का बड़े ऊँचे पैमाने पर इन्तजाम किया। कहावत के अनुसार दिल खोलकर रुपया खर्च किया। शादी के इन्तजाम का कोई भाग ऐसा न था जिसमें खासियत न बरती गई हो। ऐसी कि मैं तो हैरान रह गया। जेवर, कपड़े और अन्य सामग्रियों के पीछे हैरान कर डाला। ऐसा मालूम था कि पूरा अरमान निकालने की फिक्र है। मैं चाहता था कि मामूली तरह विवाह हो जाय; मगर बड़ी बीवी आग्रह करती थीं कि दूल्हा बने बिना काम नहीं चलेगा और शादी धूम-धाम और बाजे-गाजे से होगी। बिल्कुल जैसे कुँआरे ब्याहने जा रहे हैं। सचमुच बड़ी बीवी मुझे दूल्हा बना देखना चाहती थीं और क्यों न हो कि दूल्हा तो आखिर मैं उनका भी था—वह भी केवल उनका जब तक कि शादी न हो जाय।

संक्षेप में, बड़े ठाट से बड़ी बी ने मेरी शादी रचाई। सब अरमान निकाल लिए और सचमुच एक रँगीली और रसीली चाँद-सी बहूनुमा सौत ब्याह लाई।

९

एक छोटा-सा, मगर खुला हुआ कमरा था जिसमें बढ़िया गलीचों का फर्श था। एक ओर मसहरी का तम्बू तना हुआ था। बीच में सुन्दर मेज और दो कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं तथा एक ओर मसनद लगी हुई थी। मसनद पर गाव तकिया से लगी हुई एक महकती हुई सुनहरी गठरी रक्खी हुई थी। यह छोटी बीवी या छोटी बी थी। पास ही बड़ी बीवी एक सुन्दर फूल की भाँति चटखी हुई थीं। यह था वह सीन जो मैंने कमरे में दाखिल होते ही देखा। बिजली की तेज रोशनी में बड़ी बीवी के चेहरे पर प्रसन्नता की कान्ति प्रतिच्छायित थी। मारे खुशी के सचमुच वह फूटी जा रही थीं।

हँस कर उन्होंने कहा—'देख तो दुलहिन को।'

मैंने कहा—'अब तक तुमको देखा है। भला क्या जचेंगी यह मेरी नजरों में। वह भी तुम्हारे सामने!'

बस क्या अरज करूँ मारे खुशी के बड़ी बीवी बाग-बाग हो गईं। बोली—'चल, खबरदार जो ऐसी बातें कीं।'

बड़ी बीवी ने छोटी बीवी का घूँघट उठाया। वह बेचारी और भी गुड़ी-मुड़ी हो गई, और भी झुक गई। बड़ी बीवी ने मुस्कराकर रहस्यवित् स्वर में अपने निर्वाचन की प्रशंसा चाही—'ले देख—देख कैसी है!'

मैंने कहा—'मैं इसे क्या देखूँ कैसे देखूँ यह तो नहीं मानती। बड़ी मुश्किल से काबू में आएगी। इसका मुँह तो ऊपर को उठाओ।'

और हम दोनों ने इस छोटी-सी खूबसूरत चीज को पकड़ कर

अच्छी तरह देखा। यद्यपि बड़ी बीवी इस जबरदस्ती मुँह दिखाई के विरुद्ध थीं; मगर मैंने कहा—'यह ऐसे नहीं मानेगी, देखने नहीं देती। तुम या तो इसके हाथ पकड़ो...'

लेकिन छोटी बीवी फिर हार गई। मैंने उसकी ठोड़ी को सहारा देकर उसका चाँद-सा चेहरा बिजली की रोशनी में धीरे से उठाया। जब उसका बस न चला तो उसने लाचार होकर अपनी आँखें बन्द कर लीं। बड़ी बीवी ने सिफारिश की, लेकिन मैंने गौर से उसके खूबसूरत और भोले चेहरे को देखा और झुककर उसका मुँह चूम लिया। अरे! सख्त गड़बड़ खड़ी हुई। बड़ी बीवी खुद उछल पड़ीं और स्वयं उसने घबरा कर अपना मुँह बिल्कुल छिपा लिया। बड़ी बीवी जोर से चीखीं और मुझे झटका। मैंने कहा—'तुम क्यों उछलती हो?' अब बड़ी बीवी की खाक समझ में न आया कि इस मौके पर हँसना चाहिए या नाराज होना चाहिए। मजबूर हँसने पर थीं और जरूरत नाराजगी की थी। मौका खूब था। वह चोट की है कि बड़ी बीवी कभी न भूलें। मैंने कहा—'तुम्हीं ने तो कहा था कि जब मैं मुँह दिखाऊँ...।'

अब मैं क्या अरज करूँ कि बड़ी बीवी कैसी सटपटाईं। बेहद खफा हुईं; खूब बड़बड़ाईं—'बेशरम, बेहया, ढीठ, नटखट'। सभी कह डाला। बड़े शरम की बात है, बड़े अफसोस की बात है। शरम न आई करते?' और फिर आखिरकार 'क्या सोचती होगी दिल में!'

मैंने कहा—'पूछ लो, बेचारी बैठी तो है' और यह कह कर मैंने सिफारिश भी की। बड़ी बीवी ने उसी बड़बड़ाने के सिलसिले को जाने की भूमिका ठहराया और चल दीं तथा दरवाजे के पास खड़ी होकर चुपके से मुझे इशारे से बुलाया। मैं उठकर गया। पाँच-मिनट तक हद से ज्यादा जरूरी बातें करती रहीं जिनमें से आधी मैंने सुनीं। मुझे गले से लगाया और चली गयीं। इस तरह आज से मेरी जिन्दगी का एक नया अध्याय शुरू हुआ।

मैंने अपनी छोटी बीवी को कैसा पाया ? बखुदा वह मजमून कि—'बड़ी बी तो बड़ी, छोटी सुबहान अल्ला।' एक बेहद दिलचस्प, सुन्दर गले वाली लड़की थी। गाने की बेहद शौकीन, अत्यन्त बनाव-शृंगार करने की और मुहब्बत तथा प्यार की बातों की हद से ज्यादा शौकीन, तबियत में चपलता और रंगीनी, तड़क-भड़क के कपड़े पहने हुए, एक रंग-बिरंगी खूबसूरत चमकीली तितली—जिसकी चमक-दमक और बाँकपन से मेरी आँखें चौंधिया गयीं और फिर मियाँ के गले का हार। नतीजा यह मैं तो सचमुच गोया घबरा गया। खुदा की पनाह ! मैं किस धोखे में था अब तक। मुहब्बत क्या चीज होती है ! हुस्न व खूबसूरती भी दुनिया में कोई चीज है। अरे औरत यह है ! बीवी ! कसम खुदा की, जवानी भी कोई चीज होती है ! गाना भी खूब चीज निकला। जवानी और बुढ़ापे में सचमुच फर्क होता है। इतने दिन तक वास्तव में बड़े धोखे में रहे। पहले निस्सन्देह हम जी रहे थे और अब ? अब तो सचमुच जिन्दा मालूम होते हैं। आँखें खुल गयीं। अब चारों तरफ नजर डालते हैं तो लाहौलविलाकूवत। वह मजमून है 'ऊँट रे ऊँट तेरी कल सीधी ?' कपड़े देखो तो, लत्ते देखो तो। जूता-टोपी, मेज-कुर्सी, फर्श-फरोश हर चीज साफ है, सुथरी है, अपने ढंग पर है। पर जिस चीज को देखो एक ठोस और मरियलपना है कि बरस रहा है। इस दशा में छोटी बी के दुपट्टे की चुनट है कि दिल में चुटकियाँ भरे लेती है और यहाँ अपनी हर चीज रंग व बू से खाली। रंगीन है तो उसमें रंग नहीं। सफेद है तो उसमें रंग नदारद। सफाई है तो चिकनापन नदारद। हर चीज में एक बुढ़ापा-सा है कि फटा पड़ता है—एक सड़ाँध है कि छायी हुई है।

और गजब पर गजब यह कि जिस हमउम्र, को देखो, चमकता मालूम होता है। एक भड़कीला फूल बना रहता है हमेशा से ! पर हमने कभी इस बात पर [illegible] नहीं किया। संक्षेप में, क्या अरज

किया जाय, इस छोटी बीवी ने तो आँखें खोल दीं। एक रोशनी थी कि स्वयं हर चीज ने चमकना शुरू कर दिया और देखते-ही-देखते हर चीज में रूप और निखार-सा पैदा होने लगा और जिन्दगी एक जड़ाऊ गुलदस्ता बन गई।

परिणाम इस क्रान्ति का स्पष्ट है।

पहले तो बड़ी बीवी ने सौत की वह खातिर की है कि कुछ न पूछिए। हर मामले में मेरा विरोध और उसकी तरफदारी। अब कुद-रती बात थी कि इसके बदले वह इस औचित्य से अपनी जान से प्यारी सौत सेवफा दारी और आज्ञा-पालन की आशावान थीं। वे सचाई पर थीं और न भी सही तो घर की गवर्नमेण्ट के चार्ज से हाथ खींच लेना असम्भव था। और जहाँ तक छोटी बीवी के आज्ञा-पालन व स्पर्धा का प्रश्न है उसे भी आपत्ति न थी, मगर इसका क्या इलाज कि सच्चाई फिर सच्चाई थी। मेरे पास कितना रुपया है ? पता नहीं। यह दो-तीन मकान जो खरीदे, बड़ी बीवी के नाम हैं और जेवर ? सब बड़ी बीवीकाहै ? कितना है ? कुछ मालूम नहीं। घरकाक्या खर्चहै ? हम क्या जानें। कितना बचता है और कहाँ जाता है ? हमें नहीं मालूम। कुछ मुकर्रर जेब-खर्च लेते हो ? कुछ नहीं। जरूरत पर मिल जाता है, कभी-कभी नहीं भी मिलता। जल कर बेचारी ने कहा—'फिर मुझसे शादी क्यों की ?' मैं क्या जवाब देता ? यही कि बड़ी बी ने मजबूर किया।

गरज यह तमाम बातें और फिर उम्र का फर्क। बड़ी बीवी की नेकनीयती और मुहब्बत में एतराज नहीं, लेकिन सच पूछिए तो बहुत जल्द मालूम हो गया कि एक-न-एक दिन अनबन जरूर हो जाएगी। बड़ी बीवी को एक प्रबन्धक और अधिक आयु वाली बीवी की तरह फूहड़पने से नफरत, अल्हड़पने से नफरत, फिजूलखर्ची से नफरत, लापरवाही से नफरत, सुस्ती व आलस्य से नफरत। बात-बात पर पहले प्रेम और विशुद्ध प्रेम से, फिर नम्रता से, फिर गम्भीरता से टोकना,

शुरू किया। एतराज करने शुरू किए और छोटी बीवी को अपनी मुह-ताजी अलग खल गई। हर बात में बड़ी बीवी की मुहताज। इस दशा में बदकिस्मती या खुशकिस्मती से छोटी बीवी को अपनी ताकत का पूरा अन्दाज था।

खान्दानी लिहाज से बड़ी बी कौन? आखिर को अछूत और यह खुदसैयदों की टक्कर की शेखानी। पहले मुझसे दबी-दबी जुबान से शिकायत हुई। फिर बड़बड़ाना शुरू किया। उधर बड़ी बीवी ने भी यही किया। नतीजा यह कि छः महीने गुजरने पाये थे कि एक रोज बुरी तरह चटक गईं और छोटी बी लड़लड़ा कर अपने घर।

अब मैं जो आया दफ्तर से तो यह रंग। चुप का चुप रह गया। हरफ भी न बोला। बड़ी बी तजुबेकार—ताड़ गईं कि मैं विकल हूँ। जाके सौत को मना लाईं। मगर अरज है कि अब की बार पहली लड़ाई से तेज तर हुई। यहाँ तक कि वह भयानक स्थिति हुई कि बड़ी बीवी सचमुच घुलने लगीं।

'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलेह राजऊन।'[1]

बड़ी बीवी की लाचारी दयनीय थी, मगर मेरी लाचारी थी उससे भी अधिक दयनीय। इस खूबसूरत और सरकस बीवी की जुबान आफत की थी। ताने गजब के, ऐसे कि बरछी की तरह दिल में उतर जाएँ। मैंने कहा—'नेकबख्त! बड़ी बीवी ने मेरे साथ मेहरबानियाँ कीं, सलूक किए, अहसान किए—लौंडी की तरह बनकर रहीं।'

चटख कर बोली—'बनकर क्या रही। थी ही वह लौंडी। वह बेगम किस दिन थी; मगर यह भी गलत मामा से बेगम तो बन गई, बड़ी बी से बड़ी बीवी बन गई और क्या लेगी—बड़े आए उसके तरफदार—कहा करो न फिर कल से बड़ी बी।'

संक्षेप में, छोटी बीवी के यह खयालात कि जो कुछ भी बड़ी बीवी

---

१. सत्य ईश्वर है और उसी की ओर हमें लौटना है।

ने मेरे साथ किया वह तो उनको करना ही चाहिए था। क्यों? इसलिए कि बुद्धू भिश्ती भी उनसे शादी नहीं करता। कहाँ मैं एक सैयद जादा! और यह अहसान मैंने किया कि उन्होंने? वास्तविकता नहीं कि ऐसी खड़ोस बुढ़ियों को नौ-उम्र कुँआरे सैयदजादे नहीं मिल सकते और लगा रक्खी है रट—मियाँ की खिदमत, खिदमत! बीवी मैं भी हूँ और खिदमत करना भी जानती हूँ, पर जो तुम यह चाहो कि तुम्हें बच्चों की तरह खिलाने लगूँ तो वह रहा मेरा घर। तुम एक छोड़ दो बुढ़िया और पकड़ लाओ।

और फिर बड़ी बीवी से एक दिन कहा—'न बाबा, हम जो तुम्हारी उम्रों के होते तो भला काहे को नाबालिग लड़कों को तकते फिरते···।'

फिर तरह-तरह के रिमार्क—'ऐसी खिदमत तो कोई बुढ़िया बीवी ही कर सकेगी। तुम्हें तो बुढ़िया से सम्बन्ध पड़ा है। तुम क्या जानो नौजवान औरत की कदर—अरे बुढ़िया, यह नीच जात की बुढ़िया! खुदा बचाए इनसे, इन मामाओं से! गजब खुदा की, यह उम्र और मामा बेगम बन गई।'

संक्षेप में, इधर तो यह हाल और उधर बड़ी बीवी का हाल न पूछिए। छोटी बीवी के होते हुए वह खुद भी मेरे साथ उठना-बैठना कब पसन्द करतीं? अल्ला-अल्ला! वह दिन भी थे कि हम दोनों भी कभी रात गए तक बैठे इधर-उधर की बातें करते रहते थे या अब यह हाल कि दिन भर बड़ी बी घर का काम-काज करतीं। झाडू देना, खाना पकाना, बर्तन माँजना, सारा काम वह बदस्तूर करतीं। कभी पहले भी उन्होंने नौकर न रक्खा। न रक्खा क्या, यह कहो कि कोई नौकरानी आयी भी तो वह अपने काम से इनको सन्तुष्ट न कर सकी। तात्पर्य यह है कि सारे घर का बेचारी काम करतीं। रात को अपनी कोठरी में अलग पड़ रहतीं और अपने लिए अब भी यह तफरीह की बात रह गयी थी कि मुझको हँसी-खुशी देखें।

लेकिन इतना होने पर भी उस वक्त तक उनकी बुजुर्गी और बादशाहत कायम रही जब तक स्याह व सफेद की वह मालिक रहीं; परन्तु वह दिन भी आ गया कि छोटी बीवी ने घर में अपना सिक्का चलाने का ऐलान किया। आधी तनख्वाह लेने का सवाल उठाया। बड़ी बीवी ने हथियार डाल दिए और आधी के बजाय सारी सौंप दी। मगर बहुत जल्दी छोटी बीवी को मालूम हो गया कि यह सिर-दर्द से अधिक कुछ नहीं। अतः घर के काम-धन्धों का 'पोर्ट फोलिओ' बड़ी बीवी के इस्तीफे के होतेहुए छोटी बीवी ने खुद ढील डालकर बड़ी चालाकी से बड़ी बी के सिर पटक दिया।

मेरी जानकारी में मामले कदाचित् इससे अधिक कड़ुवी सूरत जल्दी अख्तियार कर लेते, क्योंकि छोटी बीवी का रवैया फिर भी घाव करने वाला था और हद से ज्यादा बेरहम और बेदर्द सौत की तरह वह बड़ी बीवी को कोंच-कोच का खुश होती थीं मेरी नरम-गरम तंगी करने पर भी। लेकिन इसी दौरान में छोटी बीवी ने बड़ी बीवी को सचमुच खुश कर दिया। यानी यह कि खुदा ने हमें एक बेटा दिया। बड़ी बीवी की खुशी देखने के काबिल नहीं, बल्कि न देखने के काबिल हो गई। शायद खुद उनके औलाद होती तो वह इतनी खुश न होतीं, उनका बस न था कि माँ से बच्चा छीन लें। हद हो गई कि दूध पिलाने के अलावा बच्चे को माँ के पास एक मिनट न छोड़तीं। उसके लिये ऐसी बेताब रहती थीं कि मौका मिला नहीं और झटपट ले गयीं। एक नातजुर्बेकार माँ को उनसे बेहतर खादिमा और कौन मिल सकती थी। नतीजा इसका यह हुआ कि छोटी बीवी की वह बदजबानी और वह कटुता बड़ी बीवी के साथ जाती रही। वह भी उस दिन से कि एक रोज छोटी बीवी जो अपने मैके गयी तो वहाँ दो रोज के अन्दर-अन्दर बच्चे ने इतना दिक्र किया कि होश जाते रहे और मालूम हुआ कि कोई रिश्तेदार ऐसा नहीं है जो बड़ी बीवी की तरह बच्चे पर बरबाद हो जाय और उफ न करे; बल्कि दीवानगी के साथ बच्चे से

और भी ज्यादा मुहब्बत करे ।

साल भर बाद एक और लड़का हुआ और डेढ़ साल बाद एक लड़की हुई। इस दौरान में छोटी और बड़ी बीवी में एक खास दरजे तक बच्चों के सबब अच्छाइयों का रंग रहा। लड़ाई हुई और खूब हुई। मगर अब लड़ाई का आधार बच्चे थे। बच्चे माँ से अधिक बड़ी बीवी से हिले हुए थे और माँ के पास जब जाते पीटे जाते तथा इसी पर वह लड़ाई हुई कि खुदा की पनाह ! दरअसल बड़ी बीवी बच्चों को सचमुच बिगाड़े देती थीं। उनकी मर्जी थी कि चाहे कुछ हो जाय, बच्चों को अगर मारा-पीटा तो मुझसे बुरा कोई नहीं। मारना तो बड़ी चीज है, घूरने तक न दें। और बच्चे थे कि बदतमीज हुए चले जाते थे। नतीजा इसका अच्छा न निकला।

एक दिन बहुत मामूली-सी बात पर सख्त लड़ाई हुई। बात का बतंगड़ हो गया। बड़ी बी हमेशा सब्र से काम लेती थीं; लेकिन इस दफा वह भी फट पड़ीं। छोटी बीवी की बदजबानी का जवाब बद-जबानी से दिया। मारने-मरने पर तैयार हो गईं। ज्यादती बड़ी बीवी की जरूर थी। मुझे बड़ी बीवी से शिकायत थी कि बच्चों को बिगाड़े देती हैं और मैंने भी छोटी बीवी की तरफदारी की, और वह भी गुस्से में जरूरत से ज्यादा। नतीजा यह कि गरमा-गरमी में मेरे मुँह से भी कुछ अपशब्द निकल गये। जैसे कि—'आप बच्चों में मत दखल दीजिए। बच्चे हमारे हैं, आपके कुछ नहीं हैं। बख्शिये हमें और हमारे बच्चों को···ऐसा ही···नहीं देखी जाती आपसे सख्ती तो···'छोटी बीवी ने मेरा वाक्य पूरा किया कि 'रास्ता देखिए अपना।'

जंग की गरमी में कहने को तो मैं कह गया क्योंकि बड़ी बीवी ने मुझसे भी सब कुछ कह लिया था। मगर यह सच्चाई है कि उन्होंने जो कुछ भी कहा, अपनी बेलौस मुहब्बत के बल-बूते पर। मगर उनको यह नहीं मालूम था कि मैं भी नंगी तलवार हो जाऊँगा। सचाई यह है कि बड़ी बीवी अर्से से फाजिल मद और कबाब की सी

छूटी होकर रह गयी थीं। लेकिन मुझको यह कतई नहीं मालूम था कि जबान का जख्म इस कदर घातक होगा। दो-तीन दिन तो वह कुम्हलायी सी रहीं। छोटी बीवी ने उनसे सचमुच बच्चे छीन लिए। खूब-खूब उन्हें मारा। मैं चुप ही रहा; मगर अहसास मुझे जरूर हुआ कि बात हद से आगे जा रही है और बड़ी बीवी से मेल करने ही को था कि चौथे रोज उन्होंने खुदकशी कर ली। न मालूम कहाँ से बहुत-सी अफीम मँगाकर खाकर पड़ी रहीं। खबर हम लोगों को सुबह लगी जब मामला हाथ से जा चुका था। सब कुछ इलाज किए मगर बेकार। मरने से पहले वह सिर्फ इतना कह सकीं कि मैंने खुद अपना खात्मा किया है और अपना माल व मता सब बच्चों को देती हूँ और जेवर तथा बैंक का रुपया सब छोटी बीवी को। मुझसे बच्चे छीन लिए। मैं जिन्दा नहीं रह सकती।...खुदा की पनाह! मैंने छोटी बीवी की तरफ देखा और उसने मेरी तरफ। क्या यह सच्चाई नहीं थी कि हम दोनों इस नाहक खून के जिम्मेदार थे! घटना ठोस सचाई बनकर सामने मौजूद थी।

किस्से को इस प्रकार संक्षिप्त करता हूँ कि इस नाहक खून का परिशोध हमारे हाथ में न था। मैं और छोटी बीवी रोते-रोते दीवाने हो गए। हाय! इस नेक औरत की निस्पृहता! हमसे उसने अपना जेवर और रुपया क्या छिपा कर नहीं रक्खा। हमेशा यही कहा कि मेरा है। छोटी बीवी को हमेशा यही रोना रहा। पर यह न सोचा कि यह गरीब लेकर कहाँ जायगी।

इस नेक बीवी की हमारे हाथों मिट्टी खराब होना लिखी थी सो हुई; लेकिन नहीं हमारे घर की समृद्धि भी उसी के दम से थी और बड़ी बीवी के मरते ही आटे-दाल का भाव मालूम हो गया। मरने वाली का और मेरा साथ करीब बारह-तेरह बरस के रहा और अपनी बाकी जिन्दगी पर नजर डालते हुए मैं कह सकता हूँ कि मेरी उम्र का यह बेहतरीन जमाना गुजरा। बड़ी बीवी की आमद जिस

तरह मेरे लिए महान् परिवर्तन साथ लाई थी उसी तरह दुर्भाग्य या सौभाग्य से उनकी मौत भी मेरे लिए बड़ी शान की क्रान्ति साथ लाई—एक ऐसा परिवर्तन कि जिसकी रंगा-रंगी व बूकलमूरी[1] के साथ एक निराली कशमकश से पाला पड़ा।

१०

बड़ी बी की मृत्यु पर रंज ने एक नयी वर्तमान स्थिति पैदा करदी जो हमारे घरेलू काम-धन्धों में एक हल न होने वाली समस्या बनकर रह गयी। छोटी बीवी अव्वल तो नातजुर्बेकार—फिर एक-दम से जो सारा घर-बार और बच्चों को सँभालना पड़ा तो होश बिगड़ गए। बच्चे बड़ी बीवी से हिले-मिले थे और फिर छोटी बीवी से वैसे ही लाग-डाँट रखते थे। उधर सारे घर के काम-काज का इन्तजाम। नतीजा जाहिर है कि जब तक कोई मुलाजिमा मिले, ग़दर हो गया; लेकिन मर्जी के मुताबिक नौकरानी का मिलना एक वह अप्रत्याशित वस्तु है जिसका सही अन्दाजा लगाना मुश्किल है। किसी ने कहा है कि—

'मेरी जाँ चाहने वाला बड़ी मुश्किल से मिलता है।'

अरज़ है कि मुश्किल से या किसी तरह वह कमबख्त मिल तो जाता है। मुलाजिमा तो मिलती ही नहीं। जिसे देखो ताव-भाव बता रही है। आती हैं नौकरी करने और सीधे मुँह बात भी नहीं करतीं। हार कर झक मार कर रख भी लो तो वह मजमून कि काम न काज की, डेढ़ सेर अनाज की।' और फिर छोटी बीवी क्या

---

१. भाँति-भाँति के रंग।

कुछ न चाहती ? कोई काम करती है तो चोर है और कोई चोर नहीं तो रात को नहीं रह सकती। कोई काम करती है तो तनख्वाह एक ग्रेजुएट की दो। फिर तरह-तरह की शिकायतें ले लो। कोई नौकरों से जाकर अन्दर की बातें लगाती है, तो कोई बच्चों से नफ-रत करने वाली है। नतीजा यह कि मसले का हल नहीं मिलता था। विशेष कर इस कारण से कि लाख नौकरानी काम की हो पर हमारी नजरों में क्या जचें। हम तो बड़ी बीवी का काम देखे हुए थे। छोटी बीवी बेचारी मरने वाली की याद करती थी और सच-मुच आठ-आठ आँसू रोती थी। नतीजा इसका यह निकला कि हमेशा नौकरानियों की तलाश रहने लगी और जब देखो हमारा घर नौकरानी न होने के कारण उलटा पड़ा है। छोटी बीवी के ऐश व आराम में खलल पड़ गया। कहाँ तो यह आसानी कि बच्चे को उठा कर पीट दिया और ले गईं बड़ी बीवी। बीमार पड़े तो हमारी बला से और अच्छा रहे तो हमारी बला से। और अब हाल हुआ दूसरा। लिहाजा जरूरत और सख्त जरूरत महसूस हुई कि कोई ऐसी औरत मिल जावे जो हमारी होकर रहे। यदि बस चलता छोटी बीवी का तो फिर किसी बुढ़िया से मेरा निकाह करा दिया होता। दिन-रात मेरी जान खाती। मैं क्या करता ? उधर खुद उसने अपनी हर मिलने-जुलने वाली से नौकरानी की रट लगा दी और इधर मैंने हर मिलने-जुलने वाले से कह रक्खा कि खयाल रखियेगा, कोई औरत ऐसी मिले तो बेहतर है। लोगों ने 'बताया कि ऐसी औरत तो देहात से मिल सकेगी। अतः मैंने इसका भी खयाल रक्खा और जहाँ कहीं भी दौरे के सिलसिले में जाना होता सबसे कह देता। यह तलाश जारी ही थी और आए दिन की परेशानियों से छोटी बीवी की एक अजीब तजवीज पेश आई।

एक रोज का जिक्र है कि एक देहात का मिलने वाला जाति का दारोगा आया। राजपूताने में दारोगा के मानी हैं गुलाम यानी

बाँदी-जाये (उत्पन्न); जिनकी औरतें बतौर बाँदियों के अब भी रहती हैं। उसके साथ मैंने यह बड़ा अहसान किया था कि खास अपनी कोशिश से उसको एक मुकद्दमे से बचाया था, जिसमें उसको जेल हो जाती। और फिर अपने एक दोस्त से कहकर उसको नमक के महकमे में चपरासी करा दिया था और यह खास तरक्की के उम्मीदवार थे तथा इसीलिए मेरे पास आते थे। वास्तव में उन हजरत से मुलाकात इस तरह हुई थी कि यह घी की तिजारत करते थे और मुझे घी देते थे तथा 'निखालिस' घी के कारण मुकद्दमे में फँसे थे, ऐसे कि इस तिजारत ही से तोबा करने वाले हो गए। उनका नाम हीरा था।

इनसे जो मैंने अपनी मामा की जरूरत की चर्चा की और शर्तें सुनाईं—न ऐसी बूढ़ी हो कि काम न कर सके और न ऐसी जवान कि चुटकियाँ बजावे। घर को घर समझ कर रहे। कोई मरा-जीता न हो तो बेहतर है, आदि-आदि। तो इन्होंने सोच-समझ कर सिर हिलाया। बोले कि ऐसी औरत मिलना नामुमकिन है, मगर एक तजवीज है बशर्ते कि पसन्द हो। वह यह कि उनकी रिश्ते की एक भांजी है। कुमारी और सुन्दर चेहरे वाली—कोई पन्द्रह-सोलह वर्ष की—वह हाजिर है। गोली बनाकर रख लो। शर्त यह कि साल में दो जोड़े बना कर देने होंगे। पचास रुपये का चाँदी का जेवर देना होगा, दो सौ रुपये नकद उसकी माँ को देने होंगे। घर का सारा काम-काज करेगी, खाना पकायेगी, पानी भर कर लाएगी, काम न करे मारो चाहे पीटो। तनख्वाह कुछ नहीं; मगर शर्त का कागज लिखना पड़ेगा कि औलाद उससे हो तो गुजारे की हकदार होगी और जो बेखता अपना मर्जी से निकाल दिया तो दो सौ रुपये नकद रुखसती के देने पड़ेंगे।

'लाहौलविलाकूवत,' मैंने कहा—'अए दारोगा के बच्चे, तूने भी हमें कोई साहूकार या जागीरदार समझा है जो हम इस नाजायज

बेहूदगी को गवारा करेंगे?

लेकिन इस मूर्ख को देखिए—हँसता है, कहता है, 'इसमें हरज ही क्या है। बड़ी मुश्किल से इन हजरत को मैंने समझाया कि यह सख्त मना है और सख्त मजहबी और अखलाकी[1] जुर्म भी है कि बगैर शादी किये किसी औरत को डाल लें। हद से ज्यादा बुरे और नालायक लोग हैं जो बिना शादी औरत घर में डाल लेते हैं।'

इसका यह जवाब मिला कि अच्छा ऐसा ही है तो शादी कर लो और जो यह कहा कि हिन्दू जाति की किसी औरत से शादी नामुमकिन, तो कहा कि मुसलमान कर लो। चलिए, छुट्टी हुई। जाहिर है कि अब क्या एतराज की गुंजायश; मगर मैंने इनकार कर दिया—यह कह कर कि घरवाली इस बेहूदगी को पसन्द नहीं कर सकती। यह बात उसकी समझ में ही न आती कि ऐसा भी किसी तरह मुमकिन है कि घरवाली मरदों के इस किस्म के मामलों में दखल भी दे सकती है और न उसकी यह समझ में आया कि मेरी विवाहिता स्त्री होकर फिर वह किसी तरह भी तो बाहर फिर सकेगी और न गँवारू और हिन्दुआना लिबास पहिने पानी भरती फिरेगी। संक्षेप में, मैंने मना कर दिया और वह चला गया।

लेकिन अब घर में आकर जो यह लतीफा, छोटी बीवी को मैंने सुनाया तो वह चौंक कर बोलीं, 'सचमुच !' मैंने उसके चेहरे को देखा। यह सच्चाई थी कि वह इस तजवीज को पसन्द करती थी। मैंने ताज्जुब में आकर कहा—'होश में भी हो कि नहीं, क्या तुम पसन्द करोगी कि एक जवान लड़की से मैं शादी कर लूँ ?'

वह बोली, 'मुझे मंजूर है।'

मैंने पहले तो यकीन न किया, लेकिन नहीं—हकीकत यह है कि मार जूतियों के सीधा कर लूँगी। एक मुफ्त की खादिमा हाथ

---

१. नैतिक।

आएगी। पड़ी रहेगी घर में बाँदियों की तरह। सचमुच वह खूब जानती थी कि घर की मालकिन वह है। यह भी जानती थी कि मैं उसको कितना चाहता हूँ। माल और जायदाद, रुपया-पैसा सब उसी के नाम है और मेरी मुहब्बत का यह हाल है कि आँख के इशारे पर कठपुतली की तरह काम करता हूँ। मेरी और मेरे दिल व जान की वह मालिक थी। मेरे बच्चों की माँ और मेरी जान से ज्यादा प्यारी बीवी। मैं सचमुच उस पर जान छिड़कता था। अक्ल काम न करती थी कि इस दुनिया की सबसे प्यारी चीज ने मेरे ऊपर कैसा जादू कर रक्खा है। तीन बच्चों की माँ हो चुकी थी, लेकिन मेरे लिए वही नई-नवेली दुलिहन और प्रेम-प्यार का एक मधुर स्वप्न एवं आमोद-प्रमोद का खजाना थी जिसने मेरी जिन्दगी में न सिर्फ एक रूह फूँक दी थी, बल्कि मेरी जवानी के रागों को मस्ती से भरा हुआ और रंगीन बना दिया था और यह हकीकत थी कि केवल एक अच्छी नौकरानी न मिलने के सबब घरेलू काम-धंधों के झगड़ों और बच्चों के झगड़े-टंटों ने जिंदगी का मजा किरकिरा कर दिया था और इन तमाम बातों की जानकारी और अनुभूति ने छोटी बीवी को एक शक्ति प्रदान कर दी थी जिसके आधार पर उसको भरोसा था कि उसकी छोटी-सी बादशाहत में किसी की मजाल नहीं जो कोई राह से बे-राह हो जाय। उसका ख्याल भी सही था, लेकिन फिर भी मैंने मना कर दिया, बल्कि हँस कर झिड़क दिया कि पागल तो मत बनो। और जब उसने ज्यादा जिद की तो मैंने कहा कि बेहतर है अपने घर वालों और मिलने-जुलने वालों से राय ले लो। जब सबकी राय हुई तो फिर देखा जायगा। इस तरह उस समय तो यह बात मैंने आई-गई कर दी; लेकिन छोटी बी नहीं भूली। उसने जिससे भी चर्चा की उसीने कहा कि ऐसा मत करना। इसका जवाब उसने यह दिया कि तुम क्या जानो। मुझे तजुर्बा है। तुम लोगों को तजुर्बा नहीं और न तुम मेरे मियाँ को या उसके मिजाज

को समझ सकती हो। लोगों ने भी समझा कि यह हरकत इनके घर में कोई नई नहीं। भुगतने वाली जाने। नफा-नुकसान के पहलू हर बात में होंगे तो इसमें भी हैं और वह मंजूर भी हैं, लेकिन इनको निभाने और बरतने का बेशक किसी को तजुर्बा नहीं। सच तो कहती हूं कि मैं खूब निभाना जानती हूं। नतीजा यह कि या तो किसी ने अधिक जोर न दिया या छोटी बी ने ही इस कान सुन उस कान उड़ा दिया और इधर खादिमाओं की जरूरत से वैसे खोलती बन्द थी। अतः पड गई मेरे पीछे कि लाओ हीरा को और मैंने उसे बुलाया। खुद छोटी बी ने सारी बातें तफसील के साथ मालूम कीं। खुद तय किया कि जब हमारी मर्जी होगी, दो सौ रुपया देकर निकाल देंगे और उसे यकीन दिलाया कि मैं बड़े आराम से रक्खूंगी। घर के काम की तफसील बताई। उसका क्या था, वह पहले ही राजी हो गया। नतीजा यह हुआ कि हीरा को भेजा कि तुम जाकर लड़की की मां से बातचीत करो और मामला तय हो जाय तो हमें तार देना। हम यहां से रुपये लेकर आ जायेंगे।

अब छोटी बीबी ने यह तय किया कि साढ़े तीन सौ रुपए की शरई[१] शादी कर लेना। जब जी चाहेगा, तलाक़ दे देंगे। मैंने भी अब इस मसले पर गौर जो किया तो सरासर फायदा ही नजर आया। जरा गौर कीजिएगा, भला कहां ऐसी नौकरानी मिल सकती है बिना तनख्वाह की ? लिहाजा खूब सोच-समझ कर हीरा को रवाना कर दिया।

---

१. इस्लाम मजहब के नियमानुकूल।

११

तीसरे रोज हीरा का तार आया कि आ जाओ। छोटी बीवी ने बजाय दो सौ के नकद सिर्फ सौ रुपए तय किए थे। दरअसल खुद इसकी गरज मुझसे अटकी थी और अपनी तरक्की करानी थी। अतः वह दिल से चाहता था कि यह अजीब रिश्तेदारी कायम हो जाए और वह सौ रुपए पर ही मामला तय कर देने का वायदा करके गया था।

चलते वक्त छोटी बीवी ने बड़ी बीवी का जो कुछ औंधा-सीधा चाँदी का जेवर था, उसमें से कई चीजें छाँट कर दीं कि येचीजें साथ लेते जाओ। कोई पचास-साठ रुपए का जेवर साथ कर दिया।

मुझे दरअसल इलाका बीकानेर के एक उजड़े गाँव में जाना था जो बीकानेर रेलवे के एक निहायत ही छोटे से स्टेशन से कोई आठ-दस कोस के फासले पर था। मैंने अपनी रवानगी का तार दिया और उसी रोज चल खड़ा हुआ।

स्टेशन पर मुझे हीरा मिला। मेरे पास निहायत ही मुख्तसिर सामान था। एक ऊँट मौजूद था और उस पर बैठ कर हम दोनों रवाना हुए।

हमारा रास्ता वीरान और सुनसान रेगिस्तानी इलाके में होकर था। बिना पेड़-पौधे और घास का मैदान था और जहाँ तक नजर काम करती थी, रेत के टीले ही टीले नजर आते थे। टीले जो आज यहाँ हैं और सुबह की हवा सेशाम तक वहाँपहुँचे। न कोई सड़क बनकर कायम रह सकतीहै औरन रेल निकल सकती है। सिवाय ऊँट के कोई दूसरी सवारी काम नहीं देती। सूरज डूबने से पहलेहमगाँव

में पहुंच गए । गाँव काहे को—गिनी-चुनी झोंपड़ियों को [illegible] संक्षिप्त ढेर था और यह भी समझ में न आता था कि लोग यहाँ रहते आखिर किस खुशी में हैं । हर चहार तरफ है कि धूल उड़ रही है । दो-चार पुख्ता मकान क्या हैं, खंडहर कह लीजिए । एक अजीब तरकीब से पत्थर इस्तैमाल करके कोठरियाँ बनाई हैं । ऐसी कि शायद बारिश होतो सबपानीअन्दर आजाए । इसीकिस्म के एक मकान के आगे जाकर हमारा ऊँट बैठाया गया । एक लम्बा-चौड़ा अहाता था जिसकी दीवार काँटों की बाढ़ से बनाई गई थी और इस अहाते के अन्दर गोया मकान था । मुझे ले जाकर एक कोठरी में बैठाया गया जिसमें ऊँट के बालों की दरी बिछी हुई थी । इस पर एक सुर्ख रंग का खारुए का गद्दा बिछा हुआ था और मेरे पहुँचते ही एक बुड्ढी बेवा आई सख्त डरावना घूँघट निकाले । हाथों से मैंने जरूर अन्दाजा लगाया कि ये श्रीमती कतई चुड़ैल हैं । ये लड़की की माँ थीं और फौरन इन्होंने मेरी खातिरदारी करना शुरू किया । जिनकी तामील के सिलसिले में खुद लड़की पानी का लोटा लेकर आई । लोटा रखकर दोनों हाथ जोड़कर उसने मुझे सलाम किया । मुझे बताया कि साहब 'यह छोरी है ।' और मैंने अपनी अनोखी बीवी को अब सिर से पैर तक देखा । कोई सोलह वर्ष की उम्र, खिलता हुआ गेहुँआ रंग यानी देहाती गोरा रंग, नाक-नक्शा बेहद खूबसूरत और दिलकश, आँखें हद से ज्यादा चमकदार और बड़ी, बल्कि खूबसूरत, निहायत ही तन्दुरुस्त, छरहरा बदन, बीच से तनिक निकलता हुआ कद, निहायत ही भद्दे, मोटे और मैले कपड़े पहिने हुई थी । हाथों और पैरों में गिलट का जेवर, नंगे पैर, माथे पर पीतल का गोल लट्टू लटकाए जिसको यहाँ 'बोर' या 'बेर' कहते हैं । उसका नाम चमकी था ।

उसने लोटा पानी का लाकर रख दिया और चली गई । मैंने हाथ-मुंह धोया । शाम हो गई थी और मेरी तबीअत बेहद परेशान

थीं। मगर जी खुश हो गया जब चाय आई पोदीना औरदूसरे मसाले डाल कर—आधों आध का दूध पड़ी हुई चाय थी। लोटा गरम चाय का कपड़े से पकड़े और खाली थाली दूसरे हाथ में। गोया चाय की प्याली के एवज वह थाली थी। मैंने इत्मीनान से चाय पी। दो-एक और हजरत आए थे, वे झाँक-झूँक कर चले गए। दरअसल मैंने ही इशारा कर दिया था कि मैं एकान्त पसन्द करूँगा।

रात में काम की बातें हुईं। चमकी की माँ दरवाजे के पास बैठ गई और उसका भाई यानी हीरा मेरे पास बैठा था। मुझे बोलने की जरूरत नहीं पड़ी। सुना जरूरत से ज्यादा, मालूम हुआ कि चमकी बड़ी होशियार लड़की है। भैंसा और खेतों के काम से लेकर नाचना, गाना, ढोलक बजाना तक जानती है। तरकारियाँ पका सकती है, गोश्त तक पकाती है, कपड़े भी धो लेती है। मेहनत मशक्कत का काम दिन भर कर सकती है, बे उजर है, भोली है, बदजबान नहीं है, मासूम है, खेल-कूद से नफरत रखती है, पंखे बनाना जानती है, चारपाई बुन लेती है, सीने-पिरोने में बेजोड़ है। हर पंखे में गोट लगा कर उसमें रंग-बिरंगे गाढ़े के फन्दे अजीब सफाई से टाँकती है। मैंने नमूने देखे, पसन्द किए। मेरे बारे में उसकी माँ को बताया गया कि बहुत बड़ा रईस हूँ और छोटी बी के तारीफ के काबिल बरताव का इस कदर बढ़ा-चढ़ा कर जिक्र किया गया कि बयान से बाहर है। बताया गया कि कतई वह मरखनी नहीं हैं। बड़े आराम से रक्खेंगी। बच्चों की तारीफ के काबिल खासियतें बयान की गईं कि रोने से बेचारे कतई नावाकिफ और मचलने से अनजान हैं। चमकी को कतई हैरान नहीं करेंगे। खाने के बारे में बतलाया गया कि रोजाना दोनों वक्त गोश्त पकता है। घी के खर्च का हाल वह खुद जानते ही थे, फौरन तस्दीक की। फिर यह तय हो गया कि जब चमकी को देखने आओगी, किराया मिलेगा और चमकी खुद आती-जाती रहेगी। फिर सच पूछिए तो खुद चमकी के

मामू यानी माँ का चचाजाद भाई हीरा मेरा जामिन जुम्मेदार था। डर काहे का, घर का मामला था। लिहाजा तय हो गया कि कल सुबह फौरन दौड़कर स्टाम्प मँगा लिया जाय और इसी ऊँट पर तह-सील का वस्तावेजों की अरजी लिखने वाला आ जाए, दस्तावेज लिख जाय और चमकी को लेकर मैं चल रहा हूँ।

दूसरे दिन आदमी तहसील गया और दो स्टाम्प ले आए। एक पर मैंने लिख दिया कि मैं तुम्हारी लड़की चमकी को अपनी औरत बना कर रक्खूँगा, कोई तकलीफ नहीं दूँगा, पचास का जेवर अभी देता हूँ जो वापिस न लूँगा। साल में चार जोड़े बनवाऊँगा। चमकी घर के सारे काम-काज करेगी। बे-खता न मारी जायगी। ठीक चाल-चलन से रहे। औलाद जो होगी गुजारा पायगी और उसकी परवरिश मेरे जुम्मे होगी। चमकी को माँ के रिश्तेदारों से मिलने से नहीं रोकूँगा। साल में एक बार का या दो बार का चमकी की माँ को आने-जाने का किराया दूँगा। चमकी को माँ के घर साल में एक-दो बार भिजवा दूँगा और कोई रोक-टोक न करूँगा। अगर निकालूँगा तो दो सौ रुपये चमकी को रुखसती के दूँगा। बेखता नहीं निकालूँगा। तहजीब सिखाने के लिए मोटी लकड़ी से नहीं मारूँगा, आदि-आदि।

दूसरा वस्तावेज मैंने यह सोच कर कि आगे कोई झगड़ा खड़ा न हो, चमकी की माँ से लिखवा लिया कि मैं अपनी लड़की को राजी-खुशी से देती हूँ। सौ रुपये का चमकी के सबब कर्जा था जो रकम मैंने तुमसे ली। चमकी तुम्हारी होकर रहेगी और आज से तुम्हारी औरत है। तुमने चमकी को जेवर वगैरह भी दिया और इसको तुम अपनी औरत बना कर रक्खो। तुमको सब अधिकार हैं। और तुमसे जो इकरारनामा लिखाया है, उसकी शर्तों की तुमको पाबन्दी करनी होगी। चमकी की सगी माँ और सास वली हूँ तथा मुख्तार कुल हूँ एवं तुमको चमकी को सौंप दिया है और तुम इसके

खाविन्द व मुख्तार हो।

दस्तावेजात अरजी लिखने वाले के रजिस्टर में बाकायदा चढ़वा दिए गए। दोनों फरीकों के गवाहों के सामने दस्तखत हो गए और गवाहों के सामने मैंने रुपया और जेवर सँभलवा दिया तथा माँ ने चमकी को सबके सामने मुझे सौंप दिया। इस काम से तीसरे पहर फुरसत हुई। अब यह तय हुआ कि कल मैं चमकी को लेकर चला जाऊँगा।

लेकिन रात में एक और ही मामला पेश आया।

१२

इस गाँव से कुछ फासले पर रेगिस्तान के किनारे पहाड़ियों का सिलसिला था। उसके बीच में मीलों बंजर जमीन चली गई जहाँ दो-चार झोंपड़े भीलों के थे जो अपनी भेड़ों और मवेशियों के गल्ले रखते थे और यहीं चमकी का कोई रिश्तेदार था। उसको कदाचित् इस मामले की खबर न थी। तीसरे पहर को जब मामले तय हो गये तो गाँव का नाई आया और कुछ दारू के लिए यानी शराब-कबाब के लिए इनाम के तौर पर माँगा। मैंने दो रुपए दे दिए। उसने दो-चार नीच जाति बानबियों यानी चमारों को सूचना दे दी और वे भी आए। मैंने दो रुपए उनको भी दे दिए और शायद उनमें से किसी ने जाकर चमकी के जबरदस्ती के चचा को खबर कर दी कि तुम्हारी भावज का भाई हीरा आया हुआ है जिसने चमकी को किसी के हाथ बेच दिया है। अतः यह चमकी का चचा-नुमा मूजी दौड़ा।

शाम को जब मैं जंगल की तरफ से वापस आ रहा था कि

मैंने देखा कि एक आदमी हीरा के साथ टहलता मेरी तरफ आ रहा है। हीरा से दरअसल उसने यह कहा था कि तुमने खुद रकम लेकर अपनी बहिन को उल्लू बना कर लड़की दे दी। अतः कुछ रुपया मुझको भी दिलवाओ। हीरा ने सच्चाई बताई कि एक कौड़ी मैंने नहीं ली है। जो दिया है वह बहिन को दिया है। उसने यकीन न किया और यह मामला मेरे सामने हीरा ने पेश किया। अब मुझे एक और हकीकत मालूम हुई। वह यह कि चमकी की मँगनी अर्सा हुआ किसी और जगह तय हो चुकी थी। पाँच सौ रुपए लड़के वालों से ठहरे थे। पाँच सौ रुपयों में से दो सौ रुपए वह दे चुके थे और अब उनके पास कौड़ी न थी। न वे बकाया रुपया देते थे और न चमकी की माँ लड़की देती थी। चालीस-पचास रुपये का जेवर भी चमकी की माँ लेकर खुर्द-बुर्द कर चुकी थी। अब सवाल यह था कि अगर चमकी के चचा ने उनको खबर करवा दी तो बड़ा झगड़ा उठ खड़ा होगा। रह गई यह बात कि चमकी के चचा को कुछ देना चाहिए या नहीं; तो साफ जाहिर है कि कायदे से कौड़ी भी न देनी चाहिए। बतौर रिश्वत के दिया जाय तो और बात है। अन्देशा यह था कि कहीं उन लोगों को खबर न कर दे। जो सुन पायेंगे तो रेगिस्तानी सरहद पर रहने वाले, लूट-मार के आदी, पेशेवर डाकू झपट के चमकी को कहीं ले न जाँय। मैं चमकी के चचा से मिला। मैं क्या जवाब देता सिवाय इसके कि मेरे पास रुपया नहीं है। घर पर आओ तो दे सकता हूँ। दूसरी सूरत में रुक्का लिखवाओ। इस पर भला वह काहे को राजी होता। यह भी अच्छा ही हुआ कि मैंने उसको कुछ नहीं दिय। क्योंकि हकीकत यह है सचमुच एक तेज रफ्तार ऊँट पर एक आदमी को सूचना देने के लिये भेज भी चुका था और यह बात मुझे बाद में मालूम हुई। चमकी का चचा बिना अपना मतलब हासिल किए वापस चला गया।

रात को मुझे ख्याल हुआ, खुदा जानता है खुद चमकी भी राजी

है या नहीं। अतः मैंने हीरा से पूछा। मालूम हुआ कि न सिर्फ वह राजी है, बल्कि अपने हिसाबों वह लंदन में ब्याही गई है। बहुत पहले से शहर में रहने और ठाट-बाट से रहने तथा ऐश व आराम से जिंदगी बिताने का नक्शा उसकी आँखों के सामने है। न मालूम क्या-क्या प्रोग्राम नजर में हैं और बतौर तमाम हुज्जत मुझसे कहा कि मैं खुद तस्दीक कर लूँ। मैंने सोच-समझ कर मुनासिब समझा। चमकी को बुलवाया। मैं चारपाई पर लेटा हुआ था। पास ही चमकी आकर बैठ गई। हीरा को मैंने इशारा कर दिया और वह उठ गया तथा मैंने उससे बातें कीं। खूब अच्छी तरह ठोंक बजा कर पूछा और हर तरह राजी पाया, बल्कि जरूरत से ज्यादा राजी और साबित कदम पाया। साथ ही मैंने उसको अच्छी तरह यकीन दिलाया कि बड़े आराम से रक्खूँगा और कभी तकलीफ न होगी। और उसकी आयन्दा जिन्दगी के शानदार पहलुओं को गिनाया। दरअसल उसने कभी कोई शहर तक न देखा था। उम्र में सिर्फ दो बार रेल पर बैठी थी और रेगिस्तान की चहारदीवारी से निकलने की बेहद शौकीन थी।

रात की बात है कि मैं सो गया था। कोई आधी रात आई होगी कि हीरा ने मुझे जगाया। विश्वस्त सूत्र से उसको ज्ञात हुआ था कि चमकी के चचा ने मुझसे कल मिलने से पूर्व ही उन लोगों को सूचना देने आदमी भेज दिया जो चमकी के दावेदार थे। वे लोग कौन थे ? खुद वह शख्स जो चमकी का दावेदार था, दो बार की डकैती में सजा-याफ्ता और दूसरे रिश्तेदार मवेशी चुराने और इसी किस्म के धंधे करने के आदी थे। गरज अन्देशा था कि यह कोई अजीब बात नहीं कि राह ही में यहाँ आ पहुँचें और नतीजा यह हो कि देहात से रवानगी ही मुश्किल हो जाय। मैं यह खबर सुन कर सख्त परेशान हो गया। सवाल यह था कि क्या करना चाहिए। बहुत सोच-विचार के बाद यह तय हुआ कि समय से पहले रात ही

में निकल जाना चाहिए और वह भी निहायत खामोशी के साथ (रुखसती का रोना मुल्तवी करके) रात के चार बजे हम दो ऊँटों पर रवाना हुए। एक ऊँट पर मैंने चमकी को आगे बैठाया और खुद पीछे के आसन पर बैठा। दूसरे ऊँट पर एक ऊँट वाला और हीरा बैठा। उनका ऊँट आगे और हमारा पीछे तथा रात ही में हम तारों की छाँव में चल पड़े। सीधे रास्ते को बायीं तरफ छोड़ा और कुछ रास्ता काट कर पहाड़ी के दामन के सहारे-सहारे तेज रफ्तार से ऊँट छोड़ दिए।

रास्ते का अव्वल हिस्सा अच्छी तरह कटा; लेकिन हमको नहीं मालूम था कि दुश्मन हमारी तलाश में पीछा किए चले आते हैं। यहाँ पीछा करने का तरीका भी खूब है। पीछे-पीछे नहीं जाते, बल्कि रास्ता छोड़कर आगे निकल कर सामने या बाजू से पकड़ते हैं। दो ऊँटों पर चार आदमी तलवारों से हथियारबन्द होकर हमारी तलाश में रवाना हुए। सीधे रास्ते पर पड़कर उन्होंने अपने ऊँट छोड़ दिए। हमसे आगे निकल कर रास्ता काटा और जब घेरा बना कर देखा कि हमारे ऊँटों के निशान नहीं मिले तो सीधे हमारी ओर झुक पड़े। नतीजा यह कि पौ फटने से पहले हीरा ने बायीं ओर फासले से देख लिया कि पीछा करने वाले आते हैं, क्योंकि पीछा करने के रेगिस्तानी उसूल के मुताबिक इस दिशा से उनकी आने की उम्मेद थी। बहुत जल्द ऊँटों को हमने साफ देख लिया। बेहतर वक्त हमने मशवरे में गवाया। नतीजा यह हुआ कि अंधियारी के भूत की तरह रेत उछालते ऊँट हमारे करीब पहुँचे। ऊँट वालों ने नारा मार कर ललकारा। मैंने जीन से लटकी हुई सिरोही सूंत ली। रकाब पर खड़े होकर एक बार तो देखा। अब हीरा की बुजदिली देखिए कि पुकारता है कि ठहर जाओ। पलक झपकते में एक ऊँट उसकी आड़ में आ गया। मैं क्या करता, इस तरह तो चमकी को छोड़ने वाला न था। ऊँट मेरा मजबूत था। मैंने अल्ला का नाम लेकर

नकेल उसकी दाहिनी तरफ मोड़ी और और पूरी रफ्तार से ऊँट मैदान में छोड़ दिया। सीधा पहाड़ियों के सिलसिले की तरफ और दुश्मन हमारे पीछे। सौभाग्य समझिये कि सिर्फ एक ऊँट ने हमारा पीछा किया। दूसरा हीरा को घेरने में रहा। मुझको फासला काफी मिल गया था और मैं ऊँट को या मुझको ऊँट सचमुच ले उड़ा।

कोई आध घण्टे की दौड़-धूप के बाद आगे का रास्ता बन्द नजर आया; क्योंकि जमीन बहुत सख्त और पहाड़ी आ रही थी और सुबह हो रही थी। कोई तीन फर्लांग का हमारा पीछा करने वालों से फासला रह गया था कि मैंने ऊँट का रुख सीधा पहाड़ी की तरफ कर दिया। सिवाय इसके कोई चारा ही न था।

जिन लोगों ने अरावली की पहाड़ियाँ देखी हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि अगर मौका मिल जाये तो इन पहाड़ियों में आदमी ऐसा छिप जाय कि ढूंढ़े से न मिले। एक जगह दर्रे की सूरत बनती थी। मैंने इसी तरफ को रुख किया। दूसरा कोई उपाय न था। ऊँट को बैठा कर झट से मैंने चमकी को उतारा और हम दोनों सीधे पहाड़ी के ढलवाँ रास्ते पर चढ़ गए। यह खूब हुआ कि ऊँट छूटते ही भाग गया। वरना दुश्मन मालूम कर लेते कि हम कहाँ उतरे हैं। अब मैंने एक झाड़ी में से देखा कि हमारा पीछा करने वाले सामने से तेजी से निकले चले गए। मैंने चमकी का हाथ पकड़ा और उसको लेकर जल्द-से-जल्द आड़ में रूपोश हो गया। थोड़ी ही दूर जाकर पीछा करने वालों ने हमारा खाली ऊँट देख लिया और मैंने पहाड़ी की ऊँचाई पर से देखा कि वे चारों तरफ आश्चर्य-चकित होकर देख रहे हैं—यह अन्दाजा लगाने के लिए कि हम किस जगह उतरे हैं।

लेकिन इन जंगली लोगों से भला हमारी क्या चलती। मगर जिधर उन्होंने अन्दाजा लगाया वहाँ से हम दूर थे। मैंने देखा कि पहले तो दौड़कर उन्होंने मेरा ऊँट पकड़ा और उसकी तलाशी ली फिर दोनों ऊँटों को लेकर पहाड़ी के दामन में आए। एक तरफ जाने

का रास्ता ऊपर की तरफ था और यह रास्ता पहाड़ के उस हिस्से की तरफ जाता था जहाँ छिपने के लिए बेहतरीन ग़ार थे। अतः ये मूर्ख यह समझे कि हम उस तरफ गए होंगे हालाँकि मैं तो घबराहट में आँख मीच कर अन्धाधुन्ध चढ़ गया था और मुझको क्या मालूम कि उस जगह कौन-सा मुकाम छिपने के लिए उम्दा है।

सुबह हो चुकी थी और सूरज निकल रहा था। उन दोनों मूजियों ने ऊँट एक झाड़ी से बाँधे और तेजी से चढ़ने लगे। उनका रास्ता आसान और साफ था तथा मैंने देखा कि वे सीधे उसी तरफ चले जिधर छिपने के मुकामात दिखाई दे रहे थे। और मैं इधर चमकी का हाथ पकड़े सिर्फ एक पत्थर की आड़ में बैठा था। नजर मेरी उनकी तरफ लगी थी। पलक झपकते में बड़े-बड़े पत्थरों की आड़ में वे ओझल हो गए। कोई पन्द्रह मिनट के बाद मैंने फिर जो उनको देखा तो एक बुलंदतर मुकाम पर थे। आपस में सलाह की और हाथ का इशारा एक ने दूसरे को किया जिससे मालूम हुआ कि फलाँ दिशा अख्तियार करेंगे। फौरन फिर नजरों से ओझल हो गए।

अब मैं इन पहाड़ियों की बनावट भी बताना चाहता हूँ। सुर्ख रंग के पहाड़ों का सिलसिला चला गया था। सिवाय चन्द बेशर्म काँटेदार झाड़ियों के या इक्का-दुक्का दूसरे इसी किस्म के सख्तजान पेड़ों के, हरियाली का नाम न था। जगह-जगह ऊँचे-नीचे और पथरीले रास्ते थे, सैकड़ों और हजारों मन के बड़े-बड़े पत्थर जगह-जगह पड़े थे, चारों तरफ से ऊँचे-नीचे रास्ते नीचे जाते थे। छोटे-बड़े पत्थर लाखों-करोड़ों मन सारे में बिखरे हुए थे। जहाँ हम खड़े हुए थे उसकी पुश्त की तरफ थोड़ी दूर हट कर फिर एक सख्त ऊँचा-नीचा खतरनाक ढाल था जो पहाड़ी की गोया दूसरी मंजिल तक चला गया था। मैं नजर जमाए उसी तरफ देख रहा था जिस तरफ ये दोनों गायब हुए थे। एकदम से दोनों एक करीब की पहाड़ी पर नजर आए। वहाँ से जो उन्होंने रास्ता अख्तियार किया है उससे मुझे

अन्देशा हुआ कि कहीं ये हमारी पीठ की तरफ न आ निकलें। और फिर चोटी पर अगर चढ़ कर देखा तो हम किसी तरह अपने को न छिपा सकेंगे। इस आशंका से मुझे सख्त बेचैनी हुई और मैं इसी फिक्र में था कि क्या करूँ और नजर गड़ाए उसी जगह घूर रहा था जहाँ कि मेरे अन्दाजे के मुताबिक ये निकलने वाले थे कि एकदम से मैं चौंक पड़ा। वे दोनों मूँजी तो हमारे सिरों पर थे। चोटी पर पहुँचे और हमें देखते ही एकदम से उनके मुँह से एक चीख निकली। मैं खुद घबरा गया। भौचक्का होकर मैंने इधर-उधर देखा। अब ये दोनों सामने से उतर कर आवेंगे। सामने ऊँट बँधे थे कोई दो-ढाई फर्लांग के फासले पर। सिर्फ इसी में हमारी बचत थी कि उनसे पहले ऊँटों के पास पहुँच जाएँ। अगर कोशिश की जाय तो यह नामुमकिन न था। फिर दूसरा चारा ही क्या था। अतः उधर वे दौड़े हैं हमारी तरफ, इधर हम उतरे नीचे। चढ़ने की अपेक्षा उतरना कठिन होता है। वे ठहरे जंगली और मैं इसका आदी नहीं, मगर जिस तरह बन पड़ा भागा। वह भी इस तेजी से कि जगह-ब-जगह गिरते-गिरते बचा। लेकिन वे दोनों इस तेजी से आ रहे थे कि बयान नहीं कर सकता और फिर हमारी नीयत से वह जानकार हो गए तथा हमारी सीध छोड़कर उन्होंने भी वह रास्ता पकड़ा कि ऊँटों के पास पहले पहुँच जाएँ। अब गोया एक दौड़ थी। हम दोनों उनसे पहले पहाड़ से नीचे आ गए और पूरे एक फर्लांग का फासला हमें मिल गया। वाह री जंगली लड़की! दौड़ने में मुझसे भी चार कदम आगे थी ऐसा अंधाधुंध शायद कभी न दौड़ा हूँगा। रास्ता मीलों का बन गया। जिस तरह बन पड़ा, तय किया। झट से मैंने अपना ऊँट खोला। अब बिठाता हूँ पाजी को तो बलबलाता है। कमबख्त बैठता नहीं और ले रहा है चकफेरियाँ। और दुश्मन हैं कि बुखार की तरह चढ़ते चले आ रहे हैं। या इलाही, क्या करूँ। लेकिन ज्यों-त्यों ठीक कर ऊँट को बिठाया और कोई सौ गज का फासला रह गया

मेरा ऊँट पहुँचते ही ये लोग चारों तरफ से आ गए। औरों को तो मैं जानता नहीं था; लेकिन चमकी के नाम मात्र के रिश्ते के चचा को मैंने पहिचान लिया। अब मैंने गलती महसूस की कि मैंने कतई गौर नहीं किया। मुझको पहिले से मालूम होना चाहिए था कि दुश्मन स्टेशन पर होंगे। तनिक विचार न किया। वह भी दरअसल इस वजह से कि मुझको नहीं मालूम था कि स्टेशन-मास्टर आदि-आदि सब मिल जाएँगे। मेरे उतरते ही सवालात किए गए। मैंने सच्चा किस्सा बयान करके दस्तावेज दिखाया जिसका जवाब चमकी के चचा ने यह दिया कि यह झूठ और गलत है। और यह भी कि माँ को मेरे होते हुए कोई अख्तियार नहीं जो लड़की को इस तरह किसी को दे दे। यह उजर कि लड़की नाबालिग नहीं है और यह चचा नहीं है, तय नहीं हो सकता। मतलब यह कि फिलहाल मुझको बतलाया गया कि पुलिस थाने चलना पड़ेगा। बल्कि पहली गाड़ी से खुद थानेदार साहब आते होंगे। यह सुनते ही मैं सख्त घबराया। या अल्ला! मैं क्या करूँ। जो पुलिस ने हिरासत में ले लिया तो कोई जामिन भी न मिलेगा। यह तो तय है कि मैं अदालत में पहुँचते ही छूट जाऊँगा। बल्कि अजब नहीं अगर इन्साफ करें तो मैं पुलिस से ही छूट जाऊँगा, लेकिन सवाल यह है कि पुलिस वाले भी चमकी की माँ, हीरा और दूसरे लोगों के बयानात लेने से पूर्व तो मुझे छोड़ने से रहे। और जो इनके जी में आई तो फरारी का मुकद्दमा कायम करके मुझे हिरासत में लेकर अपनी जाँच धीरे-धीरे महीने भर तक जारी रक्खेंगे। सवाल था कि ऐसे मौके पर मुझे क्या करना चाहिए। क्या यह किसी तरह मुमकिन था कि मैं चमकी को छोड़कर भाग जाऊँ? स्टेशन-मास्टर साहब बयानात को सही मान कह रहे थे कि—'जी हाँ, मगर तहकीकात करना भी तो जरूरी है।' बाहरी तौर पर मुझसे हमदर्दी कर रहे थे और मैं जानता था कि ये मक्कारी कर रहे हैं। मगर मैंने भाग जाने का कोई इरादा जाहिर न किया, दुश्मन के दूसरे साथियों

के बारे में जानकारी न होना जाहिर किया; मगर यह भी अन्देशा था कि वे भी पैदल रिगड़ते हुए आते होंगे। चमकी को स्टेशन-मास्टर साहब ने अपने कमरे में बिठा दिया; क्योंकि मैं किसी प्रकार गवारा न करता था कि वह दुश्मनों के अधिकार में जावे और खुद स्टेशन-मास्टर साहब से बातों में लग गया और बात थी इस किस्म की कि सबको अन्दाजा लग जाय कि चमकी को छोड़ कर मैं किसी तरह भी न जाऊँगा। चाहे कुछ भी हो जाय। मैंने कह दिया था कि मैं बड़ी से बड़ी अदालत तक लड़ूँगा। मैंने देखा कि सब मेरे जोश व खरोश[1] से अन्दाजा लगा चुके हैं कि चमकी को छोड़कर मैं नहीं जाऊँगा और किसी को मेरे भाग जाने का शुबा तक नहीं रहा। मैंने इधर-उधर टहलना शुरू किया और देखा कि किसी को शुबा नहीं है। बाहर निकला तो कान्स्टेबुल ने मेरे ऊपर नजर रक्खी। यह एक छोटी सी पुलिस-चौकी का कान्स्टेबुल था। थोड़ी देर में इसका भी शुबा जाता रहा; क्योंकि मैं कई बार आया और गया और इधर-उधर घूमा। एकदम से मैंने देखा कि है मौका। लपक कर मैं अपने ऊँट के पास पहुँचा और पलक झपकते में बैठ कर हवा हो गया। एक शोर मचा और मैंने देखा कि लोग मेरा पीछा करने की नीयत से ऊँटों की तरफ दौड़े; मगर मैं निकल चुका था और मुझे भागने के लिए काफी फासला मिल गया। लेकिन पीछा करने वाले भी बला के थे। ऊँट की रफ्तार ऐसी रक्खी थी कि पीछा करने वाले मेरी गर्द को भी न पा सकें। और मैं रेल की पटरी के सहारे-सहारे भागा था, क्योंकि मुझे मालूम था कि अगर मैंने ठीक रफ्तार कायम रक्खी तो मैं किसी-न-किसी तरह बीकानेर की सरहद पार कर जाऊँगा। मेरी साँडनी बड़े दम-खम की थी और मैं इस रफ्तार से चलता था कि आध घण्टा गुजर गया और मैंने पीछा करने वालों को बार-बार

---

१. शोर।

मुड़कर देखा, मगर नजर न आए। यहाँ तक कि मुझे सन्देह हुआ कि वापस लौट गए। मुझे सख्त प्यास लग रही थी और काठी में बीकानेरी बावला (छागल) बँधा हुआ था। मैंने ऊँट रोका। गिलास उठाया ही था कि क्या देखता हूँ कि फासले पर मेरा पीछा करने वालों का ऊँट नजर आया। रेगिस्तान के खास हथियार का खयाल आया, फौरन मैंने रेत से गिलास भर लिया। जेब में गिलास रखकर झट से बैठ कर पूरी तेजी से रवाना हो गया और इसी हवा की रफ्तारी में जंगली आदमी से मैंने हाथ उठा कर राह पूछी। उसने सिर हिला कर बताया, जिससे मुझे तस्दीक हो गई कि मैं ठीक सरहद की तरफ जा रहा हूँ। मैंने मुड़कर अब पीछा करने वालों को देखा। दो आदमी थे। सवाल यह था कि अगर मैं न भागूँ तो वे मेरा क्या कर सकते थे। गिरफ्तार करने का सवाल ही न था। फिर भागने की भी हद होती है। हमला करने से रहे; क्योंकि एक आदमी वही कान्स्टेबुल था। रह गया दूसरा, तो सवाल यह था कि तलवार मेरे हाथ में है। मैं कौन और वह कौन ? लाहौलबिलाकूवत, एक सैयदजादा और एक गुलाम उनका पीछा करे। फौरन मैंने साँड़नी को रोक कर नकेल खींच कर घुमाया। पलक झपकते में हम दोनों आमने-सामने थे। वह ऊँट करीब लाने लगा तो मैंने तलवार म्यान से सूँत कर कहा—'खबरदार, जरा अलग रहना। बोलो, क्या चाहते हो। मैंने तुम्हारी लड़की को छोड़ दिया। अब क्या चाहते हो ?

इसके जवाब में वह हजरत अपना ऊँट बिदका कर बगल में आए मैंने सोचा कि ये यों न मानेंगे। अपने ऊँट को तनिक पीछे दबा कर मैंने एकदम से नकेल खींचकर घुमाया जैसे रवाना हो गया और एकदम से झोंक के साथ उन्होंने अपना ऊँट बढ़ाया कि तभी मैंने रेत-भरा वह गिलास जेब से निकाल जरा नकेल को सहारा देकर मारा रेत का 'छपका' कान्स्टेबुल के मुँह पर लगा तो आँखें पट हो गईं। आँख, नाक और मुँह सब ही रेत और धूल में अँट गए, और अब मैंने

सोचा कि है मौका। लिहाजा तलवार सूंत कर मैं आया उनके बाएँ। दरोगा भी आँखें स्थिर किए गालियाँ दे रहा था। मैंने फिर कहा—

'अगर तुम लौट जाओ तो बेहतर है···मैं तुमको दस रुपये भी देता हूँ। वरना याद रक्खो मैं तुम दोनों को मार दूँगा।'

मुझको नहीं मालूम था कि दस रुपए में इतना जोर है। फौरन दरोगा बोला—'और मुझे क्या दोगे ?' गोया यह दस रुपए तो कान्स्टेबुल साहब के हुए जो अपनी आँखें मचका-मचका कर मल रहे थे।

मैंने कहा—'कुल दस रुपए हैं; मगर पाँच रुपए मैं तुमको और दूँगा बशर्ते कि दोनों धर्म की कसम और दरबान की आन की कसम खाओ कि मेरे पीछे अब न पड़ोगे और जाकर कह दोगे कि मैं हाथ नहीं आया।'

फौरन दोनों राजी हो गए। मैंने दो नोट जेब से निकाले और उनसे कहा कि कसम खाओ। कान्स्टेबुल ने जरा सोच-विचार किया; लेकिन फिर दोनों ने कसम खाली। मैंने नोट नीचे फेंक दिए और चल दिया। मुड़कर देखा तो दोनों सन्तुष्ट थे। ऊँट अलग खड़ा था। मेरा पीछा करने का उनका इरादा भी न था। मैं उनको देखता रहा। यहाँ तक कि दूर निकल गया और मैंने देखा कि वे ऊँट पर चढ़ कर वापिस चल दिए और मैंने अब इत्मीनान की साँस ली।

लेकिन अब मुझे पराजय का अनुभव हुआ। जरा गौर कीजिएगा कि इतना रुपया व्यय किया, हैरान हुआ, जिल्लत[1] उठाई, उलटी आँतें गले पड़ी थीं। खुदा-खुदा करके मुसीबत से जान छूटी। अब जरा मेरी नीचता और हार का अन्दाजा लगाइएगा। सिवाय इसके क्या चारा था कि अगले स्टेशन पर पहुँच कर बिना कुछ कहे-सुने घर सिधारूँ। एक जी में आता कि लौट पड़ूँ और पूरा झगड़ा करूँ; लेकिन नतीजा कुछ न नजर आया। धीरे-धीरे चला जा रहा

---

१. अपमान।

था। भूख से अलग परेशान था कि एक व्यक्ति नजर आया। उससे राह दरियाफ्त की। आस-पास के देहात का पता लगाया। अगला स्टेशन करीब ही था; मगर सवाल था कि ऊँट का क्या होगा? लिहाजा दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि जोधपुर की सरहद का रेलवे-स्टेशन सुजानगढ़ वहाँ से ज्यादा दूर नहीं। यानी रात्रि तक वहाँ पहुंच जाना मुमकिन है। सुजानगढ़ में एक सुनार को जानता था और मुमकिन था कि वहाँ रात बसर करके, ऊँट सिपुर्द करके वापिस चल दूं। अतः इसी प्रोग्राम पर अमल किया। बीच का किस्सा छोड़ता हूँ कि कहाँ खाना खाया और क्या-क्या दिक्कतें उठाकर रात-गए सुजानगढ़ पहुँचा। रात्रि विश्राम वहीं किया और दूसरे दिन शाम की गाड़ी से रवानगी के इरादे से स्टेशन पहुँचा। अब स्टेशन के सामने धर्मशाला की ओर जो मुड़ता हूं तो मेरा ऊँट चमकी और चमकी की माँ से लड़ गया होता। अरे! मुंह से एकदम निकला। यह क्या? दरअसल सामने फासले पर खिलाफ पार्टी वाले मय पुलिस वालों के दुकान पर पूड़ियाँ ले रहे थे। जाँच की कार्यवाही के लिए मामला इस नौबत पर पहुँचा था। पलक झपकते मैं ऊँट से कूद पड़ा। ऊँट बिठाने की देर थी। चमकी को अगली काठी पर डाल पीछे मैं बैठा ही था। विरोधी भी सामने ही थे। दौड़ पड़े कि लेना! मगर मेरा ऊँट उठ चुका था। चकरा कर मैंने ऊँट मोड़ा और लेकर जो हवा हुआ हूँ तो पन्द्रह सैकिंड में बीकानेर सरहद पार कर चुका था। रेल की पटरी के उस तरफ जोधपुर की सरहद थी और इस तरफ बीकानेर का इलाका। करीब का गाँव मैं जानता ही था। सीधा उसी तरफ को रुख किया और वहाँ पहुँचते ही एक कायमखानी दोस्त के यहाँ जरा देर दम लिया। थाने में चमकी की तरफ से अपनी खुशी से आने की रिपोर्ट तहरीरी पेश कराई। अपनी शनाख्त और जमानत दिलवाई और रात ही रात ऊँट पर डीडवाना पहुँचा। वहाँ रात बिता कर सुबह होते-होते वहाँ से भी ऊँट पर ही रवाना होकर शाम तक

कुचामन रोड रेलवे-स्टेशन पर पहुँचा और वहाँ से रेल में बैठ कर सीधा अजमेर।

१४

अजमेर में मेमोरियल होटल में क़याम किया और जल्द से जल्द काजीजी वाली कार्यवाहियाँ समाप्त करके शादी पक्की की और फिर एक वकील साहब की राय और हिदायत से चमकी की तरफ से सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस के दफ्तर में अर्जी दिलवाई तथा मेरे पास जो तहरीर थी उसकी तस्दीक कराके पूरा इत्मीनान हासिल किया। यहाँ तक कि एक दोस्त से रुपया कर्ज लिया और अपनी नई बीवी को थोड़ी-बहुत खरीदारी और सैर कराई। दिन के दिन दो जोड़े बनवा दिए, एक बक्स खरीदवा दिया और बहुत-सा साज-सज्जा का सामान अत्यधिक भद्दा और खराब किस्म का, मगर माँग के मुताबिक खरीदवा दिया। खूब मोटर की सैर कराई। जूता पहिनने से श्रीमतीजी ने असहमति प्रगट की थी। लिहाजा मैंने भी जोर न दिया। मैंने देखा कि यह जंगली लड़की इस महान् परिवर्तन से किस प्रकार प्रसन्न और प्रफुल्लित है। बहुत जल्द बे-तकल्लुफ हो गई। छीन-झपट में अजीब और इत्तिफाक से अपनी कामयाबी और बीच के जमाने के नमूने की दौड़-झपट ने इस कामयाबी को कहानी और खुद को कहानी का हीरो बना दिया। लड़की का बराबर आज्ञापालक रहना, लड़की की माँ का तरफदार रहना और लड़की को जाँच के समय पुलिस के मुकद्दमे के पंजे से झपट लाना—ये सब बातें अजीब थीं। शाम को जब हम होटल वापस आए तो श्रीमतीजी काफी खुल गई थीं। यहाँ तक कि दबी जबान से इशारे से कुछ इस किस्म की

तजवीज पेश की कि शराब पी जाय। मैंने गौर से उसकी ओर देखा। दरियाफ्त जो किया तो फिर पीने से इन्कार किया। मालूम हुआ कि महज पूछता था। बेहतर है कि मैंने दिल में कहा और अरज कर दिया कि अब जहाँ तुम्हारा रहना-सहना है वहाँ अगर इसका जिक्र भी आया या नाम भी आया तो ताज्जुब नहीं कि इसी बिना पर ताजपोशी[1] अमल में आ जाएगी। यह खूब अच्छी तरह समझा दिया।

रात को हम दोनों होटल के कमरे में बैठे थे। खाना सामने था। इस जंगली के लिए यह भी हुनर से कम न था। क्या जाने बेचारी तमीज। मैंने हाथ धोना, तौलिया से पोंछना और तमीज से बैठना तथा दूसरी बातें बताईं; लेकिन जब खाने का वक्त आया तो कहने लगी जमीन पर बैठ कर खाऊँगी और मुझे अलग थाली में दे दो। मैंने दे दिया। इत्मीनान से खाना खाकर हम दोनों ने बातें कीं। उसको जिन्दगी के नए दौर के मुतैल्लिक बहुत-सी बातें बताईं। बीवी-बच्चों का हाल बताया। काम के सम्बन्ध में बताया कि कैसा और कितना है। बैठी मजे से सुनती रही और पूछती भी रही तथा उस वक्त मुझे एक अजीब अहसास हुआ। यह नौकरानी या बाँदी है या वास्तव में विवाहिता पत्नी है? क्या मैं इसको बीवी की तरह इज्जत और मुहब्बत के साथ अपने साथ बिठा सकता हूँ, अपने साथ खिला सकता हूँ? इसको तकलीफ या रंज पहुँचे तो मुझे कुछ खयाल होगा या नहीं? जंगलीपन के साथ इसमें अजीब सादगी और भोला-पन है। प्रारम्भ ही से मेरी ओर आकृष्ट है। इस वक्त कैसी खुश है। चेहरे से भोलापन जाहिर है। खुदा जानता है मेरी तरफ से इसके दिल में क्या जज्बात होंगे। यह दरअसल नौकरानी है—खादिमा है। सिर्फ जरूरतन शादी है। इससे यह भी फायदा होगा

---

१. आशय जूता पड़ने से है।

कि अगर भागेगी तो बतौर औरत के भी पकड़वाई जा सकती है। तनख्वाह की बचत रही वह अलग। उम्र भर मेहनत करेगी। इसके बाद···इसके बाद जो गौर किया तो वहाँ सिवाय इसके क्या रक्खा था कि 'कुछ नहीं'···तनख्वाह तो बीवी को भी नहीं मिला करती है, मगर बीवी तो और चीज है! बीवी तो यह भी है। मतलब यह कि यह भी बीवी हुई, हुई ही! या बीवी भी···मगर बीवी तो वास्तव में चीज ही और होती है···यह उस किस्म की चीज नहीं है! यह तो नौकरानी है! मेरी जान से प्यारी छोटी बीवी की खिदमत किया करेगी।

ये तमाम खयालात दिल में आए। मैंने उसकी ओर गौर से देखा। मुझे उस पर बड़ा तरस आया। रहम-सा आया। आज ही मैंने उससे शादी की थी, किस तरह हाथ आई है। विगत घटनाएँ एकदम से नजर के सामने आ गईं और मैंने फिर उसकी तरफ गौर से देखा। कितनी अच्छी और हिम्मत वाली लड़की है। मैंने फिर देखा और आहिस्ता से कहा—'इधर तो आ···इधर···पास आजा··· यहाँ···यहाँ बैठ जा।'

उसको अपने पलंग के पास बैठा लिया। बिल्कुल पाटी के पास। कमरे में दूसरा पलंग भी था, मैंने उसको एक दरी भी दिला दी थी। उसने अपना बिस्तर पलंग पर नहीं लगाया था; बल्कि एक कोने में जमीन पर दरी बिछाई थी। पास आकर बैठी तो मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लिया। मैंने कहा—'तू जानती है, वहाँ क्या काम करना होगा? मेरा सिर भी दबाना होगा, हाथ भी दबाने होंगे, सारी खिदमत करनी होगी।'

यह कह कर मैंने कहा—'तू उँगुलियाँ चटखाना जानती है— खींच तो जोर से।'

मैंने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया और उसने अपनी मज़-बूत अँगुलियों से निहायत ही जंगलीपन के साथ मेरी उँगुलियाँ

चटखानी और तोड़नी शुरू कीं और इस काम में मजाक का कितना पहलू था ? दिलचस्पी कितनी थी ? और उसकी मजबूत, विलकश उँगुलियाँ अपने दिलचस्प काम में किस तरह लगी हुई थीं, उँगुलियों की हरकत और नरम-गरम जोर-आजमाई उसके नौ-जवान चेहरे पर कैसा कम्पन पैदा कर रही थी और उसके चेहरे पर एक दिल-चस्प और मधुर मुस्कुराहट-सी स्थिर होकर रह गई थी।

मैंने उसकी खूबसूरत और बड़ी-सी पलकों को देखा। उसकी बेकरार और चमकदार आँखों में जीवन था और थी जागृति, जिसके कारण पपोटों की मोहक हरकत के साथ उसकी बड़ी-बड़ी पलकें बड़ी नरमी के साथ हरकत करती थीं। जब मैं अपनी उँगुली सख्त कर लेता और उसको पता चलता कि मैंने ऐसा जानबूझ कर किया है तो उसके चेहरे की चमक एकदम से बढ़ जाती और वह मुस्करा कर रह जाती। मैंने उसके दिलचस्प चेहरे को देखा और पूछा कि आखिर अपना बिस्तर जमीन पर क्यों बिछाया है। बजाय जवाब देने से वह मुस्कुराने लगी और जब मैंने जोर देकर वजह पूछी तो कहा—'नहीं।'

फिर मैंने उससे पूछा—'मैं कौन हूं ?'

इस दिलचस्प सवाल पर वह मुंह छिपाकर हँसने लगी, मगर मैंने सख्त तकाजा किया, तो जवाब यह मिला कि मैं खुद बेहतर जानता हूँ कि मैं कौन हूँ। मैंने कहा—

'मैं तो जानता हूँ; लेकिन तुझसे पूछता हूं और तुझे बताना होगा कि मैं कौन हूं ? बता···अरी बता···।'

और मैंने जब अपनी उँगुलियों से उसकी उँगुलियों को पकड़ कर बार-बार झटका देकर पूछा और अपनी अँगुली उसकी ठोड़ी पर मार कर पूछा और जोर दिया कि बताना होगा तो वह कुछ कस-मसाई, कुछ झेंप-सी गई और आहिस्ता से बोली—

'आलीजाह।'

इस मुख्तसिर मगर बामानी जवाब ने मेरे तन-बदन में किस तरह एक बिजली-सी दौड़ा दी। इस शब्द के क्या मानी हैं? कभी आप इस भूल में हों कि यही शब्दार्थ यानी जनाब आली और बन्दा-परवर का भाई-बन्द! हरगिज नहीं। रेगिस्तान के तपते हुए इलाकों में जुदाई व मिलाप के इश्किया गीत सुनिए तो इस लफ्ज के मानी समझ में आयेंगे और आपको ताज्जुब होगा कि सुनसान जंगल और पहाड़ व बीहड़ की अर्धजंगली कौमें जब अपने जंगली गीत गाती हैं तो इन इश्किया गीतों की तान आकर इसी जादूभरे लफ्ज 'आलीजाह' पर किस मजे से टूटती है। आलीजाह के मानी हैं आशिकेजार, रंगीला, रसीला यार जो बदमाश और रंगीन मिजाज आशिक होता है, लेकिन खुद माशूक स्वभाव है। इश्क व मुहब्बत के नशे में झूमता हुआ बाँका'''और सच पूछिए तो हर बाँदी की नजरों में उसका नौजवान वाकई आलीजाह है और जब उनके दिल में गुदगुदी उठती है तथा वह घर की मलिका से डरी हुई होती है तो उनकी गर्म-गर्म श्वासों के साथ यही शब्द बड़े मजे में लरजता हुआ एक अजीब नम के साथ निकलता है जो खुद मालिक के दिल को गर्माता और बिरमाता चला जाता है।

और मैंने जब इस जंगली हिरनी के मुँह से यह शब्द सुना तो तन-बदन में एक लहर दौड़ गई और मैंने साश्चर्य और प्रसन्न होकर कहा—'आलीजाह'। तो उसने मारे शर्म के मुस्करा कर अपना मुँह छिपा लिया।

मैंने इत्मीनान से कहा, 'मैं तेरा आलीजाह हूँ! ठीक, मगर अब यह बता कि तू कौन है?'

और अब उसने फिर अजीब अन्दाज से मुस्कराते हुए मेरी तरफ देखा और इससे पहले कि वह मेरे सवाल का जवाब दे उसने मेरी उँगुली चटखाने की कोशिश में इस बुरी तरह दबा दी कि मैं उछल पड़ा।

'अरी कमबख्त···!'

मैंने झटका देकर हाथ छुड़ा लिया और हँस कर कहा—'मालूम होता है मार खायेगी, उँगुलियाँ तोड़े देती है।'

और उसने हँसी को रोकते हुए, मगर सादगी से कहा कि उसका इरादा कतई उँगली तोड़ने का नहीं, बल्कि वह तो आदत के मुताबिक उँगुलियाँ मोड़ रही है और फिर कुछ आजादी से थोड़ी-सी मुस्कराहट के साथ मेरा हाथ फिर झपट लिया—यह कह कर कि तोड़ूँगी नहीं।

और मैंने अपना हाथ उसके हाथ में फिर उसी तरह देते हुए कहा—

'तू बड़ी बदतमीज है, उँगुली तोड़ती है या हँसती है और मैं जो कुछ पूछता हूँ, 'आखिर क्यों नहीं बताती ?'

वह बोली—'क्या ?'

मैंने कहा—'तू कौन है ?'

उसने सादगी से जवाब दिया—'चमकी।'

'चमकी तो है' मैंने कहा—'यह तो मैं जानता हूँ, मगर यह तो बता कि तू है कौन ? यहाँ मेरे साथ क्यों आई है ?'

कहने लगी—'तुम ही तो लाए हो।'

मैंने कहा—'तू हँसना बाद में। बेशक मैं तुझे लाया हूँ, मगर क्यों लाया हूँ। तू मेरी भी कोई है ? तू मेरी कौन है ?'

और उसने एकदम से उँगुलियाँ मोड़ते-मोड़ते रुक कर मेरी तरफ गौर से देखा, यह अन्दाज लगाने को कि मेरा क्या मतलब है और फिर बोली—

'तुमको नहीं मालूम ?'

'अरे !' मैंने कहा—'चुड़ैल कहीं की। तुझको तो सब मालूम ही है, मगर तुझे बताना पड़ेगा। बताती क्यों नहीं ? तू, मेरी कौन है ?'

कहने लगी—'तुम जानते हो।'

मैंने कहा—'जरूर जानता हूँ, मगर तू खुद बता।'

वह बोली—'चेरी।' (यानी लौंडी)

'चेरी ?'

'हाँ।'

'किसकी ?'

जवाब में मेरी तरफ अँगुली उठा दी। मैंने पूछा—'मेरी है ना, मेरी ही है ?'

जवाब दिया—'हाँ।'

'मेरी है कि किसी और की ?'

निहायत ही बदतमीजी से कहा—'हट।'

'अरे' मैंने कहा—'यह 'हट' क्या बला है ?'

गरदन को हिलाती हुई कहने लगी—'मैं किसी और की क्यों होने लगी ?' कहा था यह कुछ गम्भीरता से।

अब दरअसल मुझे मालूम हुआ कि मैंने उसकी तौहीन की थी। मैंने फिर उसके चेहरे को गौर से देखा। वह बदस्तूर अब मेरे हाथ की अँगुलियों को दबा रही थी। मैंने फिर पूछा—

'तो मेरी है ना ? क्या होती है ?' जवाब नदारद। फिर मैंने पूछा कि—'तू चेरी है कि बीवी ?' जवाब नहीं दिया तो मैंने उसका हाथ झटका—'बोलती क्यों नहीं ?'

'बता तो दिया।' रुक कर बोली—'गोली···चेरी···।'

'बीवी क्या हुई ?'

'मुझे नहीं खबर।'

मैंने पूछा—'तू किसकी बीवी है ?'

कुछ गम्भीरता से मैंने पूछा था। अब उसने मेरी तरफ देखा—शायद जंगलीपन को चेहरे से रुखसत करके।

मैंने बार-बार पूछा तो बोली—'मैं गोली हूँ।'

मैंने कहा—'यह काजी के यहाँ क्या हुआ था मसजिद में ?'

दरअसल वहाँ काजी साहब ने अपना अरबी कोष छोड़कर कार्य-वाही की थी जिसमें शब्द निकाह के अलावा शब्द बीवी से काम नहीं चला—एक बहुत विद्वान ने हिन्दी से काम लेकर स्पष्टता की तबली तोड़ दी—'लुगाई, 'खाविन्द' 'जोजा,' 'बीवी' 'धनी' आदि-आदि घूम-फिर कर ये ही सब शब्द आते थे, मगर मेरे इस सवाल का उसने कोई जवाब नहीं दिया और जरूरत से अधिक गम्भीर होकर कहा—'मुझे क्या खबर ?'

मैंने कहा—'काजी क्या कहता था ?'

बोली—'मुझे क्या खबर—कुछ मुसलमानी हाका बड़बड़ करता था।' (मजहब इसलाम के मुतल्लिक 'बड़बड़' यानी नाकाबिल समझ शब्द)

मुझे बहुत हँसी आई और मैंने कहा—'चल चुड़ैल···।'

वह भी हँसने लगी, कहने लगी—'मुझे क्या खबर, वह क्या कहता था ?'

यह कह कर मैंने फिर उसके मुस्कराते हुए, मगर भोले चेहरे की तरफ देखा। बहुत गौर से देखा। उसने अपनी मदभरी आँखों से एक क्षण के लिए मेरी तरफ देखा और फिर धीरे से नजर नीची कर ली तथा मेरे दिल में फिर एक रहम और हमदर्दी की लहर-सी दौड़ गई। कितनी सीधी और सौम्य लड़की है !

मैंने सहानुभूति के स्वर में पलंग की पट्टी पर हाथ रखकर कहा—'बैठ जा···यहाँ बैठ जा···' और उसने मेरी तरफ देख कर एकदम से नजरें नीची करके सिर हिला कर इन्कार कर दिया।

और मैंने इसका हाथ झटक कर कहा—'उधर देख।'

और उसकी हुक्म-उदूली को नजर में रखते हुए, उसको याद दिलाने के लिए पूछा—'तू मेरी कौन है ?'

जब वह कुछ न बोली तो मैंने फिर कुछ जोर देकर कहा—'अरी, बैठती क्यों नहीं ?'

और मैंने जब तकाजों के मारे उसको हैरान कर दिया तो वह अब तक जमीन पर बैठी थी मगर अब कुछ तकल्लुफ के साथ खड़ी हो गई। मैंने हाथ पकड़ कर उसको बिठा लिया और वह नजरें नीची किए चुप और गुम-सुम बैठी रही।

फिर मैंने उसकी आँखों को झुककर देखा और उसकी ठोड़ी को हाथ से पकड़ कर आँखों में आँखें डाल कर कहा—'क्यों री, क्या तू मुझे चाहती है ?' और जवाब में उसने निहायत भोलेपन और गम्भीरता से सूरत बना कर धीरे-से मेरा हाथ हटा कर फिर उसी तरह अपना सिर नीचा कर लिया और मैंने कहा—'तू नहीं बोलती, कैसे नहीं बोलेगी।' यह कहकर मैंने फिर वही सवाल दुहराया—'मुझे चाहती है ?'

मेरे सवाल का कोई जवाब उसने नहीं दिया, लेकिन एक नजर उठा कर अजीबपन और लाचारी से देखा या नजरों ही से कुछ जवाब दिया और मैंने कहा—'क्यों री'''तुझे गले लगा लूँ ?'

और मैंने देखा कि शर्म के कारण वह पानी-पानी हो गई। मैंने दोनों हाथ उसे गोद में लेने के लिए बढ़ा दिए (जैसे बच्चे को गोद में लेने को हाथ बढ़ाकर बुलाते हैं) और मैंने कहा—'आ, मैं तुझे गले लगा लूँ।' और जब वह बार-बार तकाजा करने पर भी नहीं आई तो मैंने हाथ पकड़ कर धीरे-से अपनी ओर खींचा, उसके चमकते हुए चेहरे को अपने दोनों हाथों में लेकर चूम लिया और उस जंगली चीज को गले से लगा लिया।

उसके नौजवान सीने की धड़कन मेरे सीने पर हथौड़े की तरह लगती मालूम दी।

१५

खुदा की पनाह ! बीवी भी किस कदर प्यारी और नशीली चीज है चाहे वह जंगली ही क्यों न हो ! चमकी एक मीठी बाँसुरी थी जिसकी लय दिल व दिमाग में उतरी जाती थी। दो रोज मैंने इस जंगली लड़की के साथ खूब इधर-उधर की सैर की। यह मालूम देता कि मौसम-बहार है और तीसरे रोज हम दोनों दिल से न चाहते हुए भी अजमेर से रवाना हुए। रास्ते में चमकी को न मालूम क्या-क्या हिदायतें कर दीं कि छोटी बीवी यह पूछे तो यह कहना और यह कहे तो यह कहना। और उसी रोज हम घर जा पहुँचे। छोटी बी की खिदमत में एक खादिमा लाकर खड़ी कर दी। उनकी नौकरानी चमकी ने दोनों हाथ जोड़ कर छोटी बीवी को झुक कर दंडवत् की। छोटी बीवी ने गौर से चमकी को देखा, फिर मुझको और चमकी को तथा उसके बाद शोर मचाना शुरू किया यानी मुझे डाँटना। आखिर कहाँ रह गया था ! मेरी बेबसी और छोटी बीवी की शहजोरी पर चमकी की आँखें फटी की फटी रह गईं। मैंने दो शब्दों में मामला समझाया। कहा कि इत्मीनान से सुनोगी तब पता चलेगा। संक्षेप में, छोटी बीवी को ठण्डा किया। अब छोटी बीवी ने गौर से मुआइना किया। नये कपड़े लिये, सन्दूक आदि साज-सज्जा का सामान देखा। कुछ क्या बल्कि काफी ना-पसन्दगी चेहरे से जाहिर हुई। मुझसे चुपके से कहा—'बड़ी हर्राफा मालूम देती है।' मैं भला क्या कहता ? उसके बाद छोटी बी ने चमकी को फौरन घर के काम-धन्धों की तरफ तवज्जह देने के लिए कहा। रहने को

रसोईघर के पास वाली कोठरी बतायी। पानी का घड़ा, लोटा, गिलास उसका अलग किया। बर्तन अलग किए और सरसरी तौर पर हुक्म जारी करते हुए घर का चार्ज गोया दे दिया। तजुर्बे के तौर पर जल्दी-जल्दी बेकार हुक्म देकर के यह देखा गया कि यह काम कैसे करती है। बच्चे सौंपना चाहे, मगर वे राजी न हुए। 'ऐं ऐं' करके मचल गये। यह तय हुआ कि दो-एक रोज में हिल जाने पर देखा जायगा।

रात्रि को खाने के बाद हम दोनों बड़े इत्मीनान से बैठे बातें कर रहे थे। मैंने सारा किस्सा शुरू से आखिर तक सुनाया। सिर्फ उस किस्म के वाक़आत छोड़ दिए जो कदाचित् छोटी बी को नापसन्द होते। फिर चमकी को बुलाकर छोटी बी ने उससे बहुत-सी बातें कीं। अच्छा काम करने की सूरत में कपड़े और जेवर का भी उससे वायदा किया और काम-चोरी तथा काहिली के नतीजों से भी चमकी को अगाह किया।

चमकी ने दूसरे ही दिन से घर की काया-पलट करने की कोशिश की। अव्वल तो चक्की के बारे में छोटी बी से पूछा—'क्या तुम खुद पीसोगी?' छोटी बी ने बिदक कर कहा—'ऐ, तू होश में भी है, कमबख्त!' दरअसल गलती खुद छोटी बी की थी। चमकी को खिदमतें सौंपते समय चक्की की चर्चा ही न हुई थी और चन्द दूसरे कामों के बारे में छोटी बी ने कहा था कि तुम न करना, मैं खुद कर लूँगी। वह समझी कि चक्की भी यही पीसेंगी तथा जब उसको मालूम हुआ कि इस घर में शुरू से चक्की ही नहीं है तो फिर भोलेपन से घबराकर उसने पूछा—'फिर क्या करते हो?' और जब उसको यह मालूम हुआ कि बाजार से पिसकर आता है तो उसकी अक्ल ने काम न किया कि किस तरह ये खर्चे बर्दाश्त होते होंगे और यह भी कि ऐसे मूर्ख और फिजूलखर्ची भी दुनिया में हैं जो ऐसे कामों पर रुपया बर्बाद कर सकते हैं। यह हुज्जत सुनकर छोटी बी ने कहा कि

मैं कल ही चक्की मँगवाती हूँ और वास्तव में मँगवा दी भी गयी।

ये किस्से अभी शुरू ही न हुए थे कि चमकी के मुद्दई बीकानेर-पुलिस को लेकर आ गए; लेकिन मेरे पास अपनी मुक्ति का काफी तत्व (माद्दा) मौजूद था और यह भी अच्छा हुआ कि यह शुव-बुव भी खत्म हुई।

बहुत जल्दी चमकी ने घर का काम सँभालना शुरू किया। निहायत कोशिश और मेहनत से हर काम किया। बच्चों के साथ हद से ज्यादा मुहब्बत का बर्ताव किया। नातजर्बेकार होकर अपना पित्ता मारकर बच्चों के जुल्म सहे और छोटी बीवी की वह खिदमत की कि एक बार तो छोटी बी की बाँछें खिल गयीं। वह कहती रह जाती—'अरी नेकबख्त, रहने दे, रहने दे।' मगर नहीं, चमकी नहीं मानती। अपनी बीवीजी के मुहब्बत से पैर दाबती, हाथ दाबती, सिर सहलाती, बच्चों को इस तरह खिलाती कि उनसे खेलने लगती। रोज तकाजा करती कि बीवीजी बच्चों के लिये भैंस ले लो। मैं सब काम कर लूँगी। उसने इतने तकाजे किए कि छोटी बी ने तय कर लिया कि भैंस लें। मकान ऐसा था कि जगह न थी। लिहाजा हुक्म हुआ कि घर बदल दो और फिर बहुत जल्द घर भी बदल दिया गया और भैंस खरीद ली गयी। शाबाश है गरीब को, सुबह इतने अँधेरे उठती और घर-खर्च अन्दाज का आटा पीसती, भैंस का काम करती, सारे घर में झाड़ू देती, बच्चों को देखती-भालती फिर खाने पकाने और घरेलू काम-धंधों में ऐसी पड़ती कि रात गए तक उसी में उलझी रहती और सोने से पूर्व जब छोटी बी मेरे साथ खुशगप्पियों में लगी होती तो दिन-भर की मेहनत और काम से छुटकारा प्राप्त करके दबे पाँव दरवाजे के पास आती—हमारे हँसने-बोलने और खुशफेलियों[1] की आवाजें या कभी छोटी

---

१. केलि-कलाप।

बी का मजेदार गीत सुनने। एकदम से छोटी बी कहती—'क्यों, क्या है ? सब काम कर लिया ? अच्छा जाओ, बैठो। आज हाथ-पैर तो रहने दो। नहीं, मैं नहीं दबवाऊँगी···।'

चमकी चल देती—दरवाजे से हटकर रुक जाती जरा आड़ में और मुड़कर मेरी तरफ देखती। मैं एक अजीब किस्म की बेकली महसूस करता—ऐसी कि उसकी तरफ देखा न जाता। अजीब अन्दाज से वह खामोशी से देखती। फिर चल दी और फिर रुक गयी फिर देखा और देखती हुई चली गई।

दरअसल जिस दिन से वह यहाँ आयी थी, मुझे उससे बात करने की भी जरूरत न पेश आयी थी। जब इस मेहनत, कोशिश और जानमारी से कोई काम करे तो कैसे कोई कायल न हो ! छोटी बी चमकी से बहुत खुश थीं। ऐसी कि उसने तो थोड़े ही अर्से में बड़ी बीवी के काम को भुला दिया। भला कैसे खुश न होती। इस दशा में एक कौड़ी तनख्वाह नहीं देनी पड़ती थी। हाँ, शाबाश ! वह उससे अलबत्ता ऐसी मिलती थी कि बस बयान से बाहर है। और वह भी इस मुहब्बत और मेहरबानी के सलूक से बेहद खुश थी और छोटी बीवी को भी मालूम था कि चमकी बेहद खुश है। हर तरह से खुश है, बहुत खुश है और इसी वजह से काम भी जी लगा कर करती है।

चमकी को आए दो महीने गुजर गए; लेकिन इस दौरान में मुझे एक बार भी उससे बात करने का मौका न मिला और मिला भी तो बात न हो सकी। वजह दरअसल यह कि मेरा प्रोग्राम ही इस किस्म का था—'घर-घुसा' दफ्तर जाने से पहले कभी बाहर कहीं गया, वरना बैठा रहा बीवी के पास। या कुछ काम करता रहा। बाद दफ्तर घर में आया तो चाय पीकर बीवी-बच्चों का हो गया। कभी कोई मिलने वाला आ गया वह बात दूसरी है और फिर शाम से रात गए तक समय छोटी बी के साथ गुजरता। चमकी कमरों में सफाई करती और अगर मैं कभी होता तो मैं देखता कि इरादे से उसी कमरे में काम बढ़ा रही है। बराबर ही बरामदे में या कमरे में छोटी बीवी होती। चमकी दर्पण साफ कर रही है या कुर्सी पोंछ रही है या जूतों को सीधा कर रही है और बार-बार मुड़-मुड़ कर मुझे देखती है तो मैं नजरें नीची कर लेता हूँ और जब वह नजर दूसरी ओर कर लेती है तो मैं उसे देखता हूँ और दो-चार बार ऐसा करने के बाद हमारी दोनों की नजरें चार होतीं, तो मैं देखता कि पलक झपकने में उसकी आँखों में एक हरकत-सी मालूम होती और कुछ शरमा कर वह नजरें नीची कर लेती।

फिर मैंने यह देखा कि छोटी बी कहीं गुसलखाने में गई। चमकी ने देखा, रसोईघर से फौरन उठकर किसी काम के बहाने से आई। दो दफा और तीन-तीन दफा आई। बच्चों को पुकारने लगी। इधर-उधर की चीज उठाने लगी। अगर चाहता तो मैं उससे बात कर

लेता और बात की भी कमी तो रस्मी और किसी का मर्के मुतैल्लिक। बिल्कुल उसी तरह जैसे छोटी बी सामने बैठी है। कई बार इरादा किया, मगर यही ख्याल किया कि छोटी बी देख लेगी तो क्या कहेगी इसका ज्ञान ही नहीं रहा था कि यह वही अजमेर वाली चमकी है। मेरी शादी-शुदा और खास बीवी! छोटी बी के सामने यह ख्याल दिल में भी आना गुनाह मालूम होता था। मैं यह सोचता कि यह वही चमकी है जो अजमेर के होटल के कमरे में थी। कैसी आजादी से बातें कर रही थी और मैं उसको एक प्यारी बीवी की तरह गले में बाँहें डाले कलेजे से लगाए हुए था। क्या यह सच्चाई थी! और अब यह वही लड़की है।

एक रोज ऐसा हुआ कि इधर से मैं जा रहा था बाहर और उधर से तेजी से भैंस के पास से चमकी आती थी। बजाय निकले चले जाने के हम दोनों रुक गये। एकदम से ऐसे कि किसी ने जबर-दस्ती रोक लिया हो! दोनों ने एक-दूसरे को देखा और फिर अन्दर जाने लगे—दरवाजे की तरफ। एक-दूसरे के करीब आये कि आवाज आयी—'चमकी' बड़ा बच्चा रोता हुआ आता था। 'लेना इसे...!' हम दोनों ने जोर-जोर से बोल-बोल कर बच्चे को सँभाला। ऐसे कि मैंने चमकी के बदन को कई बार कुहनी से भी छुआ। फिर बच्चे को उठाकर चमकी की गोद में भी दे दिया। वह चली गई। मेरी तरफ दो दफा देखा।

एक बार मैं रात को जरूरत से उठा। वापस आता था कि सहन में चमकी मिली। पानी पीकर आती थी। दोनों रुक गये। न मेरी हिम्मत पड़ी आगे बढ़ने की और न उसकी। हम दोनों एक-दूसरे को देखते चले गये।

एक बार मैं क्या देखता हूँ कि बड़े दर्पण में चमकी अपना मुँह देख रही है। बाल सँवारने लगी। दरअसल अपनी मालिका को देख कर फ़शनेबिल हो सकने पर गौर करती होगी। मैं जो बरामदे से

मुड़ा'''तो करीब तो था ही, दर्पण में उसकी शक्ल सामने साफ नजर आयी। मगर वह बाल उँगलियों से सँभाल रही थी और उसने नजरें उठाईं कि एकदम से दर्पण ही में आँखें चार हुईं। किस अन्दाज से मुस्कराकर और झेंपकर उसने एकदम से मुँह छिपाया है कि बयान नहीं कर सकता और फिर मुड़कर देखा मेरी तरफ, फिर उसी छिपी मुस्कुराहट से।

अलावा इसके तीन-चार दफा इसे छोटी बी ने गाने-बजाने में शरीक किया। हारमोनियम वह जानती थी। ढोलक और चंग खूब बजाती थी और छोटी बी को दरअसल ढोलक पर ही गाने में मजा आता था। कई बार मैंने छोटी बी से कहा कि चमकी का गाना सुनो। मगर वह सुनने को राजी न हुईं। मैंने नाचने को कहा तो कहा, 'नाचना नहीं आता। छोटी बी ने बहुत-बहुत कहा; मगर इन्कार करती रही। यही कह दिया कि मुझे नहीं आता। लेकिन एक रोज गाने पर राजी हो गयी और खूब जोर से गाया—कैसा ? बस पूछिये न। जिन्होंने राजपूताने की औरतों के गले से राग-रागिनी सुनी है, वही खूब जानते हैं कि खुदा ने यहाँ के गलों में किस बला की रागिनी भर दी है। ऐसा कि आवाज दिल व जिगर को चीरती हुई चली जाती है और फिर मारवाड़ी गीत और अन्दाजा—इस पर भी वह औरत के मुँह से। औरत कौन ! एक नौजवान लड़की और वह भी विवाहिता पत्नी !

बेहतर ! छोटी बीवी ने उससे नाचने को कहा—यहाँ तक कह दिया—'अरे कम्बख्त, मैं भी तेरे साथ नाचूँगी, ले, मुझे भी सिखा दे।' मगर वह न मानी। मुँह छिपा-छिपा कर हँसती रही और यही कहा कि मुझे नाचना नहीं आता।

इसके तीसरे रोज का जिक्र है कि छोटी बी अपनी एक सहेली के यहाँ गई थीं। आने-जाने के लिए बी ने चमकी के लिये दो बहुत ही मामूली साड़ियाँ बनवा दी थीं। वरना घर पर वह अपना कौमी

लिबास यानी लहँगा वगैरह ही मोटे कपड़े का सुर्ख और नीली छपायी के काम का पहिने रहती थी। इस रात्रि को मैं दौरे पर जा रहा था। सूर्यास्त के पश्चात् छोटी बी आ गई। खाना सिवा मेरे सब ही मेजबान[1] के यहाँ से खाकर आये थे और तय यह हुआ कि मेरे लिये खाना वहीं से आयेगा। गोया दावत मेरी भी थी, मगर घर पर। मेरे जाने में अभी बड़ी देर थी; लेकिन आते ही छोटी बी ने मुझे खाना खिलाया। मैंने चमकी को गौर से देखा। फीरोजी रंग की साड़ी बाँधे थी और सबसे विलक्षण बात यह कि माँग के पास का वह भद्दा जेवर गायब था जिसको राजपूताने में 'बोर' कहते हैं और जो किसी तरह भी सिवा विधवा होने के अलग नहीं हो सकता। और अजीब बात यह कि बड़े मजे से आड़ी माँग निकाले! अब मुझे मालूम हुआ कि यह इस वजह से मुझसे मुँह छिपा रही थी। मैंने छोटी बी से कहा—'ओहो! इस चुड़ैल ने तिरछी माँग निकाली है।'

छोटी बी ने कहा—'कमबख्त बोर तो हटा।'

मैंने चमकी को देखा, किस कदर मोहक दृष्टि और सुन्दर मालूम हो रही थी। उसकी चमकीली और नशीली आँखों में गैरमामूली नौजवानी की चमक थी। चेहरा अत्यधिक चित्ताकर्षक मालूम दिया। आधी आस्तीन में उसका फँसा हुआ सुडौल और ताकतवर बाजू किस कदर दिलकश मालूम दिया। दरअसल उसके रोजाना के लिबास में और इस लिबास में जमीन व आसमान का फर्क था। मुझको ऐसा मालूम हुआ कि उसको बढ़िया लिबास पहिनाया जाय तो सच-मुच 'चमकी' बन जाय।

खाना खाकर मैंने घड़ी देखी। थोड़ा-सा सामान ठीक था ही। इन्तजार कर ही रहा था कि ताँगावाला आ गया। चमकी ने अस-बाब उठा कर ताँगे पर पहुँचाया कि छोटी बी किसी जरूरत से अन्दर

---

१. आतिथेय।

गई और मैं बाहर। ड्योढ़ी में चमकी से करीब-करीब टक्कर हो गई, दोनों रुक गये। मेरी जबान में धीरे-से निकला, 'चमकी' और मैंने हाथ जो बढ़ाया तो वह स्वयं मेरी गोद में आ गई। मैंने सीने से जोर से लगा लिया तथा उसका मुंह चूम लिया। गालों और माथे मुहब्बत के बोसों से तर कर दिया और मुझको मालूम न हुआ कि वह मेरे गले चिपट कर आंसू बहा रही है। घबराकर मैंने अपने को उसकी गिरफ्त से आजाद किया और लपककर तांगे पर जा बैठा। स्टेशन पहुँचा और जब तक गाड़ी न आयी। एक अजीब ही ख़ुशगवार[1] खयालों में गर्क रहा। ऐसा कि कोई जाना-पहचाना जो मिला तो वह बातें कर रहा है और मैं बजाय सुनने के कहीं और ही हूँ। एक साहब ने तो मिलकर कहा—'क्या ऊँघ रहे हो ?' गाड़ी जो आई तो शुक्र है कि कोई जाना-पहिचाना सफर का साथी न हुआ। मैं घर से तीन दिन के लिये दौरे पर जा रहा था। चमकी को लेकर आने के बाद यह दूसरा दौरा था। उससे पहले सिर्फ एक रात के लिये गैरहाजिर हुआ था।

---

१. मधुर।

१७

मुझको नहीं मालूम था कि दुश्मन, यानी चमकी के मुद्दई, ताक में लगे हैं। वह जो मुझसे हर तरह हार खा चुके थे और जिनसे मैं बड़ी चालाकी से चमकी को छीन लाया था।

इस दौरान में हीरा सिर्फ दो बार आया था। एक तो चमकी के आने के बाद ही और फिर दोबारा कोई उसके महीने भर बाद आया था। सुजानगढ़ से उसके पास ऊँट पहुँचा दिया गया था; क्योंकि मैंने डीडवाना ही से ऊँट वापस कर दिया था। उसकी जबानी मालूम हुआ था कि सूजिया यानी चमकी का मुद्दई और पहले वाला मँगेतर अपनी पराजय पर दाँत पीस रहा था और कहता था कि अगर चमकी को न उड़ा लाया तो कुछ काम न किया। यह शख्स जवान-उम्र, पेशेवर चोर और डकैत था—सख्त मजबूत और फुर्तीला। पहाड़ी पर जिन दो आदमियों को मैंने मात दी थी उनमें यह भी था और दरअसल चमकी के पीछे यह दीवाना भी हो रहा था; क्योंकि सच्चाई यह थी कि ऐसी सजीली दुलहिन इसको नहीं मिल सकी थी। मुझको जाने से पेश्तर अगर यह मालूम हो जाता कि चमकी की मँगनी एक ऐसे व्यक्ति से हो चुकी है जो उस पर हजार जान से आशिक है तो शायद क्या, बल्कि यकीनन यह सौदा ही न करता। लेकिन अब तो सवाल ही दूसरा था और मैंने जब हीरा से सुना तो यही कहा कि शायद उसकी शामत आई है; क्योंकि

---

१. आफत।

मैं भी अब ऐसा 'छोकरा' तो था नहीं जो कभी गाँव में ऐसा पीटा गया था कि इश्क का मर्ज दूर हो गया था।

किस्सा मुख्तसिर यह कि सूजिया मय साथियों के ताक में लगा हुआ था कि मौका मिले तो कुछ करे। खुदा ही जानता है कि उसका क्या इरादा था—यानी सिर्फ चमकी को ले जाने का या मेरे घर डाका डालने का। यह तो तय है कि मेरे ऊपर हमला करने का इरादा कतई न था वरना वह इसका इन्तजार न करता कि मैं कब घर से जाऊँ। जैसा कि बाद में मालूम हुआ दरअसल इस मूजी या इसके साथियों ने दफ्तर के किसी चपरासी से मालूम कर लिया कि मैं कब घर से गैरहाजिर हूँगा। उसी रात को सूजिया ने हमारे घर पर हमला किया।

छोटी बीवी का कायदा था कि आमतौर पर कभी मैं रात को जाता तो किसी-न-किसी अड़ोस-पड़ोस की दो-एक औरतों को बुला लेती और रात गए तक गाना-बजाना होता। अतः आज भी यही इन्तजाम किया था। मेरे जाने के बाद ही गाना-बजाना हुआ और उस रात को पहली बार छोटी बी ने चमकी का नाच देखा।

उसे अपने भड़कीले कपड़े पहिना कर खूब नचाया। इस महफिल से भी फायदा हुआ। जब नाच-गाना समाप्त हो चुका तो आने वालियों को रुखसत करके चमकी दरवाजा बन्द करने लगी। उसने एक तरफ कुछ फासले पर दो-तीन आदमियों को देखा। बजाय शहर के वे देहाती थे। कोई रात के बारह बजे थे और उसने देखा कि तीनों एक जगह खड़े हैं। अतः उसको यों ही कुछ शक हुआ। मगर उसने दरवाजा बन्द कर लिया और चली आई और छोटी बी से भी कुछ न कहा। अब मैं न होता तो छोटी बी कोई भी मुलाजिमा हो उसको अपने ही कमरे में साथ सुलाती थी। अतः दोनों बहुत जल्द पड़ रहीं और उसके बाद चमकी के दिल में तरह-तरह के बुरे खयाल आए। यहाँ तक कि देर तक नींद न आई और तबीअत पर एक

अजीब बेचैनी-सी रही; मगर फिर भी उसने छोटी बी से कुछ न कहा। बहुत जल्द दोनों सो गईं।

अब चोरों का हाल सुनिए। सूजिया अपने दोनों आदमियों के साथ ताक में लगा हुआ था। हमारे मकान का नकशा भी सुन लीजिए। बुलन्द दीवारों का एक होज़-सा था। सहन वगैरह काफी था। दरवाजा खोल कर अन्दर दाखिल हो तो भैंस साहिबा के लिए एक छोटा-सा छप्पर था और बाईं तरफ एक कोठरी थी जिसमें भूसा और उसी किस्म की खराब चीजें थीं। छप्पर और कोठरी के बीच छोटा-सा सहन था और उसी सहन में ड्योढ़ी में होकर अन्दर मकान में जाने का रास्ता था। ड्योढ़ी में कोई दरवाजा नहीं था। गोया जो दाखिल हो गया वह बगैर किसी किस्म की रोक-टोक के अन्दर हवेली में पहुँच सकता था।

अन्दर हवेली निहायत ही शानदार और लम्बी-चौड़ी थी। पीछे मरदानखाने के दो कमरे थे और चूंकि मैं हमेशा ही से घर घुसना हूं, लिहाजा ये कमरे भी छोटी बी ने जनाने में शामिल कर लिए थे। उन मरदाने कमरों में आने के लिए सड़क से चार सीढ़ियों का एक जीना और चबूतरा था। कभी कोई मिलने वाला आता तो अस्थायी तौर पर यह दरवाजा खोल दिया जाता, जिसकी खिड़कियाँ चबूतरे पर खुलती थीं। इन खिड़कियों में निहायत ही मज़बूत लोहे की सलाखें लगी थीं और फिर रास्ते के सिरे पर था। लिहाजा चोरों ने इस तरफ को तो छोड़ा। अब घर में दाखिल होने की सिर्फ यही सूरत थी कि किसी तरफ से दीवार तोड़ कर दाखिल हों, क्योंकि दरवाजा तोड़ना नामुमकिन था। पुराने जमाने का हद से ज्यादा मजबूत दरवाजा था। दीवार तोड़ने के सिवा कोई दूसरा चारा ही न था। सबसे ज्यादा मुनासिब दीवार वह थी जहाँ भैंस का छप्पर था; क्योंकि छप्पर की दीवार के पीछे की ओर एक अँधेरी और पतली गली दूर तक चली गई थी जो आगे जाकर बन्द

हो गई थी और यह गली पड़ोस के आलीशान मकान की पुश्त थी। उसके अलावा अगर किसी दूसरी जगह दीवार काटते हैं तो यकीन नहीं कि कहाँ फूटे। किसी कमरे में या घर के सहन में। और इस जगह यह भी फायदा था कि घर वालों तक को दीवार काटने की आवाज पहुँचना मुश्किल थी। अतः इसी दीवार को छाँट करके सूजिया और उसके साथियों ने दीवार की ईंटें निकाल कर सूराख बनाना शुरू किया। इधर यह तो दीवार काटने में लगे हुए थे और अब उधर की सुनिए—

छोटी बी और चमकी दोनों सो गई थीं। खुदा की शान है कि बच्चा उठा और उसने पेशाब के लिए कहा। छोटी बी ने चमकी से कहा। चमकी बच्चे को पेशाब कराने लगी; लेकिन उसके दिल में इन तीन आदमियों का शुबा बदस्तूर था और जब तक बच्चा पेशाब करे, उसको फिर वहम-सा हुआ और उसने बढ़कर ड्योढ़ी में से निकल कर चुपके से गरदन निकाल कर इधर-उधर देखा। यह वह वक्त था कि चोर दीवार की चौड़ाई को पार कर चुके थे और वह देखने ही को थी कि बच्चा चिल्लाया। तीर की तरह बच्चे को गोद में लेकर वह छोटी बी के पास पहुँची और उसे खतरे से आगाह किया। छोटी बी के होश खता हो गए और अब उन्हें हकीकत मालूम हुई कि मैं जो कहता था कि दफ्तर के चपरासी को रात का खाना और चार पैसे देकर जब मैं बाहर जाऊँ तो सुला लिया करो तो मना कर देना कहाँ तक दुरुस्त था। छोटी बी के तो होश जाते रहे थे। सिवा इसके कि मरदाने कमरों में होकर मय बच्चों के बाहर निकल जाएँ और माल व असबाब चोरों के रहम व करम पर छोड़ जाएँ। और क्या चारा था, मगर चमकी ने घसीटा कि चलो तो मेरे साथ। मगर तोबा कीजिए। यह तजवीज की कि—चिल्लाती हूँ। हालांकि यह तय था कि चीखना कतई बेकार होता। चोर दीवार काटकर अन्दर पहुँचकर इसके पूर्व कि ये चीखें, पड़ोसियों को

जगावें, मुंह बन्द कर देते। दरअसल एक क्षण बर्बाद नहीं करना चाहिए था। सिर्फ एक सूरत थी कि अगर चीखना भी है तो चल-कर वहीं दीवार के पास पहुँचकर चीखो ताकि घुसने से तो रोक सको। वरना अगर चोर घुस आए तो खैरियत नहीं है। लेकिन छोटी बी ने इन्कार कर दिया। और यह तजवीज की कि आओ, सब मिलकर कमरे में बन्द हो जावें। जब चमकी ने यह देखा कि वक्त जाता है तो उसने छोटी बी को आने की ताकीद करके वहीं छोड़ा और खुद लपक कर पहुँची। ड्योढ़ी के दरवाजे से झाँककर देखा। हालांकि अँधेरा था, मगर ईंटों के सरकने की आहट साफ आ रही थी। दबे-पाँव धीरे से वह उतरी और चुपके से ठहर-ठहर कर होशियारी से आगे बढ़ी। बढ़ते-बढ़ते दीवार के पास पहुँचकर दीवार से लगी-लगी बिल्कुल ही करीब पहुँच गई और उसने देखा कि सूराख काफ़ी बड़ा हो गया है। जमीन से बमुश्किल बालिश्त-भर होगा। वह बिल्कुल ही करीब आ गयी और उसने तेजी-से-ईंटें सरकती हुई देखीं। किसी लोहे की चीज से ईंटें गिराई जारही थीं।

करीब ही गोबर जमा करने का लकड़ी का फावड़ा रक्खा हुआ था। मजबूत-से मजबूत चोर का सिर फोड़ देने के लिए काफी था। उसने चुपके से अपने को इस अजीब हथियार से सुसज्जित-किया। दीवार की चिनाई चुने की पुराने जमाने की थी। इसलिये सूराख धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। चमकी इस फावड़े को लिए सूराख के करीब बैठी थी।

चमकी को जब गए जरा देर हुई और बच्चा भी फौरन ही सो गया तो छोटी बी भी डरते-डरते आ गई और दरवाजे में झाँकी। चमकी ने देखकर इशारे से बुलाया जब वह न आई तो वापस जाकर पकड़ लिया। दरअसल अब चमकी ने चोरों को भगाने के बजाय उनको पकड़ने की तरकीब सोची थी। जूता छोटी बी का उतरवा कर चुपके से उसने लाकर दीवार के सहारे जरा फ़ासले पर खड़ा कर दिया।

लकड़ी एक हाथ में दे दी और फिर अपनी जगह पर आ गई। जब सूराख काफी बड़ा हो गया तो चमकी ने देखा कि एक हाथ निकला और गायब हो गया। यही मौका था। क़रीब ही भैंस का खूंटा था। चमकी ने खूंटे से भैंस की रस्सी का फन्दा खोला और उसको खूब बड़ा करके हाथ में तैयार रक्खा। चोरों की बातों की आवाज़ें आ रही थीं और बातों से मालूम हुआ कि अब कोई दाखिल होगा। फौरन ही मिट्टी सरकने की आहट हुई और चमकी रस्सी का फंदा लेकर आगे झुकी। चोरों का कायदा है कि पहले एक पैर डालकर देखते हैं, बाद इत्मीनान दूसरा पैर डालते हैं और फिर आते हैं। सिर इस वजह से नहीं डालते कि कहीं कोई कचूमर न निकाल दे। अतः इधर चोर ने अपना पैर दाखिल किया है कि पूरा पैर आते ही चमकी ने बड़ी फुरती से भैंस की रस्सी का फँदा चोर के पैर में डालकर खींच लिया और पकड़ कर जोर से घसीटा और जोरों से चिल्लाई और फिर जो डण्डा लेकर भैंस पर पिली है तो भैंस वहाँ से भागी। इस दशा में चोर की टाँग उसमें बँधी थी। अब इधर तो चमकी ने भैंस की कमर पर लठों की बारिश कर दी और उधर चोर ने जो दुहाई खींची है तो खुदा की पनाह! चमकी और छोटी बी ने शोर मचाया है, वह अलग। किस्सा मुख्तसिर, मुहल्ला सिर पर उठा लिया। उधर बाकी चोरों ने जो देखा कि मामला नाजुक है तो भाग खड़े हुए। जरा गौर फरमाइयेगा कि चोर की सिर्फ एक टाँग अन्दर बाकी जिस्म बाहर और भैंस है कि खींच रही है घर के अन्दर। जाहिर है कि क्या हाल हुआ होगा। बड़ी मुश्किल से मुहल्ले वालों को खबर हुई वे भी चमकी की लगातार और बहुत सख्त चीखों से, क्योंकि चोर साहब तो बसबब इस अजीब तफरीह के बेहोश हो चुके थे।

मुहल्ला वाले बड़ी मुश्किल से लालटेन और लाठियाँ लेकर निकले। आकर इस अजीब सीन को देखा कि वह मजमून है कि 'एक बटा चार' के बजाय 'चोर बटा चार—यानी एक अदद भैंस

चोर साहब को सचमुच चार पर तकसीम कर रही है और अगर कुछ देर ही और लगे तो अजब नहीं कि सवाल हल हो जाता और चोर ¾ इस तरफ होता और ¼ दीवार के उस तरफ।

चोर को जब उसके हालात से निकाला गया तो अधमरा था। चमकी ने पहिचन लिया। उसका चाहने वाला सूजिया था। लोग उसे अस्पताल ले गए और पुलिस में सूचना दी और फौरन पुलिस मौके पर पहुंची।

हम नहीं कह सकते कि किसी सख्तजानने कभी इससे ज्यादा सब्र आजमाने वाली और 'चूतड़-शिकन'[1] चोट भी माशूक सितमगर[2] के हाथों पर बरदाश्त की होगी। हमारी जानकारी में इश्क में जो दर्जा सूजिया ने हासिल किया वह आजतक न तो किसी ने हासिल किया और न कर सकेगा। सैकड़ों ने गरदनें कटाईं, किसी ने बसूला से सिर फुड़वाया, किसी ने बरछियाँ और तलवारें सहीं। मगर टाँगे चीर कर इस तरह फेंक दिया जाना और चीज है और वह भी माशूका के हाथों। जब मैं सूजिया की किस्मत पर गौर करता हूँ और इस बात पर कि खुदा ने गरीब की जवानी मिट्टी में मिलानी लिखी थी तो किसके हाथों! तो मेरे ऊपर दया छा जाती है।

दूसरे ही दिन मुझे तार से सूचित किया गया और मैं चूँकि दूर नहीं था लिहाजा रात के ग्यारह बजे घर पहुंच गया और कुल हाल से आगाह हुआ। न पूछिये कि चमकी और छोटी बी का क्या हाल था। अब तो वह छोटी बी की चमकी हो गयी, 'मेरी चमकी' कहते छोटी बी के मुंह से फूल झड़ते थे। आज छोटी बी के सामने चमकी ने बड़ी आजादी से बढ़-बढ़ कर अपने कारनामे सुनाये। बड़ी आजादी और चहलसे के साथ खूबहँस-हँस कर छोटी बी के डरने का और कायरता का खाका पेश कर दिया। ऐसा कि हँस मर छोटी बी

---

१. तोड़ने वाली २. जालिम।

ने कहा कि 'चल मरदमी'''अभी देती हूँ जूती ।'

मगर नहीं, छोटी बी खुश थी—बेहद खुश थी । दरअसल वह भी तो उस फतह में शरीक थी जिसके सबूत में वह लकड़ी दिखायी गई जो छोटी बी के हाथ में थी । मालूम हुआ कि इस लकड़ी को पुलिस में पेश करने की कोशिश की गयी थी ।

सूजिया का हाल सुनिये । दूसरे रोज मैं अस्पताल में उसको देखने गया । डाक्टर ने कहा कि उसका कूल्हा उतर गया है, घुटना टूट गया, टाँगें सचमुच चटख गयीं—ऐसी कि उम्रभर के लिये बेकार हो गया; लेकिन बचने की पक्की उम्मीद है बशर्ते कि अन्दर की चोटें खतरनाक सूरत न अख्तियार करलें; क्योंकि झटकों और चोटों के सबब अन्दरूनी चोटें ऐसी पहुँची थीं कि उसको खून आ रहा था और ख्याल था कि गुरदों वगैरह के समीपवर्ती स्थानों में सख्त चोट आयी है । मैंने जब देखा तो अर्ध चेतनावस्था थी । आँखें खोलने से भी असमर्थ था । सिर्फ हलकी-सी कभी-कभी कराहने की आवाज आती थी ।

मुझको नहीं मालूम था कि जिस वक्त मैं अस्पताल में था, चमकी भी वहाँ मौजूद थी । सूजिया को देखकर घर की तरफ चला तो थोड़ी दूर चलकर चमकी मिली । वह भी घर जा रही थी । मुझको देखते ही उसके मुँह से धीरे-से निकला, 'आलीजाह कहाँ गये थे ?'

मैंने उसके चेहरे पर विचित्र प्रसन्नता देखी । दरअसल रात को जब सूजिया की टाँग अपने गले की रस्सी में बाँध कर हमारी भैंस ने नाच फरमाया था तो इत्तिफाक से चमकी के पैर पर भैंस का पैर पड़ गया । कुचला तो नहीं गया, न ऐसा जख्म आया, मगर हाँ, सूज गया था और हलकी-सी लँगड़ाहट थी । मैंने यह न बताया कि सूजिया को देखने गया था, बल्कि उसने बताया, कि छोटी बी ने बड़ी ताकीद के साथ अस्पताल भेजा था पर अस्पताल वालों ने तवज्जै तक न की । कोई मामूली दवा फुरैरी से लगा दी । जल्दी से यह कह

कर चमकी ने कहा—'आलीजाह, तुम मुझे मेरे गाँव पहुँचा दो।'

मैं एकदम से गोया चौंक पड़ा। उसके हरे-भरे चेहरे पर एक दम में रंज व गम की घटा छा गयी। मैं समझ गया, लेकिन मैंने वजह पूछी। उसने पहले तो कुछ नहीं कहा, मगर फिर यह वजह बतायी कि 'तुम मुझसे नाराज हो।' मैंने इन्कार किया तो वह फिर फट पड़ी।

सच्चाई यह थी कि वह मुझसे चोरों की तरह मुहब्बत नहीं करना चाहती थी। छोटी बी ने उसको सही अधिकारों से वंचित कर रक्खा था। वह बैल की तरह घर का काम करती थी। यह भी जानती थी कि मालिक की खिदमत बी या ठकुरानी नहीं किया करतीं लौंडियों और बाँदियों के भी कुछ अधिकार होते हैं। आका दरअसल घर की बीवी का तो मालिक होता है, मगर इस तरह पूरा मालिक नहीं होता है। यह सारी मेहनत व मशक्कत किस लिये थी और फिर आखिरी सवाल 'आलीजाह! क्या तुम मुझे इसीलिये लाये थे?'

हालाँकि वाकया यह है—इसीलिये लाया था; छोटी बी ने इसी लिये बुलाया था—कि दिन-रात मेहनत करती रहे और इश्कबाजी या जोरू बनाने के लिये हरगिज नहीं लाया था।

लेकिन मैंने उससे यह नहीं कहा। उसको दिलासा दी, समझाया-बुझाया और अपनी मुहब्बत का यकीन दिलाया। खुद उसका दिल भी यह बात जानता था, मगर आगाह भी कर दिया कि अगर जरा भी अपने अधिकारों के लौटाने की बात की तो मेरी तो आफत आएगी लेकिन याद रहे कि इतनी जूतियाँ पड़ेंगी कि चाँद पिलपिली हो जायगी।

यह सुनकर हँसने लगी। कहने लगी—'आलीजाह! तुम बहुत अच्छे हो, छोटी बीवी भी अच्छी हैं। मैं जानती हूँ वह बहुत अच्छी बीवी हैं।'

मैंने कहा—'अभी तो मैं भी कहता हूँ। मार पड़ेगी और अजीब बात नहीं कि निकाल दी जाओ।'

उसने घृणाभरे स्वर में कहा—'हूँ', और गरदन को एक हरकत दी।

मैंने कहा—'तू नहीं निकलेगी।'

बोली—'नहीं।'

मैंने कहा—'और अभी गाँव जो जाने को जो कहती थी।'

कहने लगी—'तुम भेज दो तो चली जाऊँगी।'

मैंने एकदम से बातों का रुख बदला। इस किस्से को छोड़कर कहा—'क्यों री, क्या तू जूतियाँ खायगी तब मानेगी?···मेरे सामने तू क्यों नहीं नाचती?'

यह प्रसन्नतासूचक वाक्य सुनकर बाग-बाग हो गई। हम दोनों घर के दरवाजे के करीब पहुँचे थे। मैंने उससे वायदा लिया। कहने लगी कि अब की बार जरूर नाचूँगी। इन्कार नहीं करूँगी। यह कहते हम दोनों मकान में दाखिल हुए। अब भी बातें करते हुए अपने चेहरे पर गजब की मुस्कुराहट और चेहरे पर शरारत इकट्ठा करके बोलती रही। मैंने पूछा—'आखिर क्यों नहीं नाचती?'

कहने लगी—'आलीजाह, शरम आती है।'

'शरम···?' मैंने कहा और एकदम से उसके गले में दोनों हाथ डालकर मैंने मुँह चूम लिया। वह तेजी से अन्दर दाखिल हुई। मुस्कराकर मुड़कर एक बार देखा और चली गई। मैं जान-बूझकर लौट गया और एक-दो मिनट बाद घर में आया। खाना तैयार था। जल्दी से खाना खाकर दफ्तर चला गया।

चमकी की तबीअत में जल्दबाजी थी, वह पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न-वदन थी, ज्यादा हँसमुख थी। जब आँखें चार होतीं तो मुस्करा उठती थी या एकदम से शरमा जाती थी। मैं खुद उसे देखकर बेकल-सा हो जाता था।

शाम को दफ्तर से आया तो क्या देखता हूँ कि छोटी बी बैठी चमकी का पैर सेंक रही है और वह भी निहायत ही तवज्जह से।

मैंने इस गैरमामूली तवज्जह की वजह पूछी तो दोनों मुस्कराने लगीं। 'यह क्या मामला है ?' मैंने पूछा तो चमकी ने मारे हँसी के गुड़ी-मुडी होकर मुँह छिपा लिया। मैंने कहा—'तुम दोनों अव्वल नम्बर की मूर्ख हो।'

मुझको दरअसल नहीं मालूम था कि एक बड़े जबरदस्त गाने-बजाने के जलसे की तैयारी हो रही है और यह पैर का इलाज भी उससे ताल्लुक रखता है।

१८

एक रोज की चर्चा है कि दफ्तर से आया तो क्या देखता हूँ कि पलंग पर सुनहरे और रुपहले गोटे का एक फैलाव है। छोटी बी चमकी के लिए जोड़ा बना रही थी। वह जो उसने चोरों की फतह के इनाम में बनाने को कहा था। यह जोड़ा कैसा था ? इतना गोटा टँका कि सिर से पैर तक चमकी सचमुच चमकी हो जाय। जोड़ा देखते ही मालूम हो जाय कि पहिननेवाली का नाम चमकी है। बात दरअसल यों है कि यह तो एक बहाना था वरना असल मतलब यह था कि नाच-गाने के लिए कोई ऐसा जोड़ा होना चाहिए। गोया वैसे पहिनने में नहीं आयगा। मैं देखते ही समझ गया। और उसी दिन रात को चमकी खाना ला रही थी तब उसने रहस्यमय ढंग से बताया कि यह जोड़ा किसलिए है और यह कि परसों गाना-बजाना जोर से होगा। 'और तू मेरे सामने नाचेगी ?' सिर हिलाकर मुस्कराकर उसने कहा—'हाँ !' मुझे यकीन नहीं था कि छोटी बी मुझे

यह तमाशा दिखाएगी और दरअसल छोटी बी का इरादा नहीं था; लेकिन छोटी बी की एक सहेली के भाई की शादी थी और तजवीज यह थी कि चमकी को जनानखाने में नचायें। यह उसकी तैयारियाँ थीं। और मुझसे छोटी बी ने पूछा था तो मैंने दबी जबान से हूँ-हाँ करके उसकी खिलाफ़त की थी। खुद सोचिए, मैं यह कैसे गवारा कर लेता कि मेरी जोरू पराए जल्सों में जाकर नाचे। मेरी मर्जी खिलाफ पाकर छोटी बी ने यह सोचा कि मुझे राजी करे। मेरे विशेष ऐतराजात यह थे कि आखिर चमकी के नाच में क्या खासियत है और यह कि वह ऐसी बातों से तंग आकर भाग जायगी। अभी उसको दिन ही कितने हुए हैं। वह जब अपने घर में नाचते ही शरमाती है तो उसको बेमतलब दिक करना ठीक नहीं है। और आज जब रात को फिर बातें हुई तो छोटी बी ने मुझे चमकी के नाच और गाने की खासियतें बतायीं और दिखाने का वायदा किया। मैं खुद देख लूँगा। यह भी जाहिर हो जायगा कि वह नहीं शरमाती है, यह भी मालूम हो जायगा कि वह तो खुद रजामन्द है, मगर मैं उन शरई हीलों पर जमा रहा और लापरवाही का बयान करता रहा।

शनिश्चर का दिन था और छोटी बी ने बच्चों को जल्दी से खाना खिलाकर सुला दिया और जब बच्चे सो गये तो छोटी बी ने नाच की तैयारी की। ध्यान रहे कि मैं नैतिकता की शिक्षा कदापि नहीं दे रहा हूँ, लेकिन इसके पूर्व कि मैं नाच का जिक्र करूँ, कुछ उसके बारे में अर्ज करना चाहता हूँ।

मुझको नहीं मालूम था कि नाच किसको कहते हैं और आपको भी गालिबन नहीं मालूम है। एक, तो वह नाच है जो बरसों की मेहनत व मशक्कत के बाद पेशेवर औरतों को आता है और एक असली और कुदरती नाच है—गैरपैदायशी, गैरमुनासिब और नाजायज तथा पैदायशी, कुदरती और जायज। आपने देखा होगा कि इंजन स्टीम से चलता है और लोग उसको धकेल कर भी ले जाते

हैं। यानी स्टीम के जोश से और हाथों की ताकत से, दोनों तरह चलता है। ठीक यही नाच का हाल है। मुहब्बत के जोर से और रुपये-पैसे के जोर से। दोनों तरह देखिए, हरकत वही है। पेशेवर औरत पैसे के जोर से फरमाइश के मुताबिक मजाकिया गीत गाती है। इस दशा में उस नेकवख्त को न तो दुनिया में किसी से इश्क होता है—सिवाय पैसों के; और जहाँ तक फर्क का सवाल है इस शब्द के भाव को समझने से असमर्थ है। मगर वाह रे इश्क और वाह रे हुनर! जो नहीं चाहता उज्र पर उज्र कर रही है; लेकिन हाजिरीन जलसा की जिद से जुदाई के सीन मय गाने और नाच के दिखाने पड़ते हैं। बनावटी तौर पर वह आवाज भी दर्दनाक बना लेती है। जज्बात की खूब नकल करती है और हाव-भाव भी पैदा कर लेती है तथा हाजिरीन जलसा खूब ही तो दाद[1] देते हैं। मैं उसको बगैर स्टेशन का इंजन कहा करता हूँ और मुझ ऐसे बदमजाक के लिए दरअसल इस किस्म का गाना, एक कुत्ते के भौंकने से, बाद तहकीकात, बेहतर साबित हो चुका है, मगर यह समस्या अभी तक विवादास्पद है कि आया खुशी के मौके पर नाच की गरज से हजरत ऊँट की खिदमतों से फायदा उठाना बेहतर साबित होगा या एक पेशेवर औरत से। खैर, उसको तो हम ऐसे बदमजाकों के मुतैल्लिक एक कोष्ठक में लिखे हुए वाक्य से अधिक अहमियत न देंगे। मैं असल किस्से पर आता हूँ। आइये, मैं आपको एक विचित्र ड्रामा दिखाऊँ।

छोटी बी ने नाच-गाने की तैयारी की। श्रृंगार वाली मेज जिस कमरे में थी वह बन्द कर दिया। मैं बराबर बरामदे में बैठा हँसता रहा। थोड़ी देर बाद बराबर वाले कमरे की तरफ का दरवाजा खुलता मालूम हुआ तो उधर गया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। क्या देखता हूँ कि छोटी बी एक बड़ा-सा आसमानी रंग का साफा

---

१. प्रशंसा।

बांधे हुए है। चूड़ियाँ वगैरह उतार दी थीं। गँवारू फैशन की मरदाना धोती पहने थी। दोनों कानों में बजाय बुन्दों के बड़े-बड़े पीतल के मुंदरे थे। सुरमा से निहायत ही वाहियात और भद्दी मूँछें बनी हुई थीं। मुझे देखते ही भागीजो हँसकर तो मैंने झपट कर पकड़ लिया और अपने 'आलीजाह' को कलेजे से लगाकर'''मगर चमकी ने दौड़ कर छुड़ा लिया—'मेरा आलीजाह'''लाहौलवलाकूवत'''छोटी बी का पगड़ा अलग गिरा। हम सब का मारे हँसी के बुरा हाल था। छोटी बी 'आलीजाह' बनी थी। चमकी अपने भड़कीले लिबास में थी और ऐसा ही एक जोड़ा अब मेरे लिए हाजिर था।

'यह क्या ?' मैंने पूछा जब छोटी बी कपड़े लेकर बढ़ी।

मालूम हुआ कि यह लिबास मेरे लिये है। छोटी बी आलीजाह हैं। चमकी उसकी माशूका और मैं उसकी सौत ?

'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैह राजऊन'

हे ईश्वर ! औरतें भी किस कदर प्यारी और जादूभरी चीज हैं। छोटी बी की नौजवान आँखें खुशी से चमक रही थीं। या मेरे अल्ला, मेरे कलेजे में उसके रूप-लावण्य की बरछियाँ-सी घुसी जाती थी। उसके गोरे-गोरे हाथ, नंगे पैर, धोती का अर्धनग्न लिबास, स्फटिक की तरह, चमकती हुई पिंडलियाँ चेहरे पर मुस्कुराहट ;लोट रही थी और मैं कह रहा था—'यह क्या मूर्खता है !' मुझे चमकी का सा लहँगा पहिनाया गया, फिर ओढ़नी तथा सलूका। और फिर मेरा यह हुलिया देखकर छोटी बी और चमकी मारे हँसी के लोट-पोट हो गयीं। छोटी बी ने चमकी के चेहरे पर खूब पाउडर मला, सुर्खी लगाई ऐसी कि सचमुच नाटक की परी बन गई। चमकी का भद्दा जेवर भी मैंने पहिन लिया। अब हम तीनों गाने के कमरे में आए।

छोटी बी को चंग बजाना नहीं आता था और चमकी गाँव की रहने वाली, चंग खूब बजाती थी। हीरा से उसने चंग मँगाया था।

मेरी आँखों को
मेरी खूबसूरत नाक को
मेरी चमकती हुई पेशानी को
मेरी शरमीली आँखों को
मेरे गालों की नरमी
मेरी साँसों की गरमी

अरी, कमबख्त, सौतों की मारी, क्या तुझको कोई बूढ़ा नहीं मिलता ?

(यह कहती हुई चमकी बल खाती, गुनगुनाती, गिटकड़ियाँ यानी छोटी बी के पास पहुँच करके बलखाती है ।)

मेरे आलीजाह, तुम इस बदसूरत को छोड़ दो ।

ऐ मेरे आलीजाह, तुम इस हरजाई को छोड़ दो ।' (यानीमुझको)

और फिर, औंधी-सीधी गालियाँ ! मेरी तरफ उँगली उठा-उठा कर ऐसी कि छोटी बी का और मेरा हँसी के मारे बुरा हाल हो गया । छोटी बी ने कहा—'मर्दानगी, यह गाली-गलौज रहने दे'''शरम नहीं आती तुझको'''।

जवाब में चमकी की आँखों की चमक और बढ़ गई । भौंहें फड़कने लगी और उसने तान खींची ।

'आलीजाह—आलीजाह !'

तुम्हारी साँस की गरमी अब भी मेरे गालों के रोंगटों को गरमाती है ।

तुम्हारी बातों का झुकाव मेरी गर्दन पर अब भी महसूस हो रहा है ।

तुम्हारी गोद का दबाव'''अब भी महसूस करता है ।

और तुम्हारे बोसों की गरमी से मेरे होंठ सुर्ख हो गए हैं ।

अय मेरे आलीजाह ! अय मेरे अलीजाह ! मैं अपने माथे की बिन्दी अब भी ढूंढ़ती हूँ ।'

मैं इस जंगली लड़की के हाव-भावों और चेष्टाओं पर मर मिटा। उसकी चेष्टाओं में किस कदर सचाई थी! वह नाच रही थी या सचमुच चंग को छोड़कर पंजे झटकने लगी थी। बजाय नाच के वहाँ तो सचाई की शोभा सामने थी। उसने फिर शुरू किया—

'अय मेरे आलीजाह! आलीजाह!

मैं तुमको कलेजे से लगाऊँगी।

मैं तुम्हारे सीने से चिमटकर बड़ी-बड़ी साँस लूँगी।

मैं तुम्हारी गर्दन में मुँह छिपा लूँगी।

मैं अपने काजल से तुम्हारा कन्धा काला कर दूँगी।

मैं तुम्हारी गोद में फँस जाऊँगी।

अय मेरे आलीजाह! तुम मेरे साथ आओ।'

किस मजे से और किस तरह बता-बता कर चमकी ने खड़े होकर, बैठकर, बल खा-खाकर, छोटी बी के आगे घुटने टेक-टेककर और चंग की आवाज पर नाच-नाचकर यह गीत गाया है कि मुझे तो लुटा-लुटा दिया।

इसके बाद फिर मेरे ऊपर नजला गिरा और फिर मुझे वही अश्लील गालियाँ और फिर अपने आलीजाह पर क्रोध।

'अय, मेरी काम-वासनाओं के केन्द्र (छोटी बी की ओर देखकर)

अत्याचारी और दुष्प्रवृत्ति देवता!

झूँठे प्रेम-पात्र!

अय, दुष्प्रवृत्ति और आवारा प्रेमी!

अय, कच्चे लोहे के खाँड़े!

तुझको शरम नहीं आती—शरम नहीं आती।

अय मेरे आलीजाह! खुदा तेरी दाढ़ी सौतों में तकसीम कर दे।'

और यह कहकर उसने बनावटी तौर पर छोटी बी की दाढ़ी नोंचने का जो सीन दिखाया है तो बस पूछिए न। चंग फेंककर खुद भी हँसी का गोल-गप्पा बन गई।

फिर इसके बाद मुझसे कहा गया कि घूंघट निकालो। लाहौल-विला क़ूवत। मैंने बिगड़कर कहा—'तुम दोनों मूर्ख हो।' मगर तौबा कीजिए। औरत बुरी बला है, मर्द है कौन चीज! ये दोनों बहुत जल्द यह बहस कर रही थीं कि जितना घूंघट मैंने निकाला है उतना ही काफी होगा या और फिर उसके बाद। मुझे यह खयाल करके तसल्ली हुई कि यूरोप में मरद नाचते हैं और वैसे वाजिदअली शाह खुद जनाने कपड़े पहिनकर नाचते थे।

खुदा बचाए जवानी और खूबसूरत जोरुओं से। अजीब मूर्ख बना देती हैं! संक्षेप में, रात के दो बजे तक यही हँसी-खेल करते रहे। नतीजा यह निकला कि जिस वक्त छोटी बी ने साफा बाँधे, मरदाना लिबास पहिने, मुझसे मुस्कराकर गले में बाँहें डालकर पूछा है, तो मैंने अपने 'आलीजाह' को फिर गले से लगा लिया और कायल हो गया कि सचमुच चमकी का नाच भी अजीब चीज है। तुम इसको जहाँ चाहो ले जाओ और नचाओ। मगर इस वक्त तो खुदा के लिये मेरे कलेजे से अलग हो जाओ और मैंने अपनी खूबसूरत और प्यारी बीवी को खूब-सा कलेजे से लगाया, दुआएँ दीं कि क्या मजे का तमाशा दिखाया है। या खुदा! जोरू हो तो ऐसी! और यह सचाई है कि मैं इस कदर मतवाला हो रहा था कि देर तक छोटी बी को कलेजे से लगाये बेकल-सा रहा और चमकी? न पूछिए। छोटी बी तो कलेजे से लगी है और वह जालिम दूर ही से दिल में है कि ऐसी चुटकियाँ ले रही है कि चैन नहीं पड़ता।

चमकी कपड़े बदल कर चली भी गयी। लेट भी रही। बराबर देखती गई—मुड़-मुड़कर और हम दोनों मियाँ-बीवी एक-दूसरे की मुहब्बत में ओत-प्रोत चमकी के नाच की तारीफ कर रहे थे। औरत को नहीं मालूम कि मर्द मुजस्सिम[1] गद्दारी है। कहाँ छोटी बी और

---

१. मूर्तिमान (साकार)।

कहाँ वह गँवार चमकी। एक नूर था कि उसके सामने एक बेवा का मनहूस चिराग। कहाँ गुलाब का फूल और कहाँ भटकटैया का काँटा! भला छोटी बी की चमकी से तुलना! अली के पसीने और गुलाब की बू में अन्तर है—बहुत!

१६

दरअसल यह रात प्रलयंकारी थी। मेरा खुद का यह हाल हुआ कि चमकी की चमक दिल में घुस गयी। खयालात जबान की सतह पर आते मालूम दिये। क्या यह मुमकिन है कि चमकी के साथ यही रवैया रक्खूँगा। क्या यह मुमकिन है कि चमकी इसी तरह मुझसे अलग रहेगी। वह तो शादीशुदा है। दुनिया का नियम है कि बड़े-बड़े घरानों में बीवियाँ बाँदियों को हुक्म देती हैं कि जाओ, मियाँ आराम फरमाते हैं। सिर में तेल डालो या हाथ-पैर दाबो। क्या छोटी बी बच्चा है? क्या जानती नहीं कि चमकी भी आखिर इन्सान है। क्या छोटी बी को नहीं मालूम कि चमकी भी तो आखिर जोरू है? खूब जानती है। यह भी जानती है कि मैं उसको छोड़कर चमकी का हरगिज नहीं हो सकता। जो प्यार छोटी बी से है, वह चमकी से कैसे मुमकिन है? मगर, आखिर खुदा के यहाँ भी तो जवाब देना होगा। यह खयाल हर वक्त दिल में और चमकी की सूरत आँखों के सामने। उधर चमकी का यह हाल कि आँखें उसकी मुझे और भी नशीली तथा चेहरे की दिलकशी हजार गुनी मालूम देती। हाव-भाव और अदाओं का माशूकपन जान खींच लेता। रात की तस्वीरें सामने आकर इस बुरी तरह चमकतीं कि तड़प जाता। जब आँखें

चार होतीं, एक तीर-सा दिल में उतर जाता। गजब है खुदा का, इस जंगली लड़की ने क्या जादू कर दिया!

उधर चमकी का यह हाल कि न सिर्फ आँखों, बल्कि हाव-भाव सब ही भुगली पर तुले हुए हैं। वह मजमून कि दोनों ओर बराबर मुहब्बत की आग भड़क रही थी।

और छोटी बी की न पूछिए। भरोसे और इत्मीनान के साये में बेखबर, आँखें बन्द मरदूद की। एक अजीब नाव में मजे से गोया बही चली जा रही है। क्या औरत जात खुद को इतना धोखा दे सकती है?

आठ-दस दिन अजीब हालत में गुजरे। इस दौरान में सिर्फ दो बार चमकी को गले लगाने का मौका मिला और उसको भी मैंने दहकते हुए अंगारे की तरह पाया। यहाँ तक कि छोटी बी ने कहा कि मैं कुल चार दिन के लिए जाती हूँ—मय चमकी के अपनी सहेली के भाई की शादी में। सचमुच इस विवाह के नृत्य-संगीत विभाग की छोटी बी आनरेरी सैक्रेटरी थीं। मीरासिनों का चुनाव भी छोटी बी के सुपुर्द था। और छोटी बी का इरादा मालूम होता था कि इस मौके पर बड़ा जबरदस्त कमाल किया जाएगा।

मैंने खाने-पीने का इन्तजाम कर लिया था और छोटी बी घर-बार अकेला मेरे ऊपर छोड़कर चली गईं। मेरा घर में बड़ा जी घबराया। इस कदर घर-घुसना आदमी कि दोस्तों से हमेशा डरता रहा। देखते ही लोग कहते कि क्या जोरू को ससुराल भेज दिया? मगर वक्त तो काटना ही था। इधर-उधर गप-शप में वक्त गुजारता। सबसे ज्यादा अड़ंगा भैंस का था। एक घोसी पहले दिन आया। दूसरे दिन मैंने दूध-दही की फजीहतों से तंग आकर भैंस को इसी घोसी के यहाँ मेहमान बनाकर भेज दिया।

तीसरे दिन एक अजीब ही मामला पेश आया। अकेलेपन के कारण रात गए घर आता था। हवेली में नयी-नयी बिजली लगी

थी। अँधेरा घुप रहता था। कोई रात के बारह बजे होंगे। घर टटोलता हुआ कमरे में पहुँचा। सर्दी के दिन थे। बत्ती जलाई; कपड़े उतारे और सीधा सोने के कमरे में गया और फिर बत्ती गुल करके मसहरी का पर्दा उठाकर लिहाफ खींचकर लेट रहा। मेरी आदत है कि सीधी करवट से बायाँ पैर पलंग की पट्टी पर तकिया रखकर उस पर सहारा लेकर सोता हूँ। पड़ रहा। नींद आने ही को थी; बल्कि आ गई थी कि मुझे कुछ सन्देह हुआ। एकदम से आँखें खुल गयीं। यह कौन ? घबराकर मैंने कहा—'छोटी बी।' आवाज आयी, 'आलीजाह...' मेरे मुँह से असावधानी की अवस्था में निकला—'चमकी।' उसने प्रेमावेश में कहा—'आलीजाह...।' मैंने उस जंगली लड़की को गले लगाते हुए पूछा—'तू कहाँ से और किधर से आ गई ?' मालूम हुआ कि पूर्व ही से यह तरकीब की थी कि पीछे के मरदाने कमरे का दरवाजा सदैव अन्दर से बन्द रहता है। बजाय अन्दर से बन्द करने के छोटी बी ने ताला बाहर से डाल दिया था। इस ख़याल से कि न मालूम किस वक्त आना हो। मैं घर पर मौजूद न हूँ तो उधर से खोलकर चली आयें। और शादी की गड़बड़ में छोटी बी ने कुंजी खो दी है। छोटी बी के सीने में दर्द था। दिन और रात जागी थी और जागना था। बच्चों को खुद सँभाला और चमकी को गाने की पार्टी के साथ दुल्हिन वालों के यहाँ कुछ और औरतों के साथ भेजा। वहाँ से बेगार टाल, छोटी बी के पास जाने का बहाना करके वह चली आई। कुंजी उड़ा दी थी।

सर्वप्रथम तो मैंने बत्ती जलाई और उसको घसीटकर निकाला कि वही गाओ, मगर असल औजार यानी चंग गायब। मैंने कहा, 'कुछ चिन्ता नहीं।' हारमोनियम निकाल लाया और मैंने पिछली रात वाला वही तूफानी गीत मय उसी एक्टिंग के सुना, तब कहीं जाकर चैन पड़ा।

रातभर हम दोनों मियाँ-बीवी नहीं, बल्कि आशिक-माशूक

प्यार की बातें करते रहे और अभी सुबह न हुई थी कि चमकी चली गई। उसके दूसरे दिन छोटी बी आ गई। बेहद खुश, लेकिन हद से ज्यादा सुस्त और थकी हुई थी। चमकी ने शादी के जल्से का रंग बाँध दिया और वहाँ खूब-खूब गाने हुए। शादी की धूम-धाम में चमकी की गैरहाजिरी का किसी को इल्म न हुआ।

अब हाल मेरा यह कि चमकी ने दीवाना कर दिया था।

२०

यह ताजे वाकआत किसी तूफान के शुरुआत के आसार नजर आते थे जिनका मुझे अभी से इल्म था। खुद ताज्जुब होता है कि छोटी बी की आँखें बिल्कुल बन्द थीं, मगर नहीं, इस जोश के प्रभाव से छोटी बी को तो मैं और भी कलेजे से लगाए लेता था। मेरी और उसकी मुहब्बत इश्क की हुदूद से भी बढ़ चुकी थी और हम दोनों दरअसल एक जान और दो जिस्म थे। और चमकी का खयाल या चमकी की मुहब्बत इससे अधिक कभी न मालूम दी कि एक बहुत ही वफादार, निहायत दिलचस्प और प्यारी नौकरानी है जो हम दोनों की सेवा के लिए है और सेवा तथा स्वामि-भक्ति ने उसको इस कृपा का पात्र बना दिया है और फिर उसको भी तो आखिर इस घर से सदैव के लिए हमने सम्बद्ध कर लिया है।

इन घटनाओं के बाद ही चमकी की दशा में एक महान् परिवर्तन पैदा हुआ। बात-चीत, उठने-बैठने, हँसने-बोलने में उसको कुछ आजादी हासिल हो गई। हँसी-मजाक और जिन्दादिली की भी

उसको सूझी। मुझको वह 'आलीजाह' शुरू से ही कहती थी। कभी-कभी छोटी बी भी मजाक में 'आलीजाह' कहने लगी। मैं भी छोटी बी को 'आलीजाह' कहने लगा और चमकी अब बेतकल्लुफी सीख रही थी। जोर-जोर से बोलने लगी। चीखने और हँसने लगी और वाक़या तो दरअसल यह है कि इस रंग में औरत हो तो सचाई नहीं छिपती और फिर घर के घर में। फिर यह कैसे सम्भव है कि मेरी दशा परिवर्तित नहीं होती। नतीजा यह कि बहुत जल्द मैंने अनुभव किया कि छोटी बी एकदम से चौंक पड़ी। क्या कोई मुझे और चमकी को देखकर यह कह सकता था कि इन दोनों को एक-दूसरे से कोई लगाव नहीं? अतः मैंने गौर किया कि छोटी बी हम दोनों की हरकतों को बड़े ग़ौर से देखती है। चमकी तो मूर्ख ठहरी। उसको इतनी कहाँ समझ या बुद्धि कि बार-बार ऐसी बातें न करे कि जिससे कोई खास शक हो। और मेरा यह हाल कि एक अजीब किस्म की घबराहट में रहने लगा। बार-बार यही जी चाहता था कि क्यो न इस समस्या को छोटी बी से तय कर लिया जाय। और क्यों न छोटी बी से चमकी के अधिकार तय कर लिए जायँ। आखिर क्या कारण है जब कि दस्तावेज की एक नकल खुद छोटी बी के पास है। उसमें लिखा है कि चमकी के क्या अधिकार हैं और छोटी बी को सब मालूम है कि अगर चमकी के सन्तान होगी तो उसके क्या अधिकार होंगे। फिर यह चोरी कैसी? मालूम हुआ, दोष स्वयं मेरा है। प्रारम्भ ही से गलत रास्ता अपनाया। मैं इस असमंजस में था कि मामलात स्वयं ही एक विशेष दशा पर आ गए।

कोई पन्द्रह दिन भी न हुए होंगे कि एक नया मामला पेश आया। हर प्रकार की सावधानी बरतते हुए भी गलती हो गई। मैं कमरे में खड़ा गुनगुना रहा था। चमकी पास की कुर्सी को झटक रही थी। मेरी तरफ कभी मुस्कराकर देख लेती। आँखों में सरसता, चेहरे पर कम्पन और कार्य में व्यस्तता। रह-रहकर गुन-

गुनाती, निहायत ही धीरे-से एक गिटकिड़ी[1] सी लेती, जैसे तंबूरे का तार झंकृत होकर रह गया। बस, झनझनाती-सी आवाज का हल्का पुट-सा आता—'आलीजाह'···सामने बरामदे में छोटी बी बैठी थी और यह उठकर रसोईघर की ओर गई। यद्यपि वह बराबर वाले कमरे में घुसी। मैंने झुककर छोटी बी को देखा—फिर चमकी को। एक जादू-सा चमकी के चेहरे पर कौंध गया; मैंने बेअख्तियार होकर गले से लगा लिया और लगाया ही था कि सामने करीब छोटी बी···। घबराकर मैंने चमकी को छोड़ दिया। उसने मुड़कर देखा और फुर्ती से वह कमरे से निकल गई और उधर एक खौफनाक गरज के साथ छोटी बी ने घर सिर पर उठा लिया। अब मैं खुदा के वास्ते देता हूँ। कुछ कहना चाहता हूँ; मगर वह रोती हुई जूती लेकर जो उठी है तो सीधी चमकी पर! पकड़कर गरीब को मारे जूतों के सचमुच चुरकाकर रख दिया। और जहाँ तक फजीहत करने का सवाल है, कोई शब्द उठा न रक्खा, और हुक्म यह है कि निकालो इस हर्राफा को।

मैं क्या कहता। न मैं खुद उसे बुलाने गया था और न निकालने वाला। तुम्हीं ने बुलाया था—निकाल दो। 'हाँ, मैं इसको निकाल दूँगी। अभी-अभी, खड़े-खड़े···।' और फिर झुक पड़ी चमकी पर। चमकी ने यह तरकीब की कि अपनी चारपाई पर मुँह देकर गुड़ी-मुड़ी बनकर पड़ गयी। चाहे मारो—चाहे पीटो, निकाल सको तो निकाल दो। वरना जिस तरह बने, मारो-कूटो। न जवाब, न बदला। छोटी बी ने जबान से, जूतों से, हाथ से—सब तरह कोशिश की और यह कार्यवाही न मालूम कब तक जारी रहती कि छोटी बी चमकी की कोठरी से निकली। चमकी ने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया और छोटी बी ने ताव में आकर बाहर से कुण्डी लगा दी,

---

१. तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।

और अब हम दोनों मियां-बीबी में महत्वपूर्ण बातें हुईं। मैंने सारा दोषारोपण छोटी बी पर किया। उसको स्वीकार था। निरुत्तर थी। मैंने स्वीकार किया कि मैंने गलत प्रोग्राम बताया जिससे यह न मालूम हो सका कि हम दोनों अजमेर कई दिन रहे। चमकी ने भी गलत बताया। जिम्मेदार मैं खुद था मगर सोचिए तो मैंने कौन-सा अत्याचार किया। क्या वह मेरी विवाहिता पत्नी नहीं है ? मैंने कौन-सा नैतिक अपराध किया ? कौन-सा मैंने पाप किया ? छोटी बी ने रोते हुए सब स्वीकार किया कि निस्संदेह मैंने कोई अपराध नहीं किया। चमकी का भी कोई दोष नहीं है। फिर यह झगड़ा कैसा ? कुछ भी नहीं। छोटी बी ने कहा—'गलती मेरी है। मैं तो यह जानती ही नहीं। लो, अब इस झगड़े को समाप्त करो। बाज आई मैं तो नौकरानी से। तुम इसे विदा करो। आज ही विदा कर दो।'

स्पष्ट है, मुझे इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी। मैं तुरन्त सहमत हो गया। समझाकर नरमी से मैंने कह दिया कि अगर वापिस करना है, खुशी से वापस कर दो, जैसे राजी-खुशी से बुलाया है। उसकी विदा का रुपया देकर वापिस कर दो। बड़ी मुश्किल से चमकी ने दरवाजा खोला। उसे सूचित किया गया कि मारा-पीटा नहीं जाएगा और बड़े कायदे के साथ उसे अपने निश्चय से अवगत कराया। उसने आँसू पोंछते हुए उठकर गौर से एक बार हम दोनों को देखा और फिर दौड़कर छोटी बी के कदमों में सिर रख दिया और लगी फूट-फूटकर रोने। छोटी बी ने अपनी जान छुड़ाकर उसको अलग किया, और कहा कि कल तक रवाना कर दूंगी। मैंने कहा कि पहले उसकी माँ और हीरा को खत लिखना होगा, छोटी बी ने कहा, खत अभी लिखा जाएगा। मैं राजी हो गया और हम दोनों खत लिखने चले। मगर छोटी बी ने कहा कि खत नहीं, बल्कि हीरा को तार दिया जायगा। और हीरा को उसी दिन तार दे

दिया गया कि जल्दी आओ। इसी दौरान में चमकी ने अपने निश्चय का भी स्पष्टीकरण कर दिया। वह यह कि मैं नहीं जाऊँगी; लेकिन छोटी बी कुछ न बोली।

तीसरे दिन हीरा आ गया। चमकी को छोटी बी ने काम भी न करने दिया। वह अपनी कोठरी में मुँह दिए पड़ी रही। न मालूम उसने कुछ खाया-पिया भी या नहीं। शायद कुछ नहीं खाया।

हीरा से कह दिया कि हम तेरी भांजी को राजी-खुशी विदा करते हैं। छोटी बी ने मुझसे कहा कि इसको तलाक भी दे दो। ताकि झगड़ा समाप्त हो। मैंने शीघ्र ही आज्ञा-पालन में एक तलाक रजी[1] देदी। छोटी बी की समझ में न आया। कहने लगी, तलाकनामा लिखो। मैंने फौरन तहरीर भी देदी। छोटी बी ने तहरीर अपने पास रख ली। दो सौ रुपये हीरा के हवाले किये। उसकी रसीद और चमकी के सौंपने की रसीद ली। मामला समाप्त!

लेकिन अब मेरी मक्कारी या गद्दारी सुनिए। यह सब कृत्रिम ड्रामा था। हीरा से मैंने कह दिया कि अभी तू इसको ले जा। अपने साथ रखना। माँ के यहाँ न भेजना। यह मेरी अमानत है। चमकी को भी समझा दिया, यह कहकर कि जल्दी बुला लूँगा। घबराना मत। इसको वियोग-दुःख था, मगर नहीं, वह मेरे निश्चय और दृढ़ता पर भरोसा करती थी।

उसी दिन रात की गाड़ी से चमकी को विदा कर दिया। चलते समय उसने छोटी बी से क्षमा माँगी, हाथ जोड़कर दण्डवत् की। मुझे हाथ जोड़कर सलाम किया। कुछ मुँह से न बोली। रोती-सिसकियाँ लेती बाहर चली गई। मैं घर से भी न निकला।

छोटी बी बिल्कुल राजी हो गई जैसे नाराज ही न थी। और मैंने इस मसखरी बीबी को पकड़कर खूब ही गुदगुदाया। बेदम कर

---

१. तलाक दी हुई स्त्री को पुनः ग्रहण करने की कार्यवाही।

दिया, खूब ही घसीटा। खूब ही हँसाया यह कहकर कि जलकक्कड़, ईर्ष्यालु, शक्की, बेवकूफ, मूर्ख, किसने तेरी खुशामद की थी? किसने कहा था कि लौंडी लाओ। अपने लिए नहीं लाया था, तेरी खिदमत के लिए'' तेरे काम के लिए'''तेरी मुहब्बत के लिए एक जंगली को ले आया। यह कैसे सम्भव था कि जवान लड़की घर में लौंडी बनकर रहे'''और मुझसे अलग रहे'''हाँ, कैसे सम्भव था? क्या वह माहर किसी से आँख लगाने जाती?'''वह खूब होता!

और फिर मैंने तनिक अप्रिय स्वर में लताड़ा—'मेरी सचाई पर कैसे सन्देह किया? क्या कोई बाँदी नहीं रखता! बाँदियों के पीछे लोग घर की चहेती बीवियाँ छोड़ देते होंगे! बाँदियों से भी प्यार हुआ करता होगा और मैं? मैं तो जरूर ही तुमको छोड़कर उसका हो जाता! बड़ा अच्छा हुआ! वह तो कहो, वक्त पर तुमने ताने से काम लिया। छोटी बी हँसती रही, मुस्कराती रही, मगर नतीजा यही कि उसने कहा—'सब ठीक है, कुछ भी हो, मुझे नहीं चाहिए कोई लौंडी-बाँदी।' मैंने कह दिया कि बेगम, तुम्हें नहीं चाहिए तो मुझे तुमसे पहले नहीं चाहिए। किस्सा खतम हुआ।

दूसरे ही दिन मालूम हुआ कि घर को धर कर किसी ने लूट लिया। अजीब बात यह है कि बड़ा बच्चा बीमार पड़ गया। शीघ्र ही फिर वही काम हाथ आया। नौकरानी की तलाश—दो दिन बाद जाकर नौकरानी मिली। भैंस के लिए घोसी तय हो गया कि सुबह-शाम काम कर जाया करेगा और घर का ढर्रा अब नई अदा से चलने लगा। सचमुच यह हमारी ज्यादती थी कि हैसियत के मुताबिक नौकर न रखते थे वरना एक नौकर बाहर के लिए चाहिए था। बाज़ार का काम हमेशा से अजीब ढंग से होता आया था। महीने का इकट्ठा सौदा दफ्तर के एक बाबू ला देते थे। तरकारी-वाली तरकारी दे जाती थी, गोश्तवाली गोश्त दे जाती थी। एकाध झपट्टा चपरासी लगा जाता था। दो-एक मुहल्ले के लड़के खेलते-

खालते आ गए तो उनसे काम ले लिया। जब से चमकी आयी थी, और भी सुविधा हो गई थी। दरअसल बिना नौकरों के घर चलाने का गुर, अल्ला बख्शे, बड़ी बी सिखा गई थीं।

अब मैं शान्ति से देख रहा था कि काम के बोझ से छोटी बी कब तक हारती है। बच्चों से उसको प्रेम तो बहुत था, लेकिन परेशान बहुत जल्दी हो जाती थी।

२१

अब कुछ सूजिया का हाल सुनिए। बड़ा सख्त-जान था जो मरा नहीं और लोट-पोट कर अच्छा हो गया; लेकिन सदैव के लिए बेकार हो गया। जिस टाँग की रस्साकशी हुई थी, वह सदैव के लिए ऐसी भूल गई और कूल्हे से कुछ ऐसी बेताल्लुक होकर रह गई कि उम्रभर के लिए लँगड़ा हो गया। वह भी इस तरह कि चलना दूभर। यही क्या कम सजा थी कि जो अब अदालत में मुकद्दमे की जवाबदेही करनी पड़ी। उसके बाकी दोनों साथी भी पकड़ में आये। उनमें से एक तो वे थे जिनको मैंने पाँच रुपये का नोट दिया था और दूसरे कोई और बुजुर्ग थे। इन तीनों के खिलाफ अदालत से मेरे नाम और चमकी के नाम हाजिरी के समन आये। मैंने चमकी का समन हीरा के पते पर भिजवा दिया। यह कहना भूल गया कि इस दौरान में मैंने रजिस्ट्री पत्र के द्वारा चमकी के तलाकनामे को वापस माँग लिया था ताकि धार्मिक दृष्टि से अवैधता न आने पावे। मुकद्दमे की तारीख से एक दिन पूर्व चमकी आ गई और वह सीधी घर में चली आई। छोटी बी उसको देखकर फाँद पड़ी, मगर मैंने हाल

बताया तो यकीन हुआ। मेरा इरादा था कि अगर चमकी आएगी तो उसको अलग कहीं चुपके से ठहराऊँगा। मगर अब तो वह यहाँ आ गई। छोटी बी ने उसको ठहराने से इन्कार नहीं किया; लेकिन बिल्कुल बेताल्लुक और खामोश रही। बात तक न की। मैं भी चुप रहा।

दफ्तर के वक्त मैं सीधा दफ्तर गया और वहाँ से कचहरी पहुँचा। चमकी आई न थी। मैंने उसको बताया ही न था कि कहाँ आना-जाना है और वह जानती न थी कि किस अदालत में जाना है। अतः थानेदार साहब ने इक्का लेकर एक सिपाही उसको लेने भेजा और वह आ गई।

हम दोनों ने गवाही दी। चमकी को मैंने निकाह की हुई अपनी बीबी बतलाया। सूजिया से दुश्मनी का सारा किस्सा सुनाया और सूजिया और उसके एक साथी को पहचान करके चमकी को लाने की दास्तान सुनाई। चमकी को मुझसे छीन लेने की जो कोशिश उन लोगों ने की थी, वह बयान की। चमकी ने अपनी कहानी बतलाई। सूजिया और उसके एक साथी को उसने भी पहिचान लिया और भैंस के नाच की पूरी कहानी सुनाई। अदालत में उसकी बहादुरी और होशियारी की खूब-खूब तारीफ हुई। सूजिया की हालत न सिर्फ दयनीय; बल्कि भयानक थी। कम-से-कम मेरे लिए उसके सामने उसकी माशूका बेमुरव्वती और जालिम की साक्षात् मूर्ति बनी खड़ी थी जो अपने अत्याचारों की कहानी मजे ले-लेकर बयान कर रही थी, यद्यपि उसका प्राण निछावर करने वाला आशिक इन अत्याचारों को शान्ति व सन्तोष से खड़ा सुन रहा था। उसकी आँखें चमकी के सुन्दर चेहरे पर जमी हुई थीं और वह टकटकी बाँधे उसको बराबर देखता रहा। कभी-कभी एक लम्बा साँस लेता था और मेरी ओर जा मुड़ कर देखता तो मैं दूसरी ओर मुँह फेर लेता।

यहाँ से गवाही देकर हम दोनों एक होटल में पहुँचे। कमरे में

घुसते ही—'आलीजाह-आलीजाह' कहती हुई मुझसे चिपट कर खूब रोई। मैंने कलेजे से लगाया। धीरज बँधाया। प्यार से आँसू पोंछे, फिर सन्तोष से बैठकर चाय, फल, मिठाई खिलाई। अजमेर के होटल में बैठकर खाने-पीने के बाद यह पहला मौका था। मगर जब और अब में अन्तर था। उस समय वह एक सिर्फ बदतमीज गँवार थी और अब मेरे साथ बैठकर मजे से खा-पी रही थी।

हम दोनों शाम के पाँच बजे तक यहाँ रहे और फिर ताँगा करके सीधा उसको तो मैंने घर भेजा और बाद में खुद जिस तरह रोजाना आता था, उसी तरह पहुँचा। उसी रात की गाड़ी से चमकी रवाना हो गई। मैंने जाते समय सीधी तरह उसके सलाम का जवाब भी न दिया; मगर चपरासी से मैंने कह दिया था कि स्टेशन पर मिल जाए और आराम से जनाने डिब्बे में बिठा दे।

रात को छोटी बी से चमकी के बारे में देर तक बातें होती रहीं। वह उसके जाने पर बिल्कुल पश्चात्ताप करने वाली न थी।

इसके महीने भर बाद का जिक्र है कि मैं दफ्तर से आकर बैठा ही था कि क्या देखता हूँ कि चमकी चली आ रही है। इस बार तो मैं भी चौंक पड़ा। उसने एक सरकारी आज्ञा-पत्र दिया। सच-मुच सूजिया के मुकद्दमे का फैसला हो चुका था। स्वयं उसको साल-भर की और उसके साथियों को तीन वर्ष की सख्त कैद हुई थी और जज ने अपने फैसले में चमकी की बहादुरी की बहुत प्रशंसा की थी। निर्णय में लिखा था कि इस बहादुर लड़की ने एक भयानक अपराध को अपनी बहादुरी और अक्लमन्दी से रोक दिया। अगर यह न होती तो हम नहीं कह सकते कि उस वक्त हमारे सामने किस कदर भयंकर अपराध का मुकद्दमा पेश होता जिसका अनुमान लगाने के लिए यही काफी है कि अपराधी एक ऐसा व्यक्ति था जो कभी पराजित हो चुका था और निश्चय ही उसके दिल में प्रतिशोध की आग भड़क रही थी जिसके बुझाने के लिये कदाचित् वह बेबस

औरतों के साथ अनुचित व्यवहार भी कर गुजरता। हमारी समझ में पुलिस और गवर्नमेन्ट को इस बहादुर लड़की का साहस व उत्साह-वर्द्धन करना चाहिए ताकि लोग ऐसे काम करने को उत्साहित हों।

इस निर्णय का परिणाम यह था कि गवर्नमेन्ट ने चमकी की साहस-वृद्धि के लिए सौ रुपये का इनाम और एक सार्टीफिकेट तजवीज किया था और चमकी इसीलिए आई थी। कल उसको जिले के अधिकारी के हाथ से इनाम लेना था।

मैं नहीं अर्ज कर सकता कि दिल ही दिल में किस कदर खुश हुआ हूँ। बीवी को बहादुरी की सनद मिल रही थी। खुश कैसे न होता! बाग-बाग हो गया। जी में तो यही आया कि इस बहादुर को छाती से लगा कर अभी-अभी मुंह चूम लूं। मैं इस जंगली बीवी को कितना पसन्द करता हूं। कितनी अच्छी है। बिल्कुल एक सोगात ही है। एक प्रकृतिवस वस्तु है, गोया बाजरे की रोटी; और वह सामने खड़ी चमक रही थी। अत्यधिक भोली और सौम्य सूरत बनाए। छोटी बी उसको आँखें मिचका कर कदाचित् लज्जा की नजरों से देख रही थी जिसमें शायद ईर्ष्या का भी तेज था। बहुत सम्भव है कि यह सोचती हो कि काश इस किस्म की सनद मुझे भी मिल जाती।

छोटी बी पहले की बनस्बित और भी अधिक बेरुखी हो मिली और जब चमकी हटी तो झुंझला कर बोली—

'यह तो उसने घर देख लिया है।'

फौरन मैंने कहा—'निकाल दो अभी। तुम्हारी इच्छा नहीं है तो कदापि मत ठहरने दो।'

छोटी बी मेरी ओर देखने लगी तो मैंने कहा—'देखती क्या हो?' फिर कुछ न बोली। मैं भी चुप हो रहा। कम-से-कम मेरे शोकाकुल प्राणों पर कोई कृपा न हुई।

दूसरे दिन मैंने और भी सावधानी बरती। चमकी ने मुझसे पूछा कि कहाँ और किधर जाऊँ। मैंने कह दिया कि इक्के वाले को बुला कर बता दूँगा। मैं तो दफ्तर गया और ताँगे वाले को रास्ते से जरूरी हिदायत देकर घर भेज दिया। दफ्तर में किस मसखरे का जी लगता। सीधा मैं भी पहुँचा और सबसे पहले यह देखा कि सार्टीफिकेट में पति का नाम भी है कि नहीं। मालूम हुआ कि मुक-द्दमे की मिसल से नाम लिया गया है अतः मेरा नाम जरूर होगा। अब इसको मेरी कमजोरी कहिए। वक्त आया तो जिले के अधि-कारी ने कई अधिकारियों के सामने चमकी को नकद सौ रुपये और सार्टीफिकेट दिया और जितने भी आदमी जमा थे, उनके सामने एक संक्षिप्त भाषण देकर मुझको बधाई और चमकी की पीठ ठोक कर शाबाशी दी। हम दोनों वहाँ से होटल आए और पिछले प्रोगाम के अनुसार शाम को घर पहुँचे। चमकी पहले चली गई थी और जब मैं पहुँचा तो छोटी बी और उनमें इस बात पर झगड़ा हो रहा था कि चमकी बच्चों के लिए मिठाई लाई थी और कुल इनाम का रुपया बच्चों को देना चाहती थी। छोटी बी ने यह भेंट स्वीकार नहीं की। बात बढ़ गई। और शायद चमकी रो रही थी। जब मैं पहुँचा तो छोटी बी कह रही थी—'ना बाबा! मैंने मिठाई जो लेली है—यही बहुत समझो।'

उसी दिन रात को चमकी चली गई और मेरे दिल पर एक और भी अधिक गहरा चिह्न छोड़ गई। अब मेरे सामने एक विल-क्षण नारी का स्वरूप था जो प्रतिपल पूजनीय होता जा रहा था। कई दिन तक मैं चमकी के विचार में निमग्न रहा। हरदम उसी का खयाल था। मुझे उसके करैक्टर में नारी-करैक्टर का आदर्श नजर आता था। वह करैक्टर जिसके आगे बड़े-बड़े पर्वत के समान स्थिर-चित पुरुषों को झुकना पड़ता है—

'सरकशी ऐसी कि देखें तो गवर्नर झुक जायें।'

और फिर उसके साथ वे प्यारी अदाएँ, वह सादगी और प्यार की गरमी जो तन-बदन में एक आग-सी फूंके देती थी।

लेकिन मैं खामोश था; बिल्कुल चुप था—न तो दीवाना था और न अधिक होश में। बल्कि जिस समय अपनी प्यारी ज़िंदगी की चमक के साथ बातें करता होता तो मुझको मालूम होता कि सारी दुनिया की खूबसूरती व इश्क सिमट कर उस नौकरानी के जिस्म में आ गया है और एक हद से ज्यादा महकता और हँसता हुआ फूल है जिसकी सुगन्ध ने मेरे लिए संसार को सुगन्धित कर रक्खा है। सचाई यह है कि मुझको छोटी बी से मुहब्बत नहीं, बल्कि इश्क था। और इतना समय व्यतीत हो जाने पर भी इस इश्क में तरलता थी। वह इस तरह मेरे दिल में घुसी हुई थी और इस तरह मन में बसी हुई थी कि यही मालूम होता था कि चमकी के बारे में हम दोनों समान-मत हैं। छोटी बी और मैं कुछ दो तो नहीं हैं! छोटी बी और चमकी की समता का कुछ खयाल ही न था। घण्टों इसी खयाल में डूबा रहता।

२२

एक दिन की बात है कि रात को हम दोनों सोने से पहले इधर-उधर की बातें कर रहे थे कि छोटी बी के चचेरे भाई की शादी का जिक्र आया। नौकरानी का सवाल बदस्तूर नाकाबिले-इत्मीनान और पेचीदा था। इसी माह छोटी बी उस शादी में जाने वाली थीं। मैं बहुत पहले ही उज्र कर चुका था। शादी की तारीख छः-सात मास पहले ही मालूम हो गई थी और अब खत आया था। सवाल यह था

कि नौकरानी नहीं है। वहाँ साथ कौन जाएगा ? मैके की पहली शादी थी और यह नामुमकिन था कि छोटी बी इस हैसियत से जाए कि साथ टहलनी भी न हो। पहले तो एक औरत राजी भी हो गई थी ; लेकिन फिर उसने भी मना कर दिया। उसी समय मुझे चमकी का खयाल आया; लेकिन चुप रहा। जो दशा चमकी के आने से पहले थी, ठीक वैसी ही, बल्कि उससे भी बदतर थी। अल्ला बख्शे, बड़ी बीबी नौकरानियों के बारे एक में विचित्र आदर्श स्थिर कर गई थीं और इस आदर्श को कदाचित् चमकी ने और भी ऊँचा कर दिया था। नतीजा, वही दिन-रात की थुक्का-फजीहती। हर नौकरानी हमसे रोती-चिल्लाती और हम उससे रोते-चिल्लाते। नौकरानियाँ कहतीं कि हम नौकर रखना नहीं जानते और छोटी बी को इस शब्द से चिढ़ थी। संयोग तो देखिए कि इधर तो मैं सोच रहा था चमकी का ले जाना कैसा रहेगा और उधर छोटी बी भी यही सोच रही थी। लिहाजा आखिर को उसने कह ही दिया और मुझसे परामर्श लिया। मैं गोया तैयार ही बैठा था, तुरन्त विरोध कर दिया और परामर्श दिया कि 'ऐसा कदापि न करना चाहिए, यह किसी प्रकार उचित नहीं।' छोटी बी ने जो कारण पूछा तो कारण भी मैंने यही बताया कि 'ऐसा न करना चाहिए। इससे लाभ ही क्या है। यह ठीक नहीं मालूम होता—यह उचित नहीं। आदि-आदि।'

सचमुच छोटी बी देख रही थी कि मैं प्रारम्भ ही से चमकी की ओर से किस प्रकार विमुख हो गया हूँ। जब से वह गई है वह स्वयं और भी अधिक मेरे गले का हार हो गई है। मेरी ओर गौर से देख कर कहने लगी—

'इसमें हरज ही क्या है'''मैं तो ले जाऊँगी।'

'और वहाँ ले जाकर उसको नचाऊँगी'''।' मैंने छोटी बी की मजाक में गरदन दबाते हुए गोया उसकी तरफ से वाक्य पूरा किया।

'हाँ, नचाऊँगी भी''' छोटी बी ने फूल की तरह हँसते हुए कहा

—'तुम कौन ? इतने दिन कमबख्त हमारे यहाँ रही तो क्या इतना काम न कर देगी।'

मैंने कहा—'मैं क्या जानूं, कर देगी कि नहीं। तुम जानो और वह जाने।'

दूसरे दिन चमकी को खत लिख दिया गया। 'इस कारण जाना है—कोई आदमी नहीं है, दो महीने के लिए साथ चलना होगा। अगर राजी हो तो फलाँ दिन चली आओ, जवाब दो तो खर्च भेजें।' जवाब में चमकी का खत आया कि 'मैं आपकी लौंडी हूं, जरूर चलूंगी। लेकिन शायद इतने दिन न रह सकूं। क्योंकि मेरे रिश्तेदारों में खुद कई शादियाँ हैं और नानी बीमार है।' छोटी बी ने खर्चा भेज दिया और वह जाने से दो दिन पहले आ गई और बड़ी खुशी-खुशी छोटी बी के साथ चली गई। सफर का मामला था और कोई मर्द साथ न था। रास्ते में सावधानी और होशियारी बरतने की मैंने बार-बार याद दिलाई; क्योंकि शादी का मामला था, लिहाजा जेवर और रुपया सब साथ था और सफर भी लम्बा था। खुदा की शान है कि रास्ते में एक अजीब मामला पेश आया।

बदकिस्मती से जनानी गाड़ी में तीन औरतें रह गईं। छोटी बी, चमकी और एक और कोई औरत। रात के दो बजे के करीब दो डाकू गाड़ी में घुस आए। यह इसका नतीजा था कि एक बातूनी औरत ने बातों ही बातों में मालूम कर लिया था कि कौन हो और कहाँ जा रही हो और यह भी देख लिया था कि वह कौन-सा बक्स है जो कलेजे से लगाकर रक्खा जा रहा है। वह खुद तो एक जगह उतर गई और दो डाकू छिप कर गाड़ी के पायदान पर बैठे रहे और एकदम से बेखबरी में दाखिल हुए जब गाड़ी पूरी रफ्तार से जा रही थी। तीसरी औरत की ओर उन्होंने ध्यान भी न दिया। एकदम से चाकू निकाल कर छोटी बी और चमकी पर पिल पड़े। छोटी बी तो सहम कर वहीं रह गईं; मगर चमकी घबरा कर उठ बैठी तो उन्होंने

खंजर दिखाया और मार डालने को कहा और छोटी बी का ओढ़ना जो घसीटा तो वह चीखी। चमकी ने कहा तुम इनको मत छेड़ो और इनको मारो। हम सब सौंप देंगे। एक चोर ने कहा कि बच्चों को बाहर फेंक दो। घबराकर छोटी बी ने फौरन कुंजी सौंप दी और चोरों ने बक्स खोल कर नकदी और जेवर सँभाल लिया। तीसरी औरत पाखाने में किलेबन्द हो चुकी थी। वह ज़रा भी न चीखी। चोर निहायत ही इत्मीनान से बैठे रहे और जब उन्होंने मौका देखा तो खिड़की खोलकर उतरने लगे। जैसे ही एक उतरा ही था और दूसरा उतरने को हुआ तो चमकी से न रहा गया। उसने लोटा उठाकर चोर के मुँह पर दे मारा और साथ ही उसका हाथ छुड़ा दिया। चलती गाड़ी से वह सिर के बल नीचे गिरा और फिर छोटी बी और चमकी ने जो दुहाई खींची तो खींचे ही चली गईं जब तक कि गाड़ी न रुकी। बराबर के डिब्बे वालों में से किसी ने चोर के गिरने की आवाज सुनी और फिर चीख जो सुनी तो गाड़ी की जंजीर खींच दी। गाड़ी हालांकि हल्की हो गई थी, मगर काफी रफ्तार थी। बहुत से आदमी दौड़ पड़े और हालात से जानकारी की। गाड़ी पीछे लौटी और दौड़कर लोगों ने चोर को सँभाला। एक निकल चुका था, मगर दूसरा मिल गया। लोटा जो चोर के मुँह पर मारा था वह भी मिल गया और नकदी और जेवर भी मिल गया। चोरों ने उतरने से पहले ही पोटली जमीन पर फेंक दी थी।' जब उसकी खोज की गई तो वह मिल गई; क्योंकि इसके पूर्व कि दूसरा चोर अँधेरे में पोटली ढूंढ़ सके, एक साथी गिर गया और गाड़ी रुक गई। वह तनिक दूर जाकर तलाश करने से मिल गई। खुदा का लाख-लाख धन्यवाद है कि सिवाय एक बुंदे के कुछ भी न गया। चोर का मुँह-हाथ-पैर सब टूट गए थे। उसको गाड़ी में रख लिया गया, लेकिन दूसरे स्टेशन पर पहुँचने तक वह मर चुका था। पुलिस वाले गाड़ी में ही दूसरे स्टेशन से बैठ गए और छोटी बी, चमकी तथा

तीसरी औरत के बयान ले लिए और पता लिख लिया; लेकिन सफर खोटा नहीं किया। इस घटना की तार से सुबह सूचना मिली, मगर एकदम ही अस्पष्ट।

अब वहाँ कुछ शादी का हाल सुनिए। छोटी बी का खत आया जिससे रेल के डाके और चमकी की बहादुरी का हाल मालूम हुआ था। उसके बाद एक और खत आया जिसमें छोटी बी ने चमकी के नाच और गाने का इस कदर खुश हो-होकर हाल लिखा था कि अर्ज नहीं कर सकता। छोटी बी चमकी से बेहद खुश थी और इस परिवर्तन से मैं भी बहुत प्रसन्न था। ऐसा खयाल होता था कि कहीं छोटी बी चमकी को फिर न रख ले; क्योंकि चमकी ने अभी-अभी किसकदर महत्वपूर्ण सेवायें की थीं। मगर नहीं, मगर सेवायें तो अब करनी थीं।

शादी के खत्म होने के बाद एक और मामला पेश आया। छोटी बी के मायके में बाहर मर्दाने घर के अहाते में एक बड़ा-सा कुआँ था। दोपहर को इड़ा फाटक बन्द था और सन्नाटा था। मुहल्ले के दो-एक बच्चे खेल रहे थे। बच्चे खेलते-खेलते कुएँ पर पहुँचे। भिश्ती का डोल और रस्सी रक्खी थी, उससे खेलने लगे। न मालूम किस तरह बड़ा बच्चा कुएँ में जा पड़ा। खुदा जानता है, बच्चों ने धकेल दिया या गिर गया। मुहल्ले के बच्चे बजाय खबर करने के भाग गये। छोटा बच्चा घर में भाग कर आ गया और बजाय कुछ कहने के वह भी चुप होकर एक कोने में बैठ गया। मगर बच्चा चुपचुपाता आकर जो बैठ गया तो माँ को खयाल हुआ कि दूसरा बच्चा कहाँ गया। आवाज जो दी तो यह भी न बोला। एकदम से चमकी को भी खयाल हुआ कि कुएँ पर बच्चे खेलते थे। इस ओर तो शक और उधरसबका ध्यान एकविशेषधमाकेकी ओर गया।और फिर बच्चों के हुल्ले-गुल्ले का एकदम से लोप होना याद आ गया। छोटी बी ने बच्चे से फिर पूछा—उसने रोकर भाई के कुएँ में गिरने की बात प्रमाणित की। बस, क्या था अल्ला दे और बन्दा ले। सब की सब औरतें

दीवानों की तरह कुएँ पर दौड़ीं। बच्चे को देखा तो डूब रहा था। सबके होश जाते रहे, और तो कुछ समझ में न आया। कुएँ में डोल डालकर चीखना शुरू किया कि बच्चे, रस्सी पकड़ ले। खड़ी सब चीख रही हैं। मगर बच्चे को होश कहाँ। कोई दम जाता था कि चमकी ने सबको हटाया। डोल की रस्सी पाखे बाँध कर उसी के सहारे कुएँ में सीधी उतर गयी। रस्सी मूँज की और खुरदरी थी, फिर तेजी से उतरना—नीचे पहुँचकर पानी में हाथ डालकर बच्चे को सँभाला जो है तो मालूम हुआ, आग मे हाथ डाल दिया। दरअसल, रस्सी की रगड़ से दोनों हाथों की चमड़ी उधड़ गई। बच्चे को तो उसने पानी से उठाकर सीने से लगा लिया और दूसरे हाथ से रस्सी पकड़े अन्दर से उसने आवाज दी कि घबराओ मत, बच्चा सुरक्षित है। औरतों के दम में दम आया। इतने में मर्द दरवाजे पर एकत्र हो गए थे, औरतें हट गयीं। मर्दों ने आकर झूला डाला और रस्सी के द्वारा चमकी और बच्चे को घसीटा। बच्चा पानी तो बहुत-सा पी गया था, मगर होश में था और कोई भय न था। उधर चमकी जी ऊपर पहुँची तो चेहरा पीला और रस्सी बाँये हाथ से नहीं छूटती। खाल उधड़ गयी थी। रस्सी में हाथ ज्यों-का-त्यों चिपक कर रह गया। दूसरा हाथ भी बेतरह घायल था। और इस कदर तकलीफ थी कि चेहरे का रंग बदल गया और लोगों ने रस्सी जो हाथ से छुड़ाई है तो बेहोश हो गयी। रस्सी के रेशे हाथ के घावों में सैंकड़ों की संख्या में फाँस की तरह चुभकर रह गये। अब और तो जो कुछ हुआ है; लेकिन छोटी बी ने चमकी को गले से लगा लिया। सब की सब औरतें उसकी हिम्मत और बहादुरी की तारीफ कर रही थीं। छोटी बी की माँ को तो मूर्छा आ गयी थी। वे उठीं तो चमकी की बलायें लेती उठीं और सबकसबी तीमारदारी में लग गयीं। सारे मुहल्ले में हुल्लड़ मच गया। जो था चमकी की तारीफ कर रहा था। मुहल्ले की औरतें सिर्फ चमकी को देखने को आ रही थीं और प्रत्येक

की जबान पर यही था कि अगरएक क्षणभी औरबीत जाय तो बच्चा गया था। छोटी बी के पिता तो थे नहीं, बड़े भाई थे। वे दफ्तर से आये तो उन्होंने मुझे तार दिया। उससे यह मालूम हुआ कि बच्चा कुएँ में गिर गया था जिसे चमकी ने कुएँ से निकाल लिया। कैफियत छोटी बी के खत से मालूम हुई।

मैं नहीं कह सकता कि मैं चमकी के इस कारनामे पर कितना खुश हुआ और खुशी भी ऐसी कि जैसी होनी चाहिए। दो-तरफा खुशी। एक तो बच्चे की और एक चमकी की बहादुरी की। मैंने छोटी बी को लिख दिया था कि चमकी का अच्छी तरह इलाज कराना और इनाम देना।

अब उसके बाद के हालात और भी दिलचस्प हो गए। चमकी को सब छोटी बी की नौकरानी या बाँदी समझते थे। सभी ने इनाम व उपहार दिया, मगर उसने एक कौड़ी न ली। नाच-गाने का इनाम तो यों नहीं लिया कि कोई पेशेवर नहीं; लेकिन इस अवसर पर अस्वीकार करने से और भी आश्चर्य हुआ। जब लोगों ने बहुत हठ किया तो चमकी ने कहा, मुझे इनाम नहीं चाहिए। अगर मैंने कोई खिदमत की है तो उसका यह बदला हो सकता है कि मुझे निकाला न जावे। यह भी कोई बड़ी बात है। एक से एक सिफारिशी मौजूद और फिर छोटी बी किस मुँह से इन्कार करतीं। रेल में दो-ढाई हजार का जेवर बचा दिया, अब यह लाखों की जान बचा दी। कोई बड़ी बात नहीं है और चमकी ने यह देखकर कि है मौका, दौड़कर छोटी बी के पैर पकड़ लिए और रोना शुरू कर दिया। फिर जो लोगों ने छोटी बी के सरो लिए हैं तो सिवाय 'हाँ' के चारा न था। एक-से-एक सिफारिशी मौजूद था।

छोटी बी ने अपने दूसरे खत में इसकी खबर दी। मैं मारे खुशी के उछल पड़ा; लेकिन वाह रे, मैं। फौरन खत लिखा छोटी बी को। खूब ताने मारे यह कि मालूम होता है कि तुम फिर झगड़े खड़े

करोगी। बेहतर यह है कि सोच-समझ कर काम करो।' इस खत का कोई जवाब न आया और जवाब के बदले तार आया कि फलाँ वक्त गाडी से आते हैं (मय चमकी)। और दूसरे दिन छोटी बी आ गयी। बड़े बच्चे को मामूँ ने रोक लिया। चमकी के दोनों हाथों में पट्टियाँ बँधी हुई थीं, अँगूठों और उँगलियों से अपना काम चलाती थी। चमकी ने आते ही हाथ जोड़कर मुझे दण्डवत् की और चरण छुए। मैं नहीं बयान कर सकता कि मेरे दिल की उस समय क्या हालत हुई। चाहिये तो यही था कि उसे गले लगा लूँ, लेकिन मैंने केवल उसकी पीठ पर धीरे-से एक थपकी दी। इस सावधानी से कि हाथ की हथेली सिर्फ कपड़ा छू सके और इस बात को छोटी बी देख भी सकें और सिर्फ दो शब्दों में छोटी बी को चेतावनी दी कि उचित इनाम दें।

सचमुच, खुदा बड़े-बड़े काम सिद्ध करने वाला है। किस तरह उसने चमकी को मिलाया है! उसके दूसरे दिन की बात है कि मेरे तबादिले का हुक्म आ गया। मय तरक्की और तबादिला भी कैसा—दूसरे सूबे में जा फेंका और इस हुक्म की तामील में मय घर-बार के उसी हफ्ते हम लद गए।

२३

नई जगह के साथ-साथ जिंदगी का एक बिल्कुल ही नया और निराला दौर शुरू हुआ। कहानी के विस्तार के भय से हर अनावश्यक विवरण को छोड़ता हूँ। छोटी बी चमकी को ले तो आयी थी, मगर यह न समझ में आता था कि किन शर्तों पर। न मुझको यह

ज्ञान कि मेरी पोजीशन अब सरकारी तौर पर क्या रहेगी और यह ऐसी जटिल समस्या थी कि इस विषय में वार्तालाप करते मुझे डर लगता था और जबतक कि यह तय हो जाय, मैं चमकी की तरफ से हद से ज्यादा लापरवाह रहना चाहता था और रहा ऐसा कि छोटी बी को खयाल न होने पाए कि इंच भर भी मुझे उसकी परवाह है। सचमुच यह एक धोखा था जो मैं छोटी बी के साथ चला रहा था। वरना सचाई यह है कि अगर छोटी बी को इन जज्बात के शतांश का भी अनुमान हो जाता जो चमकी के लिए मेरे दिल में तरंगित थे, तो प्रलय आ जाती और छोटी बी चमकी को न रखती। इसी से मुझको हद से ज्यादा बेचैनी थी कि यह बात जल्दी तय हो जाय।

इस नये दौर के समझने के लिए जरूरी है कि चंद बातें अर्ज कर दी जायें। अब हमारे पास बाहर एक और नौकर था। मकान निहायत ही खुला हुआ और बड़ा था। नीचे का हिस्सा मर्दाना मकान था। नीचे साधारण सहन था और असल इमारत ऊपर थी। वह अत्यधिक विस्तृत सहन था जो दूर तक चला गया था और उसके नीचे महाजनों के गोदाम थे। दो-तरफा कुछ मकान थे। नल था, बिजली थी। छोटी बी ने आते ही चमकी के लिए जो कमरा छाँटा तो खटका। औरत भी किस कदर होशियार चीज है। एक ऐसा कमरा जो रसोईघर के करीब भी रहे, हम सबसे अलग रहे और फिर भी नजरों में रहे। तथा तमाशा देखिये—इधर मुझसे तो एक लफ्ज भी न कहा, लेकिन चमकी से अपने घर से चलते समय ही पुख्ता वायदा करा लिया था कि अब कोई शरारत न करूँगी, और अगर जरा भी कोई 'बात' देखी गयी तो फौरन निकाल दी जाऊँगी। अतः चमकी ने प्रण कर लिया कि मेरी ओर अब आइन्दा आँख उठाकर भी न देखेगी। मालूम रहे कि इन वायदों का मुझको बिल्कुल पता नहीं। मैं किसी और ही भूल में था। आखिर बड़ी बीवी भी तो थीं। रह गयी उम्र तो छोटी बी कई

नौकरानियाँ नई उम्र की भी रख चुकी थी। कभी भूल कर भी मैंने उनकी तरफ न देखा। वह जानती थी कि मैं उसका हूँ। हाँ, एक बात और भूल गया कि छोटी बी ने चमकी से यह भी कह दिया था कि वह जो शादी अजमेर में की थी, समाप्त हो चुकी है और तुम अब कहीं इस भूल में न रहना। बस, यह समझो कि मामूली नौकरानी हो और जब तुम्हारा जी चाहे, घर चली जाना और शादी कर लेना।

मैं देख रहा था कि चमकी भी आवश्यकता से अधिक विवश है और बड़ी चिन्तित थी कि मामले किसी नौबत पर पहुँचें और उलझनें दूर हों कि अजीब घटना घटी।

हमारे दफ्तर में एक चपरासी था जो अभी कुँवारा था। दफ्तर के एक बाबू मुझसे क्षमा माँगते हुए और बात गुप्त रखने का वचन लेते हुए एक दिन पूछने लगे कि क्या आप उसकी शादी अपनी नौकरानी से करना चाहते हैं? और क्या उसकी तरक्की की भी चिन्ता में हैं? मैं यह सुनते ही हैरत में रह गया। मुझे बहुत बुरा लगा। गोया आपसे कोई यह पूछे कि आप अपनी बीवी की फलाँ व्यक्ति से शादी करने वाले हैं! मैंने उससे लाइल्मी जाहिर करके पूछा तो पता चला कि छोटी बी चमकी की शादी के फिक्र में हैं। यह शायद पहला मौका था कि छोटी बी की किसी हरकत पर मुझे कुछ क्रोध-सा आया, किन्तु शीघ्र जाता रहा। इसमें खता मेरी थी। वह जानती थी कि मैं तलाक दे चुका हूँ और अब चमकी सिर्फ एक नौकरानी की हैसियत रखती है। दरअसल, मेरा यह ख्याल था कि जब जिक्र चलेगा तो छोटी बी से कह दूँगा, लेकिन हिम्मत न होती थी। खुदा न करे कि वह तलाक देने पर अब विश्वास करे और तस्मा लगा न रक्खे। दिनभर दफ्तर में पेच व ताव खाता रहा और घर जो पहुँचा तो और भी उलझन बढ़ी, और यह जरूरी मालूम हुआ कि जिस तरह भी बन पड़े चमकी से मिलूँ,

लेकिन छोटी बी ने वह इन्तजाम कर रक्खा था कि सिवाय दो बातें करने के और मौका ही न मिले। मैं देखता कि अब वह मौका ही नहीं मिलता कि आते-जाते कभी जीने में या रास्ते में मिल जाय, क्योंकि वह खुद जरूरत से ज्यादा सावधानी बरत रही थी और जान-बूझकर मुझसे बचती थी; लेकिन संयोग की बात कि दूसरे ही दिन एक अजीब बहाना हाथ आया।

यहाँ आकर दो-चार हजरतों से मुलाकात भी हुई थी और यार-दोस्त भी पैदा हो गये थे। दो-चार बार छोटी बी का इधर-उधर आना-जाना भी हुआ था। उनमें से एक साहब के भाई की शादी की खुशी थी। उन्होंने तो सिर्फ दावत का बुलावा दिया था, मगर मैंने यह उज्र किया कि रात गये खाना खाकर वापसी में सख्त मुश्किल होगी। लिहाजा या तो अव्वल वक्त खाना खाकर वापस चली आयें, वरना शुरू से वापस ही न आयें और सुबह तक वहीं रहें। जाहिर है कि वह इससे ज्यादा और क्या चाहते थे। अतः मैंने छोटी बी से आकर कहा और यह जड़ दिया कि रात गए तक खूब गाना-बजाना होगा। हालांकि मुझे पता भी नहीं कि गाना होगा भी या नहीं। छोटी बी से दरअसल उनके यहाँ की औरतों से बेतकल्लुफी न थी और वह इस तवालत पर कभी राजी न होती, लेकिन मैंने बहुत जोर दिया और कहा कि मैं पुख्ता वायदा कर आया हूँ और यह भी जाहिर किया कि यहाँ के दोस्तों में जो दर्जा उनको मेरी नजरों में प्राप्त है, किसी को नहीं। इसके बाद मैं इस इन्तजार में रहा कि किसी प्रकार दो लफ्ज चमकी के कान में डाल दूँ।

दूसरे दिन की बात है कि मैं बैठा अखबार पढ़ रहा था। चमकी के हाथ वैसे तो ठीक हो गए थे और सब काम कर लेती थी; लेकिन रोटी नहीं पकाती थी। उसने छोटी बी को आवाज दी कि रोटी डाल लें। छोटी बी उठी और जरूरत से गुसलखाने गयी और

इधर मैंने लपक कर चमकी से सिर्फ इतना कह दिया कि रात को शादी से चुपके से तू घर भाग आना। यह कहकर झपट कर मैं उसी तरह अपनी जगह पर आ बैठा कि जैसे कुछ था ही नहीं। लेकिन भाग्य तो देखिये कि मैं झपट कर वापस आता था। सामने कमरा था जिसमें शीशेदार अलमारी रक्खी थी। वहाँ से गुसलखाना दूरी पर था। छोटी बी मुड़ी जो सही तो उसकी नजर अलमारी के शीशे पर पड़ी और उसने इस अजीब तरीके पर मुझको सिर्फ लपक कर जाते या आते हुए देख लिया कि मैं तेजी से गुजरा। अतः जब छोटी बी ने मुझे सन्देहभरी नजरों से वापस आकर देखा तो मुझे शुब्हा तक न हुआ। अब वह यह न मालूम कर सकी कि मैं इस प्रकार झपट कर कहाँ गया था। मुझसे भी कुछ न पूछा।

२४

दफ्तर से वापस जो आया तो छोटी बी जा चुकी थी। मैंने चाय पीकर नौकर को हिदायत दी कि तुम भी वहाँ आ जाना और रात को भी वहीं रहना। यह कहकर मैं स्वयं भी वहीं पहुँचा। अब मेरी आँखें चमकी को ढूँढ़ती थीं। बीसियों नौकरानियाँ बच्चों को लिए फिर रही थीं, मगर चमकी अदृश्य। बहुत जल्दी मैंने अंदाजा लगा लिया कि यह छोटी बी की हरकत है। वह जानती है कि मैं आ गया हूँगा। अतः चमकी को बाहर नहीं आने दिया। और सचाई भी यही थी।

नौकर भी आ गया और भोजन के पश्चात् नौकर से मैंने कुंजी ली और गृहस्वामी से कह दिया कि नौकर भी यहीं रहेगा।

और यह सोचकर कि कहीं ऐसा न हो कि जरूरत पड़े, अतः नौकर को ताकीद कर दी कि तुम कहीं चल न देना और जरूरत का कोई काम पड़े तो हाजिर मिलना। मुझ कमबख्त को क्या मालूम कि क्या जरूरत पड़ेगी।

अब छोटी बी की होशियारी या चालाकी देखिए कि वह खाना खाते ही बहुत जल्दी सो गयी। सो क्या गयी, यों कहिए कि बनकर पड़ गयी। सितम-पर-सितम! बच्चों को स्वयं ही सँभाला। मानो जान-बूझकर चमकी को आजाद कर दिया—यह देखने के लिए कि यह अब क्या करती है।

घर में खूब गाना-बजाना हो रहा था और मेहमानों की घूमा-फिरी थी। छोटी बी को मकान की ऊपरी मंजिल के कमरे में अलग स्थान दे दिया था। जब आधी रात आयी, मेहमान और नौकर इधर-उधर सो गये तो चमकी वहाँ से सरक आयी।

मैं तो मानो घड़ियाँ ही गिन रहा था। नींद भला किसे! प्रतीक्षा में ही था कि वह आ पहुँची।

'चमकी!' स्वभावतः मैंने कहा।

'आलीजाह' उसके मुँह से निकला और पलक झपकते ही वह मेरी प्यार की गोद में थी। मैंने बार-बार उसको सीने से लगाया। 'आलीजाह' उसने मेरी आँखों में आँखें डालकर कहा।

'बया बया कि तुरातंग दर किनार कशम'[1]

मैंने इस प्यार की पुड़िया को और भी अच्छी तरह सीने से लगा लिया। उसके बालों में देर तक उँगलियों से कंघी करता रहा। उसकी आँखों में आँखें डाले देर तक देखता रहा। उसको प्यार से धीरे-धीरे थपकता रहा।

तमाम बातें मालूम हुईं। यह कि छोटी बी ने उससे कैसी-कैसी

---

१. आ, आ कि जोर से तुझे अपने पहलू में खींच लूँ।

ताकीदें कर दी हैं। किस प्रकार डरा-धमकाकर रक्खा है। और किस तरह अब वह उसकी शादी तय कर रही है और किस तरह वह भी मुझसे मिलने को तड़प रही थी कि दिल का हाल तो कहे। देर तक पोलटिक्स पर गुफ्तगू। प्रश्न यह था कि अब क्या करना चाहिए। जिसको उसने इस प्रकार हल किया—

'मेरे आलीजाह ! मैं अब तुम्हारे बिना नहीं रह सकती···।'

मैंने उसका मुंह बन्द कर दिया। सीने से लगाकर उसको विश्वास दिलाया। फिर हम दोनों कुछ देर तक प्रेम-प्यार और वियोग-दुखों की कहानी सुनाते रहे और इस मुलाकात पर खुदा का शुक्र अदा किया।

लेकिन वह जो किसी ने कहा है तो सच कि फलक कुज रफ्तार[1] को स्वीकार नहीं कि दो दिल एकत्र होकर प्यार की बातें कर सकें। बड़ी मुश्किल से डेढ़-दो घंटे व्यतीत हुए होंगे। हम दोनों मियाँ-बीवी एक-दूसरे के प्रेम में विभोर हो, धीरे-धीरे बातें कर रहे थे कि तूफ़ान फट पड़ा।

छोटी बी को सन्देह सुबह ही हो गया था जब कि उसने मुझे दर्पण में देख लिया था। चमकी के जाने के बाद वह उठी। देखा तो चमकी गायब। इसकी तो प्रतीक्षा ही में थी। नौकर से शीघ्र ताँगा मँगा, लाइलाज मुसीबत की तरह घर आयी। दूसरे ज़ीने का दरवाजा जो साधारणतः बन्द रहता था, पहले से इसीलिए चुपके से खोल गयी थी। नौकर को बच्चा सुपुर्द करके चुपके से चढ़ आयी और धीरे-धीरे दबे-पाँव वहाँ पहुँची जहाँ हम दोनों थे। चुपके से जाहिर है कि नजारा देखने के काबिल होगा। सवाल न जवाब, लेकर जूता जो झपटी है तो इसके पहले कि हम यह समझें कि क्या आफत है, चमकी की चाँद पर एक-दो-तीन !

---

१. टेढ़ा चलने वाला आसमान।

बस, कुछ न पूछिए। इधर मैं औखला कर अलग गिरा और चमकी अलग और वह पिली जो है जूता लेकर तो जब तक मैं होश में आऊँ,उसने चमकी का हुलिया बिगाड़ दिया। वह बला की ताकत, वह जोर, वह शोर और चीखें कि बस! ज्वालामुखी पहाड़ था जो फट पड़ा। मुझसे अब अधिक न सहा गया। एकदम से मैंने छोटी बी का हाथ पकड़ लिया, लेकिन बड़ी नरमी के साथ ही कहा—'बस···बस···बस!'

उसने बिगड़ कर कहा—'सावधान, जो तुम पड़े बीच में।'

मैंने कहा—'दोष मेरा है।' यह कहते हुए मैं बीच में आ गया। मैंने कहा—'दोष मेरा है।' वह कड़क कर बोली—'गलती खुद मेरी है···मगर मैं इस मुरदार को जीता न छोड़ूँगी···।'

मैंने रोका तो वह खींचा-तानी करके चीखी और पागलों की तरह प्रलाप कर बोली—

'हट जाओ, मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखना चाहती। मैं इसे मार डालूँगी···।'

मैंने सम्मुख होकर कहा—'कदापि नहीं, तुम इसको न मार सकोगी। तुमको शर्म नहीं आती! क्या उसने तुम्हारी जान नहीं बचायी? क्या इसने तुम्हारे बच्चे की जान नहीं बचायी? छोड़ दो इसे···।'

मैंने चमकी को छुड़ाया। उसने फिर कड़क कर कहा—'चूल्हे में गयी मैं और भाड़ में गये बच्चे···मैं इसे नहीं···।'

यह कहकर वह चमकी की ओर फिर झपटी। मैंने उसको पकड़ लिया और कहा—'तुम इसको हर्गिज नहीं मार सकतीं। पहले बात सुन लो, बात सुनो, होश में आओ···।'

'होश में आओ' त्योरी पर बल डालकर छोटी बी ने कहा—'तुमको शर्म नहीं आती अपनी बदचलनी पर, शर्म नहीं आती···।'

'मैं हर्गिज बदचलन नहीं हूँ,' मैंने जोर देकर कहा—'लानत है

बदचलनी पर···।'

'या मेरे अल्ला ! यह बदचलनी नहीं है। एक गैर औरत ! कौन है यह तुम्हारी, जो तुम···।'

मैंने कहा—'मेरी विवाहिता पत्नी—और कौन ?'

'मगर तलाक देने के बाद !'

'कैसा तलाक' मैंने कहा—'कैसा तलाक ! क्या फिजूल बकती हो। यह मेरी विवाहिता है।'

'और तुमने तलाक नहीं दिया ?'

'मैंने तलाक दिया था, बेशक एक तलाक दिया था और पूछो इससे। बीस दिन के अन्दर-अन्दर वापस कर लिया।'

'तो वह तलाक नहीं होता और वह कागज ?'

मैंने कहा—'देख लो कागज को। मैंने एक तलाक रजी यानी वापस होने वाली लिखी थी तो वापस कर ली।'

'मैं नहीं जानती रजू-फजू। तुम इसको तलाक दे चुके हो और यह मुर्दा अब कोई नहीं—निकालो वेश्याजादी को।'

मैंने कहा—'नहीं जानती हो तो किसी को कागज दिखा कर पूछ लो। वह तो कच्ची तलाक थी, रद्द हो जाने वाली और मैं तलाक वापस ले चुका।'

'और मुझे बताया भी नहीं।'

'नहीं।'

'तो यह कहो कि मुझे धोखा दिया।'

चुप रहा मैं।

'बोलते क्यों नहीं, मुझे धोखा दिया तुमने···और वे रुपये दो सौ ?'

'वे रुपये जमा हैं बैंक में।'

'तो मुझको धोखा दिया तुमने। मैं तुमसे ऐसी उम्मीद न रखती थी···।'

एकदम से वह सिर पकड़ कर रोती हुई बैठ गयी। फिर इस बुरी तरह रोयी कि मैं घबरा गया। 'हाय, मुझे तुमने धोखा दिया!' उसने बिलख कर कहा। मैंने बेचैन होकर कहा—'नेकबख्त! बेशक धोखा दिया। खतावार हूं तेरा, गुनहगार हूं। जो सजा चाहे और जिस तरह चाहे दे ले, पर खुदा के लिए माफ कर दे।'

उसने आंसू पोंछते हुए कहा—'मैं बेचारी क्या माफ करूंगी, अगर सच्चे हो तो वायदा करो कि अब धोखा न दोगे।'

मैंने कहा—'तेरे प्यार की कसम, अब कभी धोखा न दूंगा।'

वह बोली—'ठीक, बेहतर—अच्छा तो निकालो इस मुर्दी को अभी-अभी तलाक दो''दो, चुप क्यों हो?'''बोलो'''दोगे तलाक? चलो मैंने गम खाया—माफ किया। अभी-अभी उसको तीन तलाकें दो'''बोलो—बोलते क्यों नहीं?'

'तलाक!' मैंने दबी जबान से कहा।

'हां तलाक—इसको तलाक दो।'

'यह नहीं हो सकता', मैंने दबी जबान से कहा।

'नहीं हो सकता।' दहाड़कर वह बोली—'अरे! क्या कह रहे हो? यह मैं क्या सुन रही हूं?'

मैंने कहा—'आखिर बड़ी बीवी भी तो थीं! इसने कितने अह-सान किए हैं? बेशक नहीं हो सकता यह।'

तेज होकर उसने कहा—'उसकी यह जूती बराबर भी नहीं।'

मैंने कहा—'तनिक इन्साफ से काम लो। आखिर तुम्हारा क्या नुकसान है? क्या हर्ज है जो पड़ी रहे? इसने कैसी खिदमत की है! कैसे काम किए हैं, कैसी वफादार है! कैसी फरमांबरदार और मेहनती है!'

छोटी बी ने कहा—'मैं सब अहसान इसके उतार दूंगी। मुझे कोई ऐतराज नहीं, मगर तलाक तो दे दो।'

'तलाक देकर मैं रखना नहीं चाहता। मैं ऐसी खिदमत करने

वाली औरत पर जुल्म नहीं करना चाहता। तलाक देना तो जुल्म होगा।'

वह बोली—'और मेरे ऊपर'''मेरे ऊपर जुल्म करोगे ?'

'अरे! खुदा से डर नेकबख्त! खुदा से डर। मैं, और तेरे ऊपर अत्याचार! आज तक मैंने तेरे खिलाफ कोई बात नहीं की। जान और ईमान सब तेरा—मैं तेरा। मैं और तेरे ऊपर जुल्म! आखिर तेरा क्या नुकसान है ?'

छोटी बी ने कहा—'मेरी हानि हो या न हो—मैं इसको हरगिज नहीं चाहती। साफ बात है, इसको या तो निकालो या मैं निकल जाती हूँ।'

'तो मुझे निकाल दो।'

'मगर उसको नहीं निकालोगे ?'

'मुझसे यह जुल्म नहीं होगा।

'बेहतर है, बहुत अच्छा—मत निकालो।'

यह कह कर वह अपने पलँग पर जाकर मुँह लपेट कर जो पड़ी है और रोना शुरू किया है तो खुदा की पनाह। दुनिया की खुशामदें कर डालीं। कैसी-कैसी अनुनय-विनय कीं, कैसे-कैसे मनाया और समझाया। मगर वहाँ तो बस एक शर्त थी 'या तो इसे निकालो या मुझे।' सुबह तक यही किस्सा रहा। बच्चा बाहर नौकर के पास सो रहा था। सुबह उसने भी उठकर फजीहता जोतने में माँ का हाथ बटाना शुरू किया।

मैं दफ्तर गया तो छोटी बी ने चमकी को घर से निकालना चाहा। वह न निकली और गान्धीजी वाली कार्यवाही उसने शुरू कर दी। चुप होकर रह गयी। हजार जवाब चुप्पी और फिर जो छोटी बी ने उसे मारना शुरू किया है तो थप्पड़, लात, जूती, लकड़ी—सभी नुस्खे देख लिए, मगर किसी से भी लाभ नहीं हुआ। जब तक मैं दफ्तर से आऊँ, चमकी को अधमरा करके रख दिया। मगर शाबाश

है उस बन्दी को, एक शब्द जबान से न निकाला। चूल्हे ठंडे पड़े थे। किसी ने कुछ न खाया था। नौकर ने बाजार से लाकर बच्चे को कुछ खिला दिया था। मैं भी भूखा ही गया था और भूखा ही आया तथा वही नक्शा अब भी पेश था। मैंने बाजार से खाना मँगवाया, मगर किसी ने न खाया। न चमकी ने और न छोटी बी ने।

ज्यों-का-त्यों वही नक्शा जमा था। छोटी बी ने रोते-रोते अपना बुरा हाल कर लिया था। अब मूर्च्छावस्था-सी थी। रात आयी तो चमकी ने जाकर छोटी बी के पैर पकड़ लिए और कहा कि—'बीबी जी, मेरा अपराध क्षमा कर दो'—और मुझसे कहा—'आलीजाह, मैं एक लौंडी हूँ। मेरे लिए क्यों अपना घर बिगाड़ते हो? मुझको निकाल दो, जी चाहे तो···।' और यह कह कर उसकी आवाज घुट गई, वह रोने लगी।

छोटी बी झट चैतन्य होकर उठ बैठी और इसकी प्रतीक्षा में कि मैं कुछ कहूँ और उधर मैं चमकी की मूर्खता पर सच पूछिए तो बड़ा घबराया। अब मुझे निकालने में क्या आपत्ति थी? मगर नहीं, खुद सोचिए कि मैं किस तरह अन्याय करता। अतः मैंने चमकी के सह-मत होने पर भी अन्याय करना अस्वीकृत कर दिया। मैंने साफ-साफ कह दिया कि मुझसे तलाक नहीं दी जायगी और मुझसे अन्याय नहीं होगा।

छोटी बी ने चमकी से जो कहा कि स्वयं निकल जा, काला मुँह कर यहाँ से। तो वह बोली—'मैं कहीं की भागी या आँख लगाई थोड़े ही हूँ। जिस तरह मुझे आदर-सम्मान से लाए हैं, वैसे ही विदा कर दें। मैं नहीं चाहती कि आलीजाह का घर बिगड़े।'

और यह कहकर उसने भी रोना शुरू किया और मैंने चमकी को निकालने से बिल्कुल इन्कार कर दिया। यह उलझन अत्यधिक लम्बी थी और असह्य थी जिसकी समाप्ति यों हुई कि घर-बार छोड़ दूसरे ही दिन सुबह की गाड़ी से छोटी बी नौकर को साथ ले मैके चल दी।

छोटी बी के जाने से मालूम हुआ कि फोड़े का मवाद निकल गया। चमकी का चित्त निस्संदेह अत्यन्त मलिन था और वह रो भी रही थी। तथा कहती थी कि अपना घर न बिगाड़ो, मगर यह भी कहती थी कि 'मैं बिना आलीजाह के नहीं जी सकती।' और यह हाल कि दिल को एक इत्मीनान हासिल था। यह तो एक दिन होना ही था। खूब हुआ! अब देखो, ऊँट किस कल बैठे। छोटी बी के भाई को मैंने तार दे दिया था कि बहिन तुम्हारी आती है।

छोटी बी ने घर पहुँच कर सारा मामला रिश्तेदारों और अजीजों में पेश किया। वहाँ जिसने भी सुना, सारा नकद जेवर और माल तथा खुद को एक औरत पर छोड़ कर चली आई तो घबरा गई। यह तो कदापि न करना चाहिए था। जिसने सुना, यही कहा कि अरे दौड़ जल्दी। अतः छोटी बी अपने भाई को लेकर वापस आई।

मुझे जब तार मिला है तो मैंने चमकी को समझा दिया कि, चुड़ैल, तू कदापि सहमत न होना और जो तू फिसली तो मारे जूतियों के तेरा कचूमर निकाल दूंगा। मैंने उसको भली प्रकार समझा दिया कि अगर तुझसे निकलने को कहे तो यह कहियो कि मेरी जिन्दगी खराब हुई, जात-बिरादरी से गई और कहीं की न रही तथा अब निरपराध नहीं निकल सकती। कोई दोष हो तो निकालो। यों नहीं निकलूंगी, चाहे मार डालो।

दूसरे दिन मौलाना 'काल अल्ला' मय अपनी बहिन के आ गये। मैंने उनका नाम 'काल अल्ला' यों रक्खा था कि आवश्यकता से

बहुत सोच-विचार कर 'काल अल्ला' ने मुझसे प्रश्न किया।

'क्या आप इसे अलग घर में नहीं रख सकते ?'

'अरे भाईजान !' कहकर छोटी बी उछल पड़ीं। 'यह क्या, दूसरे घर में इसे बेगम बनाकर रक्खा जायगा ?'

'तो फिर ?' काल अल्ला ने बहिन से पूछा।

'तो फिर क्या, निकलवाइयेगा मुर्दी को।'

काल अल्ला बोले—'तू तो मूर्ख है। तूने यह बवाल मोल ही क्यों लिया था ?'

यह सुनकर छोटी बी ने रोना शुरू किया और मैंने 'काल अल्ला' से कहना शुरू किया—'आप जो निर्णय दें, मुझे स्वीकार है। कहीं अलग ले जाकर रक्खूं ?' वे बार-बार यही कहते थे कि 'खुद करदा रा इलाजे नीस्त।' और फैसला छोड़-छाड़ भाईजान ने बहिन को राय दी कि अब जिस तरह बने, गुजारो। क्योंकि 'काल अल्ला ताला' खुदा का हुक्म है कि बीवियों में बराबर का बरताव रक्खो और इन्साफ करो।

'यह मुर्दी मेरी बराबरी करेगी···मेरी बराबरी ?···या मेरे अल्ला ! मेरा कोई नहीं है। खुद मेरा भाई···!'

भाईजान ने कहा—'काल अल्ला ताला···हुक्म खुदा बन्दी है कि···।'

'या मेरे अल्ला !' छोटी बी ने सिर पीटकर कहा—'यह हुक्म खुदाबन्दी भी मेरे ही खिलाफ हो गया। या मेरे अल्ला, मेरा कोई नहीं रहा !'

यह कह कर उसने रोना शुरू किया। रह गया निर्णय, वह मेरे पक्ष में मिल चुका था। मैं स्वयं उठकर अलग हो गया। और उन्होंने बहिन को समझाया। उसी दिन वे जा रहे थे और इसके बाद मुझसे उनका कोई और खुलासा या काम की बात नहीं हुई।

भाईजान को स्टेशन पहुंचाने गया तो उन्होंने मुझसे कुछ निहा-

पत हो। जरूरी बात का। उन बातों का घुमा-फिरा कर यह मतलब था कि वे अपनी बहिन को समझा आये हैं कि मर्द, मर्द है और अब कोई युक्ति नहीं। यह भी अगर मैं केवल मन रखने के लिए छोटी बी की चाटुकारी करूँगा, क्षमा-याचना कर लूँगा और चमकी से भी क्षमा मंगवाऊँगा तो छोटी बी सहमत हो जायगी। अन्धा क्या चाहे—दो आँखें। यहाँ एक छोड़ दस क्षमा-याचनायें करने को तैयार। साथ ही उन्होंने बहिन की सिफारिश भी की और मुझे बहुत ही काम की नसीहतें भी दीं। अतः मैंने उनसे वायदा किया कि मैं छोटी बी को राजी कर लूँगा। और मैंने फिर जोर देकर कहा कि अगर मेरी खता हो या कोई दूसरी सूरत हो तो बतायें। कुछ कहना चाहा, मगर चुप हो गये और यही कहा कि तुम्हारी कोई खता नहीं है।

चलते-चलते पुनः मुझे चेतावनी दी और मुझे सविस्तार बताया कि वह अपनी बहिन को किस तरह समझा-बुझाकर भलाई का परामर्श दे आये हैं और जता आये हैं कि इसका उत्तरदायित्व स्वयं उस पर है और अब कोई दूसरी युक्ति नहीं। धीरज, कृतज्ञता और युक्ति से काम लो। मैंने एक-एक पक्की प्रतिज्ञा करके भाईजान को विदा किया और घर आया।

घर पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि चमकी झपटी ऊपर जा रही है। मैंने पुकारा—'अरी ओ चुड़ैल!' वह रुक गई। मैंने छोटी बी की बाबत पूछा तो मालूम हुआ कि वह बैठी रो रही है। मैंने कहा—'और तूने उनको राजी नहीं किया? देख, अगर तनिक भी तूने उनके काम या खिदमत में कमी की या अगर कोई भी हरकत की, तो...।'

'आलीजाह!' उसने हाथ जोड़कर कहा—'वे राजी नहीं होतीं।'

मैंने सख्ती से कहा—'कैसे नहीं होतीं। तुझे राजी करना पड़ेगा। अगर राजी नहीं हुई तो बस समझ ले कि तेरी खैर नहीं।'

उसने उसी तरह हाथ जोड़े। अजीब अदा से आँखें जल्दी-जल्दी झपका कर देखा और कुछ बोलना चाहा। मैंने एक हल्का-सा चाँटा मारा और अन्दर आया।

मैंने चुपके से झाँक कर कमरे में देखा। छोटी बी सिर पकड़े पलंग पर बैठी किसी गहरे सोच में थी। मैं धीरे-से प्रविष्ट हुआ। उसने अपना अत्यधिक दुखी और सुन्दर चेहरा उठा कर एक अत्याचार-पीड़ित की भाँति मेरी ओर देखा—ऐसे कि मेरा दिल हिल गया, जी भर आया, जज़्बात के बूते से बाहर हो गया और मैंने छोटी बी के पैर पकड़ लिए। सिर कदमों पर रख दिया। और पैगम्बर के वास्ते दिए। मुझे भी रोना आ गया। और वह भी खूब रोई। मैंने सीने से लगा लिया और वह भी मुझसे चिपट कर खूब ही रोई। मैं भी हल्का हो गया। मैंने अपने शाश्वत प्रेम का विश्वास दिलाया, क्षमा माँगी और हर तरह दिलासा दी। चमकी ने भी आकर पैर पकड़ लिए और सिर कदमों पर रख दिया और हाथ जोड़ कर कहा कि मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की लौंडी हूँ और रहूँगी। मेरे अपराध क्षमा करो और राजी-खुशी से मुझे अपने कदमों में पड़ा रहने दो। उधर मैंने सिफारिश की, उसकी खिदमतों का जिक्र किया। भाईजान का परामर्श अलग था। अतः छोटी बी ने चमकी के अपराध भी क्षमा कर दिए और उसने मारे खुशी के छोटी बी के पैरों को चूम लिया और फिर आँसुओं से तर कर दिया। इस तरह खुदा-खुदा करके यह कठिन समस्या हल हुई। जिसका हक था, उसको हक पहुँच गया। किसी ने सच कहा है—'बड़ा मजा उस मिलाप में है जो सुलह हो जाय जंग होकर।' मैंने चमकी से कह दिया और खुद भी समझाया कि अपनी नजरों के आगे इस समय छोटी बी की पराजय की लज्जा दूर करनी है। रंज व दुःख की मलिनता दूर करनी है। कोई प्रयत्न इस कार्य को पूरा करने में शेष न रहने दिया जाय। अतः हम दोनों छोटी बी की

ललो-चप्पो करने पर तुल गए।

बिना किसी प्रकार की मक्कारी तथा कृत्रिमता के सच कहता हूँ, कि मैंने छोटी बी को पराजय में अत्यन्त प्रसन्न पाया और अपनी मुहब्बत के उत्साह व आवेश को दुगना। मेरी मुहब्बत का दरिया था कि उमड़ पड़ा। उठते-बैठते उससे अपने अपराधों की क्षमा माँगता। मारे प्यार के पागलों की तरह उसको कलेजे से लगाता। उसकी मुहब्बत का खयाल करके दिल भर आता। स्वयं बेचैन हो जाता और उसको भी व्यथित कर देता। अपने शाश्वत प्यार का प्रमाण अपनी भावनाओं और कार्यों से दे रहा था। मुहब्बत और मुहब्बत के प्रदर्शन में वस्तुतः एक छटपटाहट थी। घन्टों इस आत्मिक वेदना पर पश्चात्ताप करता जो मैंने उसे पहुँचाई थी और चमकी के अस्तित्व और उसके अधिकारों की भी चर्चा करता, तो ऐसा रंग देकर कि यह एक अप्रिय और असह्य आवश्यकता है और चूँकि वह भी प्राणी है, अतः विवशता है और जितने की अधिकारिणी है उससे अधिक इसको कभी न दिया जायगा। मैंने वचन पर वचन दिए कि चमकी को उसकी हैसियत से कभी न बढ़ाऊँगा, वह लौंडी है और लौंडी रहेगी। उसके साथ मुझको भला क्या प्यार हो सकता है ? बस, एक लौंडी। बीवी, बीवी है और लौंडी, लौंडी। किस्सा संक्षिप्त, मेरे हृदय की सचाई, मेरी विह्वलता और मेरे शाश्वत प्यार ने छोटी बी को राजी कर लिया। छोटी बी ने दिल से कहा—'मैं जानती हूँ कि तुम मेरे हो और मेरे ही रहोगे—चाहे एक छोड़ ऐसी चलती-फिरती दस चमकियाँ आ जाएँ।' मैंने इस वाक्य पर खुदा को धन्यवाद अदा किया और अपनी चहीती बीवी को गले से लगा लिया और फिर मैंने हँसते हुए कहा—'अल्ला की बन्दी, जबसे तू रूठी है, जीने का मजा जाता रहा है। अब हो जाए एक जोरदार जलसा इस खुशी में !' खुद सोचिए, अल्ला की दी हुई एक छोड़ दो जोरुएँ। एक नाच रही है और दूसरी गा रही है।

अगर छोटी बी के गाने में एक टीस थी तो चमकी के गाने में एक चमक और नाच के छमाके में सौंदर्य की एक मनमोहक झंकार थी। अदा में एक अवर्णनीय उच्छृंखल, मनोहरता थी, ऐसी कि उसकी नपी-तुली भाव-भंगिमा पर छोटी बी को भी हँसने के अवसर पर हँसना पड़ा और प्रशंसा के अवसर पर प्रशंसा करनी पड़ी। इधर मेरा विचार स्पष्ट है कि जीवन एक हृदयाकर्षक सुन्दर स्वप्न था जो दोनों के मधुर प्यार का केन्द्र बना हुआ था।

इस भलाई के आवेश का पहला रेला भी इस भाँति हृदया-ह्लादक और आनन्ददायक था—ऐसा कि मैं उम्र-भर वे बातें नहीं भूल सकता। नित्य नियमित रूप से गाना-बजाना और नाच होता। इस दशा में मेरे और दोनों की नजरों के आगे सिर्फ यह प्रोग्राम था कि छोटी बी के साथ जो कुछ भी ज्यादती हुई है उसका परिशोध हो जाय और वह प्रसन्न हो जाय। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मेरा पागलों जैसी प्रीति का प्रदर्शनथा अगर एक ओर तो दूसरीओर थी चमकी की सेवा। वह अपनी स्वामिनी के आगे बिछी जाती थी। उसकी स्वामिभक्ति, सेवाभाव और चाटुकारिता वर्णन में नहीं आ सकती। बात-बात पर छोटी बी के पैर चूमना, आँख के इशारे पर दौड़ना और काम करना। परिणाम स्पष्ट है। एक उत्साह के साथ प्रसन्नता के प्रवाह में हम बहे जा रहे थे। छोटी बी भी इन्सान थी। कैसे हम दोनों से प्रसन्न न होती? आवश्यकता से अधिक उसको हमने खुश कर रखा था, किन्तु यह सचाई है कि कोई भी व्यक्ति आयु भर नहीं दौड़ सकता, मध्यमान पर आना अनिवार्य है। और मध्यमान पर आते-आते यह दशा हुई कि मैं सोचने लगा कि भला-इयाँ जितनी रुचिकर हैं, कहीं उतनी ही अस्थायी न निकलें।

यह तो स्पष्ट है कि नई वर्तमान स्थिति के कारण मुझको अधि-कार प्राप्त था कि चमकी से स्वतन्त्रता से मिलूँ। उसके साथ स्वत-न्त्रता का व्यवहार करूँ। लेकिन मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया।

चमकी की ओर से इस भाँति उपेक्षा बरती कि वर्णन नहीं कर सकता। ऐसा कि मेरे लिए कष्टकारक था, अत्यन्त कष्टदायक। लेकिन मैंने सहन किया ताकि छोटी बी यह सोचे कि मुझको उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है। तनिक भी उससे लगाव नहीं है और जो कुछ भी है, वह सिर्फ इस वजह से कि उसने खिदमतें की हैं और उसे बतौर लौंडी रखना है तथा वह भी आखिर को इन्सान ही।

अतः वर्तमान दशा यह थी कि मैं चमकी के साथ बिल्कुल नहीं उठता-बैठता था। मेरा स्थायी निवास छोटी बी के कमरे में था। और दिलचस्पी का केन्द्र भी छोटी बी थी। यह और बात है कि कभी छोटी बी सो गई या कोई बात-चीत न हुई तो थोड़ी देर को चमकी के पास ही बैठ आया। मानो केवल समय बिताने के लिए। और जनाब, सच तो यह है कि छोटी बी के कथनानुसार 'अगर तुमको चमकी से तनिक भी मुहब्बत होती तो रोकने वाला कौन था। कब का तुमने उसे गले का हार बना लिया होता। क्या मैं जानती नहीं हूँ, बच्चा हूँ! तुम शौक से जाओ उसके पास।'

२६

एक दिन की बात है कि मैं तनिक देर से लौटा। एक जगह दावत में गया था। वापस जो आया तो देखा कि छोटी बी पड़ी सो रही है। मैंने कहा—'क्या सो रही हो?' और बातें करना चाहीं। कहने लगी, सिर में दर्द है; बातें करने को जी नहीं चाहता और सिर में सख्त दर्द है। मैंने कहा—'मेरी नींद गायब है, गप-शप को जी चाहता है।' जवाब में मुस्करा कर कहने लगी कि तुम अपनी चहीती

के पास जाओ।'

मैं खड़ा तो था ही, करीब आकर मैंने गुदगुदाया और खबर लेना चाहा तो तनिक रुखाई से कहा—'मुझे सोने दो, मेरा सिर फटा जाता है। तनिक जाकर देखो तो बेगम साहिबा क्या-क्या लाई हैं?'

मैंने कहा कि सिर दबवाऊँ तो मालूम हुआ कि चमकी अभी सिर और पैर दाब कर गई है। और लाने के बारे में पूछा तो कुछ और भी नाराज होकर कहा कि 'स्वयं जाकर देख लो। मैं बाद में कुछ कहूँगी।'

मैं कुछ देर चारपाई पर चुप बैठा रहा। फिर धीरे-से उठकर चमकी के कमरे में गया। वह पलंग पर लेटी थी। फौरन धीरे से 'आलीजाह' कह कर दोनों हाथों से दंडवत् करती, फूल की तरह मुस्कराती पलंग पर से फाँद पड़ी। मुझसे पलंग पर बैठने को बड़े आदर से इंगित किया और बैठते-बैठते जमीन पर बैठ कर मेरे पैर दबा-दबा कर चूमने लगी। मैंने प्यार से गाल पर एक थपकी दी और पैर के स्थान पर उसके हाथ में अपना हाथ दबाने को दे दिया। उसने मेरे हाथ को गरम-गरम बोसों से तर कर दिया और बार-बार आँखों से लगाया। मैंने कंधे पर उसके हाथ रक्खा और बैठने की आज्ञा दी। वह उठी और पंजों के बल जाकर उसने छोटी बी के कमरे में झाँक कर देखा, धीरे-से दरवाजा बन्द कर दिया और फिर एक दिलरुबा अदा से जवानी की तस्वीर बनी, मुस्कराती और मद-भरी आँखें झपकाती हुई इस तरह आगे बढ़ी है कि मुझे बेचैन कर दिया। उसकी उस सुकुमारता ने गजब ढा दिया। बेचैन होकर मैंने अपनी गोद में लेने को अपने दोनों हाथ फैला दिए और वह झपट कर मेरे सीने से आ लगी। मैं प्रेमावेश में उसको गले लगाए हुए और वह प्यार से मेरी गर्दन में अपना मुँह दिए एक काँपती हुई आवाज में कहती 'आलीजाह' और मेरे तन-बदन में प्यार की

एक लहर-सी दौड़ जाती और मैं उसको और भी प्यार से गले लगाता। दरअसल आज काफी समय के बाद वह मुझसे मिली थी। मेरे सीने पर अपना सिर रखे हुए मानो मेरे दिल की धड़कन सुन रही थी। मैंने उससे कहा—

'क्यों री—क्या तू ये चीजें आज लाई है ?'

खुश होकर वह उठ बैठी। मुस्करा कर बोली—'आलीजाह को दिखाऊँ।' यह कह कर वह उठी और मैंने देखा कि दो नये ट्रंक रक्खे हैं। उसने सब सामान मुझे दिखाया। तनिक विचार तो कीजिए उसके पास अपने इनाम के रुपये थे, कुछ रुपये छोटी बी ने उसको दिए थे। जब छोटी बी चली गई थीं, तब एक जंगली औरत और यह दिमाग ! कोई पचास-साठ रुपये बिगाड़ आई। पलंग की चादरें, तकिया के गिलाफ, खुशबूदार साबुन और पाउडर तथा तेल, एक खासा बड़ा आईना और कंघा, फर्स्ट क्लास फेस-क्रीम, बालों में लगाने के कई तरह के पिन, साबुनदानी, शीशे का गिलास, कई बढ़िया किस्म की साड़ियाँ और रेशमी रूमाल और गजब पर गजब एक स्याह रंग का पम्प शू ! यह कहिए वह तो खैर हुई कि ऊँची एड़ी का लेडी-शू नहीं लाई। मतलब यह है कि इसी किस्म की अल्लम-गल्लम चीजें थीं।

मैंने यह देख कर कहा—'क्यों री, क्या जूते खाने की सलाह है ?'

मुझे मुस्कराता देख कहने लगी—'आलीजाह, तुम्हीं तो कहते थे, मैली-मैली···। मैं समझती थी कि बीबीजी खुश होंगी।'

'फिर वे खुश हुईं ?'

'वे तो बहुत ही नाराज हुई हैं। मुझको क्या मालूम था ! मैं बहुत परेशान हूँ जब से।'

'क्या कहा उन्होंने ?'

'उन्होंने कुछ नहीं कहा, लेकिन न तो अच्छी तरह पैर दबवाए,

न बदन दबवाया और न सिर दबाने दिया और मैंने जिद की तो मुझे झिड़क दिया। चीजें लाने के बाद ही से सीधी तरह नहीं बोलीं'''और मैं बहुत हैरान हूँ और सोच में पड़ी हूँ कि अब क्या करूँ ?'

मैंने कहा—'यह कर कि कल ही बीबीजी के पैर पकड़ ले और हाथ जोड़ कर माफी माँग'''और देख' मैंने उसकी ठोड़ी ऊपर करके कहा, 'तेरा इन चीजों को जी चाहता है ?'

उसने मेरी आँखों में आँखें डाल कर एक क्षण देखा, और झेंप कर मुँह नीचे कर लिया।

मैंने कहा—'अरी, बोल !'

जवाब में सिर हिलाया।

मैंने जब कहा—'पहले साड़ी पहिन—देख तो सही !' तो इन्कार करने लगी। वजह पूछी तो मुस्करा कर कहने लगी कि शर्म आती है। मैंने कहा—'पहिन'''तनिक देखूँ तो।' वह इन्कार ही करती रही और मैंने उसका तमाशा बनाया। न मानी तो चन्द मार दी। पीठ पर कस-कस कर घूँसे दिए ऐसे कि मुँह फाड़ कर दोहरी हो गयी। कहलवा लिया कि शर्म नहीं करूँगी और पहनूँगी अभी। और फिर मैंने उसे फर्स्ट क्लास फूलदार साड़ी पहिनायी, जूता पहिनाया। स्वयं अपने हाथ से उसके सिर में कंघा किया और देर तक उसको तमाशा बनाकर खेलता रहा। और फिर उससे कहा कि चलकर सामने आ तथा दोनों हाथ जोड़ कर नहीं, बल्कि एक हाथ से हमें सलाम करो। यदि यह सब न किया जाये तो पिटो। मैंने कहा—'चुड़ैल, तेरी यह ही सजा है, तू इन्हें लाई कैसे ?'

और यह सब सचमुच उसको घूँसे खा-खा करना पड़ा और यह ड्रामा यों खत्म हुआ कि जब उसने सलाम किया है तो मारे शर्म के मर-मिटी और मैंने दोनों हाथ बेचैन होकर फैला दिए और वह

मेरे सीने से आ लगी और मैंने उसे प्यार से सीने से भी चिपटाया और उसको मारा भी खूब। खुदा जाने, क्या भोंड़ा और भद्दा मजाक था। एक जोर से दिया जो घूंसा तो रह गयी मुँह फाड़कर, मुस्कराती 'आलीजाह, आलीजाह' करती हुई।

मैंने इन वस्तुओं को अच्छी नजर से नहीं देखा। ये सामग्रियाँ तो छोटी बी के लिए ही उचित हैं और ये चीजें तो उसकी दिलकशी को खो देंगी। मगर मैंने कुछ भी नहीं कहा 'यह सोचकर कि आखिर को नयी उम्र है। अपने हिसाबों यह लन्दन में है और फिर अपने पैसे से लायी है। इन चीजों में साफ बिछौने की चादरें और तकिया का गिलाफ, ये चीज तो बिलकुल ऐतराज के काबिल नहीं। कम-से-कम मैं इस समय जिस बिछौने पर बैठा था वह मेरे ख्याल से बिलकुल मैला और इस्तेमाल करने के काबिल नहीं था। हाथ वैसे साबुन से ही वह अक्सर धोती थी। आड़ी-तिरछी माँग निकालना खुद छोटी बी से पहले ही सीख चुकी थी। मुँह पर पाउडर लगाना खुद छोटी बी ने सिखाया था। लिहाजा मैं चुप रहा; लेकिन पलंग की चादर मैंने फौरन बिछौने पर बिछा ली और तकिया का गिलाफ चढ़ा लिया। लेकिन वह स्वयं घर पर क्या और बाहर क्या, नंगे पैर रहने की अभ्यस्त थी। अतः मैंने कहा—'और यह तेरे खुर जो सदैव मैले रहते हैं।'

हँस कर कहने लगी—'जूता पहिनना भूल जाती हूँ।'

और दरअसल इसको जूता पहिन कर चलने में न केवल कष्ट-सा होता था, बल्कि संकोच भी और पम्प शू को तो मैंने यह तजवीज किया कि 'यह तो पिटने के वास्ते रख ले, अत्यन्त फैशनेबुल रहेगा।'

संक्षिप्त में, मैंने सिवा इसके और कुछ न कहा कि छोटी बीबी को राजी कर ले और पलँग की चादर और तकिया के गिलाफ को तो पसन्द किया। कहने लगी कि 'आलीजाह, तुम्हारे लिए लायी हूँ,

मैं इस पर थोड़े ही बैठूँगी।'

दूसरे दिन सुबह मैं देर से उठा। नाश्ते के समय छोटी बी ने चमकी की शिकायत की। संकेत द्वारा मेरा ध्यान उस वचन की ओर आकर्षित किया कि चमकी को हैसियत से न बढ़ने दूँगा और उसको उसकी जगह पर रक्खूँगा और क्या यह आपत्तिजनक बात नहीं कि वह ये समस्त चीजें बिना मेरी आज्ञा के ले आयी। कम-से-कम उसको पूछना तो चाहिए था। मैं छोटी बी की राय से सहमत हुआ और आवाज दी—'चमकी।'

'हुक्म'''हुक्म' करती वह आयी। छोटी बी के तेवर देखकर समझ गयी। मैंने उससे कहा—'देख, हमें तेरे पैसे से कुछ बहस नहीं है, तेरा जी चाहे वैसे खर्च कर'''(यह इसलिए कहा कि छोटी बी को जता दूँ कि उसका पैसा है और हमें क्या मतलब) मगर यह क्या हरकत की कि किसी से चर्चा तक न की—पूछा तक नहीं।'

खुदा जानता है, दरअसल या फिर बनावटी तौर पर—जैसे वह सख्त घबराहट में किया करती थी, कुछ सहम कर, डर के मारे काँप गयी। 'अरे बाप जी'''अपनी बोली में कहकर सीधी छोटी बी के पैरों पर गिर पड़ी और कहा—'अब नहीं लाऊँगी।'

छोटी बी ने जलकर कहा—'मुझे ये चोंचले अच्छे नहीं लगते हैं। आयी वहाँ से बाप जी और माँ जी'''छोड़ मेरा पैर।'

यह कहकर पैर झिड़क लिया और त्योरियाँ बदल कर इस तरह पलंग पर हो बैठी कि व्यवहारिकता की ऐसी कमी और उसके भद्दे प्रदर्शन का कम-से-कम छोटी बी में होना मैं पसन्द न करता था। और उस समय मैंने एक विशेष बात देखी। एकदम से छोटी बी का चेहरा ऐसा मालूम हुआ कि इन खयालात और जज्बात का आईना है, जो चमकी की ओर से उसके दिल में, उसकी प्रति पल सेवाओं और लल्लो-चप्पो के होते हुए भी मौजूद है। क्या मैं धोखे में था ? नहीं और कदापि नहीं। परस्पर मेल के होते हुए भी केवल

मेल का प्रारम्भिक समय तो प्रीति और आवेग के तीव्र प्रवाह में बह गया; लेकिन उसके बाद मैंने छोटी बी में जवानी की वह तड़प नहीं देखी, वह हँसती भी थी, मनोविनोद भी करती थी और गाती-बजाती भी थी, मगर किस उपेक्षा भाव से—और किस अप्रसन्नता से! बस, यह मालूम होता था कि खुश तो है—हँस भी रही है, लेकिन किसी चीज की कमी ही है। वह क्या कमी है। खुदा जाने! पहले तो मैं उसको हार और शर्म का हल्का-सा नशा समझा और ख़याल किया कि चाटुकारिता और प्यार से यह बात जाती रहेगी और सचाई यह कि जाती भी रही, मगर एक थोड़ी-सी झलक बराबर शेष थी। मानो एक बहुत ही थोड़ी और हलकी-सी हरारत या ज्वर, और मैं देखता था कि कुछ बुझी-बुझी-सी रहती है जिसका नतीजा यह कि तबियत एकदम कुन्द हो गयी, दयार्द्र चित्त हो गयी। ऐसा कि जब जी चाहे मुहब्बत से गले लगाकर रुला दो। एक-दम से इस समय सारी सचाई मानो आईना हो गई। ऐसी कि मैं कहीं-से-कहीं पहुंच गया। यह पारस्परिक मेल-जोल अस्थायी-सा मालूम दिया। प्रश्न यह था कि क्यों न मैं चमकी से कहूं, आज ही नौकर के हाथ ये सब चीजें वापस कर। शायद यह कि मुस्तकिल इलाज साबित हो। उम्मीद तो भला क्या थी, लेकिन इस समय यह सूझी। मैंने डाँटकर चमकी से कहा—'अभी-अभी ये सब चीजें वापस कर। किस दुकान से लायी थी। ले जाकर अभी बता।' उसने हाथ जोड़ कर कहा—'बहुत अच्छा!' मगर चूंकि काम कर रही थी अतः यह तय हुआ कि बाद में दोपहर को वापस कर देगी। मैंने देखा कि इसका प्रभाव छोटी बी पर आसाधारण रूप से आनन्दवर्द्धक हुआ।

दफ्तर से शाम को जो आया तो मालूम हुआ कि चीजें वापस नहीं हुईं। केवल कुछ चीजें ऐसी हैं जो दुकानदार ने रख ली हैं, मगर इस शर्त पर कि इस कीमत की दूसरी चीजें ले लेना। तकिया के गिलाफों की वापसी का तो प्रश्न ही न था; क्योंकि खैर से 'बन्नो

बी' किसी ऐसे दुकानदार से लाई थीं जो चटाई बिछाकर सड़क के किनारे बैठा था और एक साड़ी और एक पलंग की चादर भी वापस नहीं हुई क्योंकि छोटी बी ने कहा, 'मजे से बन्नो बी ने इस्तेमाल कर ली हैं ···।' इस दशा में मैंने ही चादर बिछायी थी और साड़ी भी मैंने पहिनायी थी। इसके अतिरिक्त कि मैं कुछ कहता, मैंने कहा— 'क्या चादरें भी वापस करायी थीं? चादरों में क्या हानि है?'

कहने को तो मैं कह गया; मगर छोटी बी से आँख न मिला सका। वापस न की हुई चीजों का क्या हो? यह एक प्रश्न था। सरकार के हक में जब्त करके दाम वापस दे दिए जायें। इस प्रस्ताव को इस घृणा से छोटी बी ने ठुकराया है कि कहा नहीं जा सकता, 'क्या मुझे बाजार से नहीं मिल सकतीं। मैं तो छूने की भी नहीं।'

स्वयं चमकी ने कदाचित् उठाकर वहीं की वहीं पलँग पर से बरामदे की अलमारी के तख्ते पर रख दीं। मैंने चमकी को और भी लताड़ा। भविष्य के लिए सख्त चेतावनी दी। उसने हाथ जोड़-कर बार-बार क्षमा माँगी तो छोटी बी ने कहा—'यह माफी माँगने का तमाशा भी इसे खूब आता है।'

छोटी बी आज की कार्यवाही से मुझसे खुश थी। और इस कारण मैं भी प्रसन्न था, मगर छोटी बी के व्यवहार से कमीनेपन का प्रदर्शन हो रहा था जो मुझे कुछ पसन्द न आया। यह अत्याचार नहीं तो और क्या है! घर का साबुन और साबुनदानी प्रयोग करने में तो कुछ नहीं और उसकी अलग हो गई तो गजब हो गया। हालाँकि उसकी साबुनदानी में सनलाइट साबुन अधिक रहता था। इसको छोटी बी नहीं छूती थी। एक दिन मैंने खाना खाने के बाद हाथ धोए तो बोली—'अरे, यह चमकी का है।' तो मैंने कहा— 'क्या हुआ?' यह साबुन छोटी बी अपने या बच्चे के पैर धोने के काम में या और इसी किस्म के कामों के लिए अलग ही रक्खे हुए थी और दो-चार बार जब चमकी का मुंह धुलवा कर स्वाँग भरे

ग.६ थे और पाउडर और रोज मुँह पर उसके मलकर परी बनाया गया था तब भी यही साबुन काम में आया था और वैसे भी उसको साबुन से मुँह धोने की खुल्लम-खुल्ला आज्ञा थी। स्वयं आपने अपने बालों के क्लिप उसको दिए थे और जूते पहिनने की मार-फटकार तो सदैव ही से रही। क्योंकि वह फर्श पर 'पंजे' बनाने में निपुण थी और मैली रहने पर भी लताड़ी जाती थी। कहीं जा रही थी तो उजली साड़ी पहिन कर जमीन पर फसकड़ा मारकर बैठने के परिणाम में मुझे याद है एक बार जूता मारने ही की नीयत से घुमा कर फेंका गया था जो निशाने पर सही नहीं बैठा तो खूब लताड़ी गई थी। आड़ी-तिरछी माँग निकालने की जब-तब उसे आज्ञा थी; बल्कि उसमें संकोच था तो फिर मुझसे। छोटी बी से इस बारे में निस्संकोचता नहीं थी; बल्कि छोटी बी इस बात पर मुस्करा कर 'चुड़ैल' की उपाधि दे चुकी थी। इन बातों को दृष्टि में रखते हुए मुझे ये बातें नीचतापूर्ण ही मालूम दीं।

उसी दिन की बात है कि छोटी बी ने (मुझसे प्रसन्न तो थी ही और मैं चमकी पर अप्रसन्न था) चमकी के रहने के स्थान के विषय में जरा घुमा कर प्रश्न उठाया। पहले चमकी सामने वाले कमरों के बराबर एक कोठरी थी उसमें रहती थी। जब छोटी बी लड़कर चली गई तो मैंने उसे अपनी तरफ बुला लिया था और वह अपना सूक्ष्म-सा सामान इस कमरे में ले आई थी जिसमें वह अब रहती थी। यह कमरा खाली ही पड़ा था; क्योंकि हमारे पास छोटे-बड़े मिलाकर पाँच कमरे स्नानागार के अतिरिक्त थे। छोटी बी की इच्छा थी कि चमकी को यहाँ से निकाला जाय और फिर उसी कोठरी में भेज दिया जाय और इस प्रस्ताव को उसने इस प्रकार उठाया कि पहले एक नौकरानी का प्रस्ताव किया। यह प्रस्ताव ठीक था; क्योंकि इस वक्त चमकी के हाथ ठीक न थे; मगर कामों की सूची; एक ओर इस बात पर भी जोर दिया गया था कि इस ओर बिल्कुल

सन्नाटा है। कोई भी नहीं रहा। चमकी तो इधर चली आई है। इस 'सन्नाटे' पर मैंने गौर भी न किया। नौकरानी भी कदाचित् रखना अभीष्ट न होगा और केवल 'सन्नाटे' की चर्चा अभीष्ट होगी; क्योंकि आज फिर इस 'सन्नाटे' की बात चला कर चमकी के अक्षम्य दुस्साहस का कारण ही इसको बताया गया कि वह उस ओर रहकर बराबरी का दावा करने लगेगी, जिसके चिह्न बेढब थे। क्योंकि खुल्लम-खुल्ला कमरे की अलमारियों में अखबारों के कागज बड़े ढंग से बिछाए थे और आशंका थी कि अगर यही रफ्तार रही तो अजब नहीं कि फटी-पुरानी साड़ी के टुकड़े हमारी तरह वह भी रंग कर बिछाए। और फिर सूझेगी परदा डालने की, फिर एक फर्श और चाँदनी तथा मेज और कुर्सी आदि-आदि और फिर…!

मैंने इन बातों को गौर से सुना। कैसे मुहब्बत और नरमी से छोटी बी ने इस सवाल को उठाया था। किस प्यार से वह मेरे सिर के बालों से खेलती जाती थी…कभी मेरी कमीज के बटन से और कभी मेरे दाँतों को अपनी नाजुक अँगुली से मारती और कैसे मजे से बातें कर रही थी।

जरा खुद सोचिए कि वह कोठरी तंग व अँधेरी तो नहीं थी, मगर इस अर्थ में वह अवश्य अँधेरी थी कि सिवा रसोईघर और गोदाम के उस ओर सब कमरों की बिजली बिगड़ी हुई थी और फिर वह देखती थी कि मैं उसके कमरे में जाता था, उठता-बैठता भी था। क्या कारण जो उसमें एक मेज और कुर्सी न हो और क्या कारण जो शीशे का गिलास और पानी न हो और क्या कारण जो उसमें फर्श न हो और क्या कारण जो उसमें सफाई न हो? कोई कारण नहीं, लेकिन या खुदा! जरा गौर कीजिएगा कि इसके ये अर्थ भी तो हैं कि लौंडी अब लौंडी की तरह नहीं रहेगी, मेरे वचनों के होते हुए भी! और सचाई यह है कि इससे पहले मेरे लिए चमकी से इसी अँधेरी कोठरी में मिलना शायद बहुत खुशी का कारण

होता और मैं बराबर इसी दशा में खुश था।

मैंने चाहा कि इस मामले से दूर रहूँ और हूँ-हाँ करके टाल दूँ। लेकिन छोटी बी न मानी। किस प्यार से वह मुझसे बातें कर रही थी! कैसे विश्वास के साथ! और किस तरह वह मेरे प्यार के भरोसे पर मुझसे कह रही थी! मैं क्या कहता, किस तरह टालता! सिवा इसके लिए यही कहते बन पड़ा कि 'तुम भी अजब आदमी हो, भला मुझसे इन बातों को पूछती हो। मैं क्या जानूँ घर के बखेड़े। घर की स्वामिनी तुम हो कि मैं!'

और यह सुनकर बड़े प्यार से उसने मेरे गले में अपनी बाँहें डाल दीं और निहायत माशूकपन से अपना सिर मेरे सीने पर रख दिया और उसी तरह मेरे बालों से खेलती रही। उसकी बातों में कैसी दिल लुभा लेने वाली नरमी थी और वह किस कदर खुश थी! इसका अन्दाजा इससे लगा लीजिए कि मुझे बिलकुल इत्मीनान हो गया कि यह कल ही चमकी को कमरे से निकाल बाहर करेगी! बिना यह सोचे-समझे हुए कि मुझको उससे किस कदर तकलीफ होगी। मैं कैसे उसकी अँधेरी कोठरी में जाऊँगा और वहाँ बैठूँगा। यह खयाल आते ही मैं शान्त हो गया। इस खयाल ही से तबियत कुछ कुन्द-सी हो गई कि देखो तो सही कि तनिक भी इसको खयाल नहीं। बार-बार जी में आया कि कुछ कहूँ; लेकिन न कह सका।

दूसरे दिन दफ्तर से आया हूँ तो कमरा खाली था। चमकी रसोईघर में काम कर रही थी। इस कदर तबियत कुन्द हुई है और इस कदर यह बात नागवार मालूम दी कि कह नहीं सकता, लेकिन बिलकुल मैंने इसका जाहिर नहीं किया। छोटी बी फूल की तरह खिली हुई थी और शायद इस फिक्र में होगी कि मेरी तबियत का अन्दाजा लगाए। अतः मैं और भी सावधान हो गया और इसी सिलसिले में एक तनिक-सी बात पर चमकी को लताड़ कर फेंक दिया। खूब ही डाँटा।

न पूछिए, छोटी बी का क्या हाल था। खाना खाने के बाद जो हम दोनों बैठे हैं तो छोटी बी की दशा देखने के योग्य थी। प्यार के मारे गले का हार हुई जाती थी। बस न था कि मुझे अपने दिल में रख ले और चूंकि मैं अत्यधिक सावधानी चाहता था। अतः मैंने भी उसके प्यार का उत्तर प्यार ही में दिया और इस तरह मनोविनोदों और रोचक गप्पों पर उतर आया कि फरमाइश करके गाना सुना और रात के बारह बजे सोया। चमकी को पूछा तक नहीं। यद्यपि देखता था कि वह बार-बार किसी बहाने से उठती थी और देखती थी कि किस मजे से गाना-बजाना हो रहा है और हँसी-मजाक हो रहा है।

नतीजा इसका जाहिर है। तबियत और भी कुन्द हो गई। दुःख व क्रोध के कारण चमकी की ओर मैंने रुख भी न किया। मैं कदापि उस मैली कोठरी में चमकी से बातें करने नहीं जा सकता था।

चमकी ने जो यह हाल देखा तो उसकी समझ में न आया कि यह 'उलटा पहिया' कैसे घूम रहा है। उसको क्या खबर कि मामला क्या है। वह यही समझी कि उस पर नजला जो गिरा है वह मेरी अप्रसन्नता के कारण है। अतः बेचारी अत्यधिक दुःखी और सहमी हुई थी। मुझे उसकी दशा पर दया आई। दफ्तर से आया तो पलंग पर बैठ गया। आवाज दी 'चमकी' तो एकदम से 'आलीजाह' कह कर जैसे उछल पड़ी, खड़ी हो गई बोली—'हुकुम !'

मैंने कहा—'तनिक पैर तो धो दे।'

छोटी बी एकदम से बेकल हो गई। बोली—'क्यों, लाओ, मैं धो दूं।'

मैंने कहा—'पागल हुई हो !'

इतने में चमकी लोटा, तौलिया और तसला लिए लपकी आई और लाकर रक्खा। छोटी बी एकदम से उठ आई और हाथ से लोटा और तौलिया लेती हुई बोली, 'तू जा, काम देख।'

और चमकी जैसे मुरझा कर रह गई। मगर मैं नहीं माना। डाँट कर मैंने कहा—'तुम दीवानी हुई हो। मैं तुमसे पैर धुलवाऊँगा। ...चलो...होश की दवा करो...चल री, इधर आ'(चमकी से कहा) और हँस कर छोटी बी से कहा—'तुमसे मुँह धुलवाऊँगा...छोड़ो लोटा।'

मैंने इस तरह कहा कि वह भी हँसने लगी और लोटा चमकी को दे दिया।

चमकी ने मेरे पैर धोने शुरू किए। मेरे दोनों पैर चीनी के तसले में रख कर पानी डाला और साबुन खूब अच्छी तरह हाथों में मल कर पैरों को अच्छी तरह टखनों के ऊपर से लेकर उँगलियों तक से सूँत-सूँत के मालिश करनी शुरू की। सामने ही छोटी बी बैठी थी। उससे बातें भी करता जाता था और एक हाथ में प्याली ले चाय भी पी रहा था और चमकी को हिदायत भी करता जाता था।

जैसे ही उसने पैर की उँगली पकड़ी है, मैंने पैर के अँगूठे और अँगुली के बीच उसकी अँगुली जोर से पकड़ कर दुष्टता से दबा ली। या खुदा! दिल को भी दिल से कैसी राह होती है, मैं बयान नहीं कर सकता—एकदम से मारे खुशी के चमकी का चेहरा तमतमा उठा और आपे से बाहर होकर उसने किस कदर मेरे पैर को अत्यधिक प्यार से दोनों हाथों से दबाया है और किस तरह अपनी फना-कर देने वाली नजरों से मेरी ओर देखा है कि यह मालूम दे कि जैसे उस सुन्दर और चमकदार आँखों से प्यारभरी प्रसन्नता के फव्वारे निकल रहे हैं। मैंने उसकी अँगुली धर के मरोड़ दी और मजा यह कि एकदम से छोटी बी से बातों का सिलसिला छोड़कर कहा—'अन्धी, उँगली तोड़े देती है!'

बस कुछ न पूछिए कि इस 'उल्टा चोर कोतवाल...' वाले वाक्य ने चमकी को क्या नहीं प्रदान कर दिया। मुझे अब यह कहने की आवश्यकता नहीं रही कि सौभाग्यशालिनी! न तो तुझे मैंने कमरे

से निकाला है और न मुझसे रुष्ट हूँ।

उसके बाद पैरों को धोने का काम उसके लिए कितना दिलचस्प हो गया कि निवेदन नहीं कर सकता और कितनी सुविधाएँ और कितनी अधिकता इसमें उसने दी है कि रहा न गया छोटी बी से, और बोली—'अब पैर न हुए आफत हो गई—कि अभी धुल रहे हैं।' और सचाई भी है कि देर लग गई थी। चमकी ने जल्दी से वैसलीन और पानी मिला कर पैरों पर तेजी से मला और हाथ से खूब साफ करके तौलिये से रगड़ कर पैरों को खुश्क किया। घाइयों में तौलिया डाल-डाल कर जल्दी-जल्दी और खूब रगड़-रगड़ कर अपना कार्य समाप्त किया।

२७

उसी दिन की बात है। खाना खाने के बाद ही हम दोनों बातें कर रहे थे। छोटी बी लेटी हुई थी। मेरा दिल बातों में बिल्कुल न लगता था। उठ कर जरा टहला और सीधा चमकी की ओर गया। एक बार मुड़कर छोटी बी ने देखा। चमकी अपनी अँधेरी कोठरी के सामने चारपाई पर लेटी थी। मुझको देख कर हड़बड़ा कर उठ बैठी। मैं उसके पलंग पर बैठ गया। वह पास ही जमीन पर बैठ गई। धीरे-से काँपती हुई आवाज में उसने कहा—'आली-जाह' और प्यार से मेरी पिंडलियाँ दबाने लगी। मैंने उसके मैले बिछौने, अँधेरे बरामदे और कोठरी को देखा। तबियत में चिड़-चिड़ाहट और झाँज-सी आ गई। मैंने अधिक बातें नहीं कीं। केवल यह कहा कि 'सविस्तार बातें करूँगा। दो-ढाई घंटे बाद चुपके से

मेरे कमरे में आ जाना। वहाँ बातें करूँगा।'

जल्दी वापस आया। छोटी बी ने निहायत नरमी से कहा—'क्यों ? क्या हुआ ?' मैंने कहा—'कुछ भी नहीं····' और चुप हो गया। बहुत जल्दी हम सो गए (मैं नहीं)।

कोई बारह-साढ़े बारह बजे होंगे। चोरी से नहीं, लेकिन धीरे-से मैं उठा। छोटी बी सो रही थी। उठकर मैं अपने कमरे में गया। बिजली जलायी। चमकी जमीन पर लेटी हुई थी। फौरन उठ बैठी—'मैली, कमबख्त····' मैंने धीरे-से कहा—'मैं अपने साथ तुझे नहीं बिठाऊँगा। तू जमीन पर यह लेटना नहीं छोड़ेगी ?'

मैं आकर पलंग पर बैठ गया और ठीक इसी अवसर पर छोटी बी ने दरवाजे से झाँका। मैं ऐसा बन गया मानो देखा भी न हो। झाँक कर वह चली गई और अब हम दोनों ने बातें शुरू कीं। मैं पलंग पर लम्बा हो गया और अपना हाथ चमकी के हाथ में दे दिया। वह मेरी अँगुलियाँ चटखाती और धीरे-धीरे उन्हें काटती रही। साथ ही मेरे तमाँचे खाती जाती एवं अपनी आँखों से मुस्कराती भी जाती थी। मैंने शुरू से लेकर आखिर तक सारा किस्सा सुनाया। उसको उजला और साफ रहने के लिये हिदायत की। जैसे, अपना दर्पण, कंघा और तेल तथा उसी तरह की सामग्रियाँ प्रयोग करने की आज्ञा दे दी। और यह कहा कि अपनी और दूसरी चीजें लाकर मेरे सन्दूक में रख दे और जी चाहे जिस तरह (स्वेच्छानुसार) इस कमरे को ठीक कर ले। यह मेरा कमरा है और छोटी बी को कोई आपत्ति नहीं होगी तथा जब जी चाहे इस कमरे में सो रहा कर। जो छोटी बी पूछे तो कह देना कि मैंने कहा था और यह भी मैंने कह दिया कि जो जी चाहे बाजार से ले आना और इसी कमरे की आलमारी या ट्रंक में ताला डाल कर रख देना। तुझे कोई मना नहीं है। यह सब बातें सुनकर जल्दी-जल्दी वह अपनी आँखें मेरे हाथ से मलने लगी और अपने चेहरे से लगा कर हाथ

को जोर से दबाया—'आलीजाह' उसने एक लम्बी साँस लेकर धीरे से कहा और फिर कहा—'आलीजाह! बीवीजी तो नाराज नहीं होंगी ?'

मैंने कहा—'नाराज तो होंगी; लेकिन मजबूरी है। तू लड़ना मत—चुप रहना। अब यह कमरा तेरा है; लेकिन अपना मैला बिस्तर और मैली-कुचैली चीजें तू वहीं रखना।'

और यह कह कर मैंने कहा—'तू बेहद मैली-कुचैली रहती है। जमीन पर लेटती है। मैं तुझको अपने पास नहीं बिठा सकता हूँ। मैं तुझे गले नहीं लगाऊँगा—हर्गिज नहीं लगाऊँगा।'

मुस्कराती, इठलाती, आँखें चमकाती और अपने नरम और खूबसूरत चेहरे पर कम्पन पैदा करती हुई मेरे गले से आकर लग गई तथा मैं यही कहता रहा कि तुझको गले से नहीं लगाऊँगा, तू जमीन पर लेटती है।

दूसरे ही दिन छोटी बी का मुँह फूला हुआ था। मेरी समझ में न आया कि यह खूबसूरत और जिद्दी बीबी आखिर क्या चाहती है। खासतौर से जबकि तय हो चुका कि चमकी को तलाक नहीं दिया जाएगा।

चमकी जब घर की सफाई और कमरों को झाड़ने-पोंछने में लगी तो मेरे कमरे में उसने खूब देख-भाल की। यह कमरा मेरा था। हमेशा से मेरा कमरा था। इसमें दफ्तर के कागजात और लिखने-पढ़ने की मेज थी। एक और मेज थी जिस पर छोटा दर्पण, कंघा और हजामत का सामान रहता था। यानी इस किस्म के सामान के लिए थी। यह और बात है कि यह सामान छोटी बी के कमरे में और छोटी बी की दर्पण की मेज पर रहा करता था और छोटी बी बार-बार कहा करती थी 'अपनी मेज पर जाकर क्यों नहीं रखते।' इसी प्रकार उसके कमरे में जब चारपाई पर कागज फैलाकर बैठता तो कहती 'मैंने कहीं नहीं सुना कि अपने लिखने की मेज

छोड़कर चारपाई पर दफ़्तर जमाया जाए।' इसी कमरे में मेरे कपड़ों की खूँटी और जूते-मोजे और कपड़ों के ट्रंक थे। इस कमरे में कोई चीज ऐसी न थी जिससे छोटी बी को दिलचस्पी हो। एक पलंग था जिस पर साधारणतः पलंगपोश पड़ा रहता था और बहुत कम ऐसा होता कि छुट्टी के दिन—दिन को या कभी-कभार रात को मैं यहाँ सोता होऊँ। मैं सदैव छोटी बी के कमरे में उठता-बैठता और वहीं रहता भी था। यह कमरा छोटी बी के कमरे से मिला हुआ था।

धीरे-धीरे चमकी ने अपनी चीजें ला-ला कर उसमें रखना शुरू कीं। मैंने इशारा कर दिया था और खाना खा कर मेरा पलंग पर जा लेटना काफी इशारा था कि चमकी झट से आ जाती। और मेरे तलवे सहलाना या पैर दबाना शुरू कर देती। छोटी बी झाँकती तो मैं झट से आखें बन्द कर लेता।

छोटी बी ने देखा कि चमकी इसमें जमी जाती है तो बेकल-सी हो गई। तेज होकर एक दिन छोटी बी पहुँची। चमकी पलंग पर लेटी थी। 'अरे, तू यहाँ कैसे लेटी है ?' जल कर छोटी बी ने कहा। चमकी हड़बड़ा कर उठी और कह दिया—'आलीजाह ने बुलाया था।' हालाँकि मैं खुद छोटी बी के कमरे में लेटा हूँ। बेचारी कस-मसा कर रह गई।

कहने लगी जोर से चीख कर—'बुलाया था तो क्या यह भी कह दिया था कि यहीं की हो रहो—जाओ अपने कमरे में।'

और वह उठकर चली। मुड़कर जो देखा तो मैंने हाथ हिलाकर फिर इशारा कर दिया। यानी यह कि फिर आ जाना और वह फिर आ गई। मैं छोटी बी के कमरे ही में रहा; लेकिन चमकी मेरे ही कमरे में और मेरे ही पलंग पर मेरे ही हुक्म से—बाहरी तौर पर निकाल देने पर भी पड़ कर सो गई और फिर छोटी बी ने जो सुबह उसकी पकड़ की, तो फिर उसने वही कह दिया कि 'आलीजाह ने बुलाया था।' और मैंने इसकी पुष्टि कर गर्दन झुका ली। मगर

कनखियों से मैंने देखा कि छोटी बी का चेहरा तमतमा उठा था और वह बल खा कर रह गई। चमकी हट गई तो मुझसे छोटी बी ने पूछा—'तो क्या तुमने यह कह दिया है कि नित्य इसी कमरे में सोया कर।'

मैंने कहा—'नहीं तो।'

'फिर यह कैसे यहाँ सोई—मना करने पर भी ?'

मैंने जरा रुक कर अत्यधिक गम्भीरता से कहा—'अब तुम मुझे क्यों लज्जित करती हो ?'

और यह कह कर मैंने बस एक नजर तो छोटी बी को देखा। दुःख के कारण एकदम से उसका चेहरा सफेद होकर रह गया और मैं ? मैं चिड़चिड़ा हो रहा था जैसे कोई अकारण छेड़ता हो।

परिणाम इसका और क्या हो सकता था। शनैः-शनैः चमकी ने कमरे पर एकदम ही दिन में पूरा अधिकार जमा लिया। हाँ, उसका मैला बिस्तर अवश्य अँधेरी कोठरी में था, अन्यथा उसकी चीजें अलमारी में—वह अलमारी जिसमें दफ्तर के कागजात और मिसलें आदि रहती थीं या मेरे बड़े ट्रंक में। और यह अधिकार इस अप्रिय खींचा-तानी का प्रारम्भ था जिसने कुछ दिन बाद ही'''।

२८

छोटी बी ने इस 'कब्जा मुखालिफाना' के विरुद्ध विरोध उठाया। शिकायतों का बतंगड़ बाँध दिया। वह तो स्वयं चमकी को मारती; लेकिन उसके पास 'आलीजाह जिद्द' ऐसी थी कि छोटी बी मारने से बाज रही। उसने हर बात की ओर निहायत ही नम्रता

से मेरा ध्यान बिलाया और मैंने बड़ी कोशिश से हर बात को सुन-कर उसकी 'रोक-थाम' की। परिणाम खाक भी नहीं। केवल इस प्रकार के उखड़े-उखड़े जुमले—

'...मेरा सब तेल नहीं डाला—थोड़ा-सा मैंने ही दिया था।... अब नहीं दूंगी। मेरा कंघा करती है चुड़ैल कहीं की। बुलाओ तो सही...कौन-सा कंघा?...यह...यह कंघा तो मैंने उसी को दे दिया था...तुम्हारा काम नहीं करती!...अरी, क्यों री चमकी...किधर गई...देख तो, ये क्या कहती हैं...होश में रहना जरा...।' मालूम हुआ सब काम करती है। स्वयं ही छोटी बी न बदन दबवाती है, न सिर, न पैर। वह बेचारी क्या करे; लेकिन मैंने फिर भी कह दिया 'होश में रहना जरा। फिर पिटेगी बुरी तरह।' और अवसर पाकर इशारा कर दिया कि डरना मत।

इन बातों का नतीजा यह हुआ कि छोटी बी के सब्र का पैमाना मुँह तक भरना शुरू हुआ। रोजाना नित-नई शिकायतें। उचित भी और अनुचित भी। चमकी से लड़ना और उसको परेशान करना तथा तंग करना शुरू कर दिया—बात-बात पर बिगड़ना और रोज की मुझसे शिकायतें और फिर मुसीबत यह कि शिकायतें प्यार के लगाव देकर। गले मिल-मिल कर, गले में बाँहें डाल-डाल कर, मेरा कंधा अपने आँसुओं से तर कर-करके। मैं भी आखिर को एक मुहब्बत करने वाला मियाँ था। स्वयं मेरा दिल हिल-हिल जाता। वह जो कहती, कर देता। चमकी को खूब डाँटता भी, मारने को भी कहता; लेकिन सचाई यह है कि कोई बात भी हो भला! परिणाम यह कि छोटी बी की प्यारभरी शिकायतें धीरे-धीरे प्रभाव-रहित और व्यर्थ ऐसी कि उनका तनिक भी असर न होता था और सचाई यह है कि सचमुच कोई ऐसी बात ही न थी जिस पर वह इस प्रकार पिघल कर शिका-यत करे। कुछ ही दिनों में छोटी बी एक 'आह' की प्रतिमूर्ति और चमकी एक विलासप्रिय और शक्तिपूर्ण 'वाह' बन गई।

सहिष्णुता के दबाव ने छोटी बी को दुबला कर दिया। फूल-सा चेहरा हर समय कुम्हलाया रहता था। मगर मेरा इसमें भला क्या दोष था! बात-बे-बात वह स्वयं सुलग उठती थी।

इधर चमकी की चमक में वृद्धि हो रही थी और होती गई। एक नटखटपन और ठाट-बाट इस तबियत में स्पष्ट दिखाई देता था। उसकी अदा में चित्ताकर्षकता बढ़ती मालूम होती थी। अब वह नौज-वानी और बनाव-शृंगार का एक हरा-भरा गुलदस्ता थी। प्रेम व प्यार ने उसके अस्तित्व को जाग्रत कर दिया था। बस, वह दशा कि सितार का एक झनझनाता तार है कि छेड़ दिया मिजराब से और पड़ा झंकार रहा है। अब तक यह मैली रहती थी; लेकिन अब सफाई ने उसको नये सिरे से गजब की चमक दे दी। उसके बदन और शारी-रिक अवयवों की प्रत्येक फड़कन मुझे चित्ताकर्षक मालूम होती थी।

संक्षेप में, छोटी बी से मिलना दर्द की कथा का दुहराना और चमकी से मिलना इश्क व मुहब्बत का एक महकता हुआ हार गले में डालने के बराबर था। लेकिन बस इतने पर नहीं हुई। शायद कुद-रत की यह मंशा है कि हर पुराना पाठ दुहराया जाय।

छोटी बी और चमकी से दिन-रात की चिकल्लिश का नतीजा यह निकला कि चमकी ने पहले तो धृष्टतापूर्ण चुप्पी से काम लिया। फिर मौन चुप्पी पर नौबत पहुँची। और ये तमाम रास्ते मेरे सामने और मेरी जानकारी में पार हुए। ठीक उसी तरह जैसे छोटी बीबी और बड़ी बीवी के साथ हुआ। वही ड्रामा अब मेरे सामने दुहराया जाने लगा। जिस तरह मैं पहले उस ड्रामे को देखता था उसी प्रकार अब भी देखने वाला था। जहाँ तक अत्याचार और बेरहमी का प्रश्न है, पूर्वापेक्षा मैं अब अधिक समझदार और अधिक सदय था। छोटी बी का उस ड्रामे में जो धींगा-धींगी का पार्ट था, अब इस ड्रामे में भी वैसा ही पार्ट था। जिस प्रकार वह बड़ी बीवी से बिना बात और बेवजह लड़ती थी, उसी तरह चमकी से वह बेबात और नित्य बेवजह

लड़ती थी। जिस तरह इस ड्रामे को मैं चुपचाप देखना पसन्द करता था उसी तरह यह ड्रामा भी मौन साधे हुए देख रहा था। अन्तर था तो केवल यह कि उस बार मैं बड़ी बीबी के अधिकारों की दुर्दशा देखता रहा और कुछ न कर सका और इस बार यथाशक्ति चमकी को पद-दलित होने से बचा रक्खा था। खुदा गवाह है जो कभी दिल में खयाल भी आया हो कि चमकी छोटी बी के अधिकारों को तिरछी नजर से भी देख सके। पैरों से कुचलना तो बड़ी बात है। उस बार मैं अधिकार से दूर था और इस बार अधिकार के साथ था; मगर एक और भी अन्तर था। उस बार 'जवानी' और 'बुढ़ापे' का सामना था और इस बार 'जवानी और 'जवानी' की टक्कर थी। परिणाम यह कि मेरे देखते ही देखते अप्रसन्नताओं ने शोर मचाने का रूप धारण कर लिया और छोटी बी अपने पूरे स्त्रियोचित गर्व के साथ प्रज्वलित सूर्य की भाँति सामने थी और उसके सामने एक तिनके के समान चमकी—जिसको मुझे छोटी बी के अन्यायपूर्ण अत्याचार से बचाना कठिन हो गया।

२६

जब आपके झगड़ों में गवर्नमेन्ट हस्तक्षेप नहीं करती तो एक पक्ष कानून को अपने हाथ में ले लेता है। छोटी बी के सब्र का पैमाना जब मुँह तक भर गया और नौबत चमकी के विद्रोह पर पहुँची तो छोटी बी क्रोधावेग से पागल हो गयी। उसने चमकी को मारना शुरू किया।

एक दिन की बात है कि मैं दफ्तर से सीधा एक जलसे में चला

गया और वहाँ से सूर्यास्त के बाद घर आया। अब घर में जो आया तो नक्शा ही दूसरा। छोटी बी के हाथ में जूता और चमकी मेरे कमरे में किलेबन्द ! मैं सख्त घबराया कि मामला क्या है। खैर तो है। छोटी बी से पूछा तो वह जूता फेंक कर सिर पकड़ कर रोने लगी। 'खैर तो है ? क्या हुआ ?' मैंने पूछा। वह एकदम से प्रज्वलित होकर फट पड़ी। हजारों ही गालियाँ चमकी को सुना डाली और सैकड़ों ही मुझे। तब जाकर मुझको मालूम हुआ कि मामला क्या है।

मेरे कागजात वगैरह की अलमारी की कुँजी अक्सर दफ्तर में रहती थी। मेरे ट्रंक में प्रथम तो ताला ही न लगता था और जिसमें लगता था उसकी कुँजी साधारणतः मेरी जेब में रहती थी और जिस ट्रंक में ताला नहीं लगता था, उस ट्रंक के अन्दर एक बड़ा-सा खाना था। उसकी कुँजी इस खाने में पड़ी रहती थी। अब छोटी बी ने जो इन सब चीजों को सुरक्षा से ताले में बन्द पाया तो सन्देह हुआ। मैंने फौरन आपत्ति कर दी कि अभी-अभी कुँजी यहीं थी और चमकी से भी तलाश करायी कि ढूँढ़ जल्दी। यद्यपि कुँजी खुद चमकी के पास थी। उसने खूब चुपके-चुपके मुस्करा-मुस्कराकर ढूँढ़ी। वह भला क्या मिलती ? रात को चुपके से चमकी ने सब चीजें निकाल कर कागजों वाली अलमारी में रख दीं और दूसरे दिन सुबह को ही कुँजी ढूँढ़ कर दी। दर्पण के तख्ते के नीचे बतायी और झट मैंने पुष्टि कर दी कि वहाँ रख कर भूल गया था। इसके पूर्व कि छोटी बी कह सके कि उसने खुद दर्पण उठाकर देखा तब नहीं थी, बात उलझ कर रह गयी और मैंने कह दिया, 'सम्भव है कि मेरी याद ने गलती की हो, लेकिन अब छोटी बी ने चमकी को पकड़ा—'मूर्ख कहीं की।' तो वह फौरन कहने लगी कि हाँ, मैं भूल गयी, फलाँ जगह झाड़ने में मिली। छोटी बी ने बड़ा फजीहता कर डाला। मुझे भी खूब घसीटा। मगर मैं तो इस वबाल से निकल चुका था। इसमें सिवा अलमारी के सब कुँजियाँ थीं। अलमारी की कुँजी जो मुझसे

पूछी तो मैंने दफ्तर में बतायी। यद्यपि इन कुंजियों के साथ ही वह भी गुच्छे में थी और छोटी बी ने खुद देखी तो थी और मेरे हाथ में देखी थी, मगर मैंने यही कह दिया कि 'तुम्हारा खयाल गलत है, मैं खुद दफ्तर की दराज में रखकर आया हूँ।' गवाही में चमकी को पेश कर दिया। विवशत: छोटी बी चुप हो गयी और क्यों न होती! बात ही बेतुकी थी। कहा, 'तुमको दफ्तर के कागजातों और अलमारी से क्या मतलब!' छोटी बी को सचमुच पूरा सन्देह हो गया था कि इस 'ताला-कुंजी' में कुछ भेद जरूर है, और था। यह कल की घटना थी और रात को छोटी बी ने मुझसे जो फिर यही पूछा तो मैं बिगड़ गया यह कह कर कि 'तुमने क्यों मेरा पीछा लिया है।' और कुंजी को बताया कि दराज में रक्खी है। छोटी बी कुछ न बता सकी कि क्यों मेरा पीछा लिया है।

आज दोपहर को यह हुआ कि अलमारी की अकेली कुंजी चमकी ने इस गधेपन से अपने कुर्ते में छिपाकर रक्खी थी कि न मालूम किस काम से जो वह झुकी तो गिर गयी और छोटी बी ने देख ली। चमकी ने झट उठा कर छिपा ली। छोटी बी ने माँगी तो न दी। लेकिन उसने मार कर ले ली और चली अलमारी खोलने तो चमकी ठीक वक्त पर हाथ से झपट कर भागी। छोटी बी ने फिर पकड़ कर चमकी को खूब मारा और कुंजी ले ली। तू और तू कुछ उस की समझ में न आया। एकदम से कमरे में घुस कर दरवाजा बन्द कर लिया और छोटी बी ने घेरा डाल लिया और कार्यवाही घिराव की जारी ही थी कि मैं पहुँचा। गजब यों और आ गया कि मुझको सचाई मालूम नहीं और मैंने शपथ खाकर कह दिया कि कुंजी दफ्तर की दराज से निकाल कर मैंने मेज पर चलते समय रक्खी थी। मगर लाना भूल गया। यद्यपि कुंजी थी खुद छोटी बी के हाथ में। अब प्रश्न यह था कि क्यों मैंने चमकी से षड्यंत्र रच करके वास्तविकता छिपायी और आखिर इस अलमारी में क्या है। अत: यह तकाजा

हुआ कि अभी दिखाओ अलमारी।

मैंने नम्रता से बतलाया कि अलमारी में कुछ भी नहीं है, सिवा चमकी की चन्द चीजों के और जी चाहे अभी देख लो, मगर गुस्से को थूको। यह कह कर मैंने दरवाजा चमकी से खुलवाया। छोटी बी भयंकर शेरनी की भाँति कमरे में घुसी। चमकी एक ओर को सहमी-सी खड़ी रही और छोटी बी ने अलमारी खोली। अलमारी में चमकी के चमकदार कपड़े और इसी किस्म की चार-छः नहीं बल्कि बीसियों चीजें थीं। ये कपड़े कब पहने जाते थे। अकेले में, वह भी बहुत कम। लेकिन थे तो बेशक। और फिर तेल और इत्र भी, गरज यह, क्या नहीं था। तनिक सोचिये और न्याय कीजिये। इससे अधिक और क्या छोटी बी के जज्बात का सम्मान हो सकता था कि ये कपड़े और चीजें केवल इस कारण से छिपा दिए गए थे कि छोटी बी के दिल को दुःख न हो, जज्बात को ठेस न लगे, उसका दिल न कुढ़े और उसको रंज न हो। अब परिणाम इस सद्भावना का मेरे सामने था।

छोटी बी ने इन सब चीजों को देखा। क्या कह सकती थी। कहाँ से आये? बाजार से कौन लाया? चमकी—शायद एक-आध चीज मैंने खुद ला दी। क्यों? यों ही। छिपाई क्यों? ताकि तुम्हें रंज न हो। तुमने इस बात को मुझसे छिपाया क्यों? इसलिये, कि तुम्हें बुरा लगता। इससे पूर्व यह बक्स में रक्खे हुए थे? हाँ, रक्खे थे किसकी आज्ञा से? मेरी आज्ञा समझो। तुमने चमकी को कुँजी दे दी? हाँ, दे दी थी। क्यों? यों ही। और मुझसे झूठ-मूठ कह दिया कि खो गयी? हाँ! क्यों? वह भी इसलिये कि तुम कुपित न हो। और तुम इस चुड़ैल को मेरे बराबर करके रक्खोगे? नहीं तो। फिर इससे क्या मतलब? कुछ भी नहीं। मैं तो ये बातें सहन नहीं कर सकती'''ठहर जा चुड़ैल'''।

यह कह कर मारे क्रोध के छोटी बी काँप गयी और हिल गयी।

चमकी कदाचित् इस अवसर पर यह विचित्र संघर्ष सुनकर हँस दी। और छोटी बी पलक झपकते में शेरनी की तरह झपट कर लाइलाज मुसीबत की तरह गिरी जो चमकी पर तो उसके बाल नोंच डाले और पकड़ कर जूतियाँ जो मारना शुरू की हैं तो बस, मालूम हुआ कि पागल हो गयी। मैं इसको मार डालूंगी, ले हँस···हँस···और हँस···जूती पर जूती। मैं बीच में पड़ गया और चीख रहा हूँ और बीच में अपने को डालता हूँ। मगर वह नहीं मानती। हाथ से जूती ली। पकड़ कर जबरदस्ती उठाया। एक पगली और भयभीत खूनी की तरह उसने झटके से अपने को छुड़ा लिया और क्रोध के आवेग में आपे से बाहर होकर एक लकड़ी उठाकर इस जोर से चमकी के मारी कि सिर फाड़ दिया और जब तक मैं रोकूँ-रोकूँ, तड़ातड़-तड़ातड़ सिर और मुँह पर लकड़ियाँ-ही-लकड़ियाँ ऐसी मारीं कि सिर-मुँह सब लहू-लुहान कर दिया। मैंने पकड़ कर खींचा, गरज कर डाँटा—'खबरदार, जो एक कदम आगे बढ़ाया।' झटक कर मैंने लकड़ी छीनी और धकेल कर अलग किया और मारे क्रोध के मैं भी काँपने लगा और दो-चार शब्द निहायत ही सख्त कहे—'हटो परे, निकलो यहाँ से···होश ही में नहीं···बढ़ो तो सही···' मैंने भी क्रोध में तेवर पर बल डाल कर कहा—'होश में नहीं हो···चलो, यहाँ से ···निकलो। खबरदार, जो तुमने इधर कदम रक्खा···।'

एकदम से छोटी बी का पागलपन मानो रुक गया। आँखें फटी की फटी। चेहरा अत्यधिक भयभीत। मेरी ओर उसने घूर कर देखा और कहा, 'इस बाँदी का पक्ष लेकर तुम मुझको कहते हो कि निकलो।'

'हाँ।' मैंने जल कर कहा, 'हाँ, कहता हूँ—निकलो यहाँ से··· दूर हो।'

'क्या तुम मुझसे वास्तव में कहते हो कि निकलो?'

'हाँ, कहता हूँ।' मैंने कहा—'अगर नहीं निकलोगी तो फिर···'

'तो फिर···तो फिर ?' छोटी बी ने गरज कर कहा—'तो फिर क्या करोगे ?'

'यह करूँगा कि···बस···इस वक्त कुशल इसी में है कि सामने से दूर हो। छोटी बी, अगर कुशल चाहती हो तो सामने से हट जाओ—निकलो यहाँ से।'

'मैं नहीं निकलूँगी।'

'नहीं कैसे निकलोगी···मैं तुमको···'

यह कह कह मैंने गुस्से से हाथ पकड़कर जो चाहा कि छोटी बी को कमरे से निकाल दूँ तो मारे क्रोध के उसने एक काँपती हुई चीख मारी। अपना मुँह और सीना पीट लिया और मूर्छित होकर गिर पड़ी।

मैंने और चमकी ने उसे सँभाला और बाहर बरामदे में एक पलँग पर लिटा दिया। छोटी बी के बदन से पसीने के फव्वारे छूट रहे थे, चेहरा कागज की तरह श्वेत हो रहा था। चमकी के होश उड़ गए। 'आलीजाह! यह क्या हुआ। अरे मेरी बीबी जी'—ऐसी घबराई कि रोने और चीखने लगी। मैंने उसको डाँटा। पंखा झला, पानी के छींटे दिए, उठाकर आराम से फिर बिस्तर पर लिटाया। चमकी के सिर और मुँह से खून बुरी तरह बह रहा था। अतः मैंने उससे कहा कि तू जाकर अपना सिर और मुँह धो और खुद छोटी बी की सुश्रूषा में लगा। जल्दी से नौकर को डाक्टर के लिए दौड़ाया और इस बीच में होश में लाने की जो कुछ युक्तियाँ सम्भव थीं, करने लगा।

डाक्टर आया और उसने देख-भाल कर दवा दी। थोड़ा-बहुत हाल भी बताना पड़ा। हिदायत करके होश में लाकर चल दिया। मैंने देखा कि होश आया तो उसने फिर जान-बूझकर आँखें बन्द कर लीं। मैंने कुछ दूध देना चाहा तो नहीं पिया। इसी तरह शान्त पड़ी रही।

रात को एक अनोखी घटना घटी। दो बजे होंगे। आँख जो खुली तो क्या देखता हूँ कि चारपाई खाली। चमकी को आवाज दी जो बराबर ही जमीन पर दरी बिछाये सो रही थी, हड़बड़ा कर उठ बैठी। छोटी बी अदृश्य थी। घबरा कर हम दोनों इधर-उधर दौड़े। मकान का दरवाजा खुला हुआ था और वह जीने में मुँह के बल बेहोश पड़ी हुई थी। ऐसा मालूम होता था कि निर्बलता के कारण बैठ गयी और उसी तरह झुक गयी। अगर जरा भी हिले-डुले तो नीचे सीढ़ियों पर लुढ़कती चली जाती। उसी हालत में हम दोनों उठा कर लाये। सुबह को कुछ हालत ठीक थी; लेकिन मैंने देखा कि मुझको देखते ही आँखें बन्द कर लेती है। मैंने करीब आकर प्यार से बालों में हाथ डाला। चुमकार कर हाल पूछा। कराह कर एक करवट ले ली और मैंने देखा कि आँखों से आँसू ढुलकना शुरू हो गये। फिर बहुतेरा मैंने बात करनी चाही, मगर उसने आँखें न खोलीं और बदस्तूर आँखों से आँसू बहते रहे। बहुत शीघ्र मुझे देखकर जान-बूझ कर आँखें बन्द कर लेती है, अन्यथा अपेक्षाकृत कल से बेहतर है। मैंने चमकी को चुपके से सिखा कर भेजा और खुद बाहर चला गया। चमकी ने पैर दाबे, हाथ दबाये, रो-रो कर क्षमा माँगने लगी तो आँखें खोल दीं। धीरे-से उत्तर दिया कि 'क्षमा किया' और कहा कि 'अच्छी हूँ' खाने को पूछा तो अस्वीकार कर दिया। पैरों को दाबने को पूछा तो अस्वीकार कर दिया और कहा कि मेरे भाई को बुलवा दो। उसके बाद मैं जो आया तो फौरन आँखें बन्द कर लीं और मैंने लल्लो-चप्पो की तो फिर वही चुप्पी और आँसुओं की धार।

किस्से को इस प्रकार संक्षिप्त करता हूँ कि कैसा मैं रोया हूँ—हाथ जोड़े हैं। खुशामद की, क्षमा माँगी, पैरों पर सिर रक्खा है लेकिन वहाँ सिवा आँसुओं की झड़ी के और कुछ न था और आँखें बन्द, दवा और खाना लेने से इन्कारी और स्थिति अधिक खराब हो जाने

के कारण मैं फिर उठ आया। कोई नौ बजे फिर डाक्टर आया। उससे मैंने सब हाल कहा और स्वीकार किया कि मैंने कुछ कठोर शब्द कह दिये हैं। उसने हाल सुनकर परामर्श दिया कि भलाई इसी में है कि समीप न जाओ और कोई ऐसी बात न करो जिससे दुःख पहुँचे या जज्बात में जोश आये। इसी दिन भाईजान को तार दे दिया गया।

चमकी से छोटी बी राजी थी। उसको सेवा भी करने दी, मगर न तो कोई बात की और न खाना खाया। नतीजा यह कि दूसरे दिन जब तक भाईजान आयें, कमजोरी के कारण यह हाल हो गया कि हिलना-डुलना कठिन।

भाईजान आये तो उनको मैंने सूक्ष्म रूप में हाल बतलाया। स्वीकार किया कि चमकी को बचाने में गुस्से में एकाध सख्त लफ्ज जबान से निकल गया। बेचारे चुप हो गये। बहिन से मिले—बहिन ने आँखें खोलीं। भाई के गले में हाथ डाल कर खूब रोयी और कुछ चुपके से उनसे कहा। देर तक वह बैठे रहे। फिर मेरे पास आकर कहने लगे कि भलाई इसी में है कि घर ले जाऊँ। मालूम होता है कि कसम खाली है कि जब तक घर न पहुँच लूँगी न तो दवा खाऊँगी न खाना। बहुतेरा उन्होंने समझाया, मगर बेकार। इस तरह हठ पर हद थी कि आशंका यह थी कि आग्रह किया तो न मालूम क्या हो। मैंने भाईजान से कहा कि बिना मेल-जोल कराये कैसे ले जाइयेगा। अतः उन्होंने मुझे मेल करने का अवसर दिया। मगर जैसे ही मैं पहुँचा तो फिर वही यानी आँखें बन्द करके करवट ले ली। कैसी-कैसी मैंने लल्लो-चप्पो की है। सिर पैरों पर रख दिया, मगर वहाँ सिवा आँसुओं के और रोने के कुछ भी जवाब नहीं था और वह भी इस तरह कि हिचकियाँ लेकर मुँह से झाग निकलने लगे और फिर दौरा तथा शरीर के ऐंठे जाने की सी दशा हो गयी कि शीघ्र ही फिर डाक्टर को बुलवाया। उसने

अत्यन्त क्रुद्ध होकर कहा कि अगर अब फिर इसी किस्म की हर-कत की गयी और दौरा हो गया तो बिल्कुल घातक होगा। विव-शतः रोते-पीटते उसी दिन गाड़ी रिजर्व करवा कर विदा किया। वापस जो स्टेशन से आया हूँ तो चमकी का रोते-रोते बुरा हाल था।

'आलीजाह, तुमने मेरे कारण बीबीजी का यह हाल कर दिया।'

कहने लगी—'मार डालने दिया होता।'

मैंने कहा—'चुड़ैल कहीं की—मार डालती वह तुझे।'

दो-तीन दिन तक मेरी अजीब हालत रही। ऐसी कि दफ्तर से आता तो तीर की तरह दौड़ कर चमकी आती। पलंग पर सिर पकड़ कर बैठ जाता। चमकी जूते के फीते खोलकर जूता उतारती, मोजे उतारती और स्लीपर पहनाती और प्रतीक्षा करती कि मैं उठूं। मगर बैठे-बैठे मैं इसी तरह लेट जाता। आँखें बन्द और चमकी धीरे-धीरे पिंडलियाँ दबाना और सूंतना शुरू कर देती। इस तरह देर तक पड़ा रहता, बिल्कुल बेखबर-सा। फिर उठता जैसे बिल्कुल बेबस। चमकी कपड़े उतार कर सिर से टोपी लेकर रख देती। चाय लाती। एक प्याली पी—वह भी चुप और मैं भी चुप। पलंग पर तकिये में मुंह देकर पड़ रहा। चमकी पैर दबाने बैठ गयी। सारा बदन दबा रही है और मैं चुप, आँखें बन्द किये। यह भी चुप। यहाँ तक कि वह मुझे छोड़कर घर के किसी काम में लग गयी और मैं पहले की तरह चुप। खाने का समय आया। चमकी ने फिर मेरे तलवे सहलाये। धीरे-से कहा—'आलीजाह, खाना खा लो।' मैंने अस्वीकार कर दिया। प्यार से, लल्लो-चप्पो से मेरे गले में हाथ डालकर, हाथ जोड़कर, खुशामद करके बड़ी मुश्किल से उठाया। एक-दो ग्रास लेकर फिर उसी प्रकार लेट गया।

कुशलपूर्वक पहुँचने का तार पहिले ही आ चुका था। फिर भाई-जान का खत आया कि छोटी बी बिल्कुल अच्छी है, सिर्फ कमजोरी है। मेरी चर्चा करना अत्याचार है। मैंने उचित उत्तर लिख दिया।

इस दौरान में चमकी दिन-रात मेरा दिल बहलाने की ऐसी चिन्ता में लगी रही कि मानो छाती पर सवार दिन और रात। अगर मैं खाना न खाऊँ तो वह भी न खाये। जैसे-तैसे धीरे-धीरे दिल ठिकाने आया। प्रतिपल यह दृश्य आँखों के समक्ष था कि उधर मैं पहुँचा नहीं कि आँखें बन्द कर लीं। क्या सचमुच वह मेरी सूरत से इस कदर बेजार थी!

शीघ्र ही चित्त को शान्ति प्राप्त हो गयी और चमकी ने खाना खाने के बाद चंग उठाया है तो जनाब कहाँ की छोटी बी और कैसा दु:ख! वह मस्त कर देने वाली चंग की आवाज और उस पर चमकी के नाच का नपा-तुला छमाक! वह गजब की मुस्कराहट और उसकी चमकदार और नशीली आँखों का नचाना। फिर मेर बेचैन होकर उसको पकड़ना और उसका छुड़ा कर और मुस्करा कर चंग की गमक पर गील-ही-गील में गा-गाकर हँसना। या खुदा! मर्द भी किस कदर स्वार्थी और निर्मम बनाया है! चमकी ने मस्तिष्क की चिन्ता को दूर करके सभी मानसिक एवं आत्मिक पीड़ाओं एवं चिन्ताओं को दूर कर दिया। छोटी बी की तकलीफ और वेदना का खयाल भी न रहा। इन कहकहों में कितने मजे की आजादी थी! मैं और चमकी और तीसरा कोई नहीं। क्या यह सत्य नहीं कि छोटी बी का अस्तित्व ही समस्त पीड़ाओं का कारण हो रहा था। कोई अब टोकने वाला नहीं था। चाहे चमकी रंगदार कपड़े पहिन कर नाचे और चाहे इसी तरह सुबह तक मसहरी पर पड़ी लेटी रहे।

दूसरे दिन चमकी रेशम की एक बसन्ती साड़ी पहिने, आड़ी माँग निकाले, स्याह पम्प शू पहिने, इत्र में बसी हुई एक महकती हुई दिलकश बेगम थी जिसके चेहरे पर हुस्न की बिजलियाँ कौंध रही थीं और नशीली आँखों में खुशी की परियाँ नाच रही थीं और किस मजे से और किस आजादी से वह घर भर में घूम रही थी, एक खूबसूरत हिरनी की तरह! उठते-बैठते यही जी चाहता कि इस

चचल और पारा-स्वभाव को कलेजे से लगाये रहे। वह सचमुच में पारे का टुकड़ा था जो काँपता हुआ चमकता और रोशनी में तड़-पता, आँखों को चौंधियाए देता था और खुदा भी जब रात को उस पारे के टुकड़े में रागिनी की बिजली भर देता तो मालूम होता कि सारा संसार रागिनी और नृत्य के छमाके पर नाच रहा है। सचमुच छोटी बी क्या गयी, भोगविलास का अध्याय खोल गयी। संक्षेप में कोई दस-पन्द्रह दिन तक लगातार दिन-रात एक अजीब ही हालत रही कि बरसों की चिन्ता दूर हो गयी। भाईजान के पत्र निरन्तर आते रहे जिनसे मालूम होता रहा कि छोटी बी के स्वास्थ्य में सुधार है। उचित और संक्षिप्त जवाब देता रहा। भाईजान के पत्रों का ढंग कुछ अजीब था। एकगुप्त ढंग—जिस पर मनन करने और गहराई तक पहुँचने का मौजूदा दिलचस्पियों की वजह से जरा कम समय था। अतः न तो किसी व्यंगपूर्ण वाक्य पर ध्यान दिया गया और न उसका उचित उत्तर देकर समर्थन करने या सफाई देने का प्रयत्न किया।

३०

अनुमानतः डेढ़ महीने बाद एक पत्र स्वयं छोटी बी का आया। इस दृष्टि से अत्यन्त संक्षिप्त था कि इतने दिन बाद लिखा गया। इसमें लिखा था—'मैंने जो कुछ भी तुमसे धृष्टता की हो वह क्षमा करना। मैं अभागिनी हूँ और दुर्भाग्य से जो कुछ भी मैंने किया वह तुम्हारे शाश्वत प्यार से विवश होकर किया। मैं तुम्हारी हूँ और उम्रभर तुम्हारी ही मुहब्बत में जलती रहूँगी; लेकिन जो निश्चय कर

चुकी, उस पर खुदा मुझको कायम रक्खे। खुदा ने चाहा तो मरते मर जाऊँगी मगर न तो कभी तुमको अपनी मनहूस सूरत दिखाऊँगी...।'

इस पत्र का मेरे दिल पर कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ। बस, सोचता रहा कि क्या उत्तर दूँ। चमकी को बताया कि क्या लिखा है। कहने लगी—'ले आओ उन्हें मना कर।'

मैंने कहा—'चल मक्कार!—आयी वहाँ से मुझे मूर्ख बनाने।'

इस पर शपथें खाने लगी। मैं मारने को उठा और चुप कर दिया। फिर एक संधिपूर्ण पत्र छोटी बी को लिखा। छोटी बी ने इस खत को ज्यों-का-त्यों बन्द किये का किया एक दूसरे लिफाफे में रख करके मुझे वापस कर दिया। मैंने भाईजान से शिकायत की तो उन्होंने लिखा—'उसकी दशा दयनीय है। काश, तुम देखते तो सही अनुमान लगाते। अगर यही दशा रही तो उसका स्वास्थ्य महान संकट में है।'

मैंने इस पत्र का उचित उत्तर दे दिया और परिशोध की शर्तें चाहीं।

फिर उसके कुछ अर्से बाद भाईजान का खतआया कि छोटी बी घुलती चली जा रही है। कई-कई दिन खाना नहीं खाती और दिन-रात रोते गुजरती है, न कोई दवा खाती है। दशा दयनीय है। और मुझे चाहिए कि शीघ्र इस ओर ध्यान दूँ; बल्कि आकर स्वयं कुछ परिशोध करूँ। इस पत्र से मैं कुछ चिन्तित हुआ और एक सप्ताह का अवकाश लेकर गया। मगर खुदा की कसम, मैं समझता था कि सचमुच वह मुझसे नहीं मिलेगी। कैसी-कैसी हरएक ने कोशिश की है, मैंने कैसी-कैसी लल्लो-चप्पो की है, गिड़गिड़ाया हूँ, रोया हूँ, दुहाई दी है, मगर खुदा की पनाह, उसने अपने को कोठरी में बन्द कर लिया और दरवाजा खोलने से कतई मना कर दिया जब तक कि भाईजान दरवाजे पर आकर हलफ न उठावें कि मैं गया—बिल्कुल गया, यानी रेल में बैठकर रवाना हो गया। और

उसने दरवाजा नहीं खोला और विवशतः मुझे जल्द-से-जल्द वहाँ से भागना पड़ा—रोते-पीटते। क्योंकि लेडी डाक्टर जो इलाज कर रही थी उसने बताया कि दशा अच्छी नहीं है और सुसराल वालों और दूसरों से मालूम हुआ कि मेरी मुहब्बत में दिन-रात सिर धुनती है।

इस दर्दभरी कहानी को यों मुख्तसिर करता हूँ कि साल भर के भीतर-भीतर मेरी मुहब्बत में वह स्वाभिमानिनी सचमुच सिर पटक-पटक कर मर गई। तीन बार मैं गया और मरती-मिटती दशा करके हरबार रोता-पीटता वापस आया। जब हालत खराब हुई तो मैंने चमकी से कहा। वह खुद इस कदर घबराई कि बयान से बाहर। कहने लगी—'आलीजाह, तुमने मेरे कारण यह क्या कर दिया ? मुझको तुम छोड़ दो और उनको बुला लो।' मैं छोटी बी की ओर से ऐसा निराश-सा हो गया था कि मैंने चमकी से कहा—'अच्छा, तू खुद जा और उनसे जाकर कह और राजी हो तो जा लेकर आ। तू चली जा।' यह कहकर मैंने चमकी को भेजा और भाईजान को लिखा कि 'मैं इसे छोडने को तैयार हूँ। -

चमकी वहाँ पहुँची तो छोटी बी उसको देखकर मुस्कराईं। चमकी ने दौड़कर उसके पाँवों में सिर रखकर उन्हें आँसुओं से तर कर दिया। छोटी बी ने भी उसे उठा अपने गले से लगा लिया और अकेले में ऐसी बात कही जो मेरे दिल में आज तक मौजूद है। उसने कहा, 'मैंने तुझको माफ किया, मुझे तुझसे प्यार भी है क्योंकि जिसे मैं प्यार करती हूँ उसे तुझसे प्यार है।'; और यह कह कर उसने चमकी के माथे को चूमा और फिर हृदय में उठतेहुए भावावेग के कारण बेहोश हो गई।

संक्षेप में बात यह है कि चमकी ने कैसी-कैसी खुशामदें कीं, क्या-क्या रोई-पीटी है कि घर चली चलो, मैं छोड़ कर चली जाऊँगी लेकिन वहाँ यही जवाब मिला कि इधर आ। और फिर समीप बुला कर गले से लगा कर इसके मस्तक को चूम लिया। और फिर

आँखों से जो आँसुओं की झड़ी लगी तो रोके न रुकी। लाचार हो-कर वापस आई और जो दशा का वर्णन उसने किया है, उसे सुन-कर मेरा हृदय टूक-टूक हो गया। उसकी सचाई का यह प्रभाव हुआ कि चमकी जब सारे हालात बयान करती तो खुद रोती और मुझे समझाती और कहती कि आलीजाह, तुमने बीवीजी की हत्या कर डाली है, उन्हें किसी प्रकार बचाओ।

जब उसकी दशा अत्यधिक बिगड़ी और अन्तिम समय आ पहुँचा तो मैं पहुँचा। लेकिन उस समय भी उसकी लगातार वही जिद थी। मेरे सामने ही उसकी मृत्यु हुई। अन्तिम इच्छा उसकी मुझे देखने की थी। यह सुनकर मेरी दशा भी एकदम बिगड़ गई। मैं जब अन्दर पहुँचा तो मौत का-सा सन्नाटा था। मुझे यह पता नहीं कि कब और किस तरह मुझे उसने देखा। शायद, माँ ने हटा कर दिखाया, मगर देखते ही गर्दन ढुलक गई और बेहोशी आ गई, जो चौदह घण्टे बाद मरने से कुछ क्षण पूर्व ही दूर हो सकी।

अन्त तक इच्छा यही रही कि मरने के बाद भी मैं उसका मुँह न देख सकूँ। मृत्यु का समाचार पाकर मैं गश खा कर गिर पड़ा। जब होश आया तो सिर पकड़ कर बैठ गया और मुझको कहना ही पड़ा कि—

'ओ नारी, तेरा नाम ही स्वाभिमान है!'

घर पहुँचा तो चमकी ने अपनी स्वाभिमानी बीबीजी का शोक मनाया। जहाँ-जहाँ छोटी बी के हाथ से उसके चोटें लगी थीं उन पर केसर और सिंदूर का टीका दिया और मातमी लिबास पहन कर शोक मनाया। फिर चंग बजा-बजा कर मर्सिया पढ़ा—

'ऐ, आलीजाह तुमने मेरी खातिर उन्हें मार डाला।
तुम बहुत निर्दयी और बेवफा हो।
एक दिन तुम चमकी को भी इसी तरह मार डालोगे।
ऐ, आलीजाह तुमने बीबीजी को नाहक मारा।

उनके बाल भूरे थे।

उनका रंग सुर्ख और सफेद था।

वह तुम्हारे प्यार में दीवानी थीं।

तुमसे प्यार करने के कारण ही मुझे मारती थीं।

ऐ, आलीजाह तुमने प्यार का यह बदला खूब दिया।

उनका प्रेम राजपूत के खड्ग की भाँति था।

उनका-सा प्यार मैं कभी नहीं कर सकूँगी।

ऐ मेरे आलीजाह, क्या मैं सच कह दूँ?

उन्होंने मेरे मस्तक को प्यार से चूम-चूम कर तर किया।

मुझे प्यार से गले लगाया—

क्योंकि आलीजाह, तुम्हें मुझसे प्यार है।'

और मैंने इस जंगली की इस तुकबन्दी के अन्तिम शब्दों को सुनकर कहा—

'चुप हो, बदतमीज कहीं की! अब जो कभी तूने यह राग अलापा तो...'

एक ठण्डी साँस मेरे सीने से निकली और मैं खामोश रह गया।

३१

श्रीमान्‌जी, ये हैं मेरे वजूआत ! इनकी बिना पर मैं कायल हूँ कि, ऐ औरत, तेरा नाम खुद्दारी है। अपने जाती तजुर्बे की बिना पर मेरा यही कहना है कि औरत गरीब हो या अमीर, शरीफ हो या जलील—उसको खुद्दारी का माद्दा खुदावन्द ताला ने ऐसा दिया है कि हर मर्द की यही कामना होनी चाहिए कि, ऐ परमात्मा, तू मेरी घरवाली की स्वाभिमान की भावनाओं को—उन भावनाओं को जिनके कारण तुझे उस पर प्रेमाग्नि बरसानी और अनेक विपत्तियाँ ढानी होती हैं, चिरस्थायी रखना।

उस दिन उनका यह किस्सा सुन कर मैंने उनके प्रति सहानुभूति दिखाई और चमकी के विषय में पूछा। एक ठण्डी साँस भर कर कहने लगे, 'भाईजान ! मर्द हद से ज्यादा बेरहम है, उसे अपने मतलब से गरज। आज उस गरीब को मरे डेढ़ साल हो गया, एक-दो माह की बात तो जाने दें। उसके बाद की बात यह पूछिए कि चमकी की चमक में वृद्धि कितनी हुई है और कितने प्रकार के नए गीत और नाच उसने सीखे हैं। इस बीच कितने ही प्रकार के बाजे बजाना उसने सीख लिए हैं। यह तो केवल कहने के लिए ही एक दिक्कती बहस थी। जिसमें जीत पाने के ख्याल से मुझे पिछला किस्सा दुहराना पड़ा। नहीं तो, स्वयं विचार कीजिए कि पुरुषों के पास भला इतना समय ही कहाँ है जो इस प्रकार की घटनाओं को

याद करके व्यर्थं ही सिरदर्द पैदा करें।

सचमुच, उन महोदय का अफसाना इस कदर लम्बा हो गया था कि वक्त ही न रहा, नहीं तो उन साहब के वजूआत भी सुन लिए जाते जिनका ख्याल था कि ऐ औरत, तेरा नाम मक्कारी है। इसलिए सब लोगों ने विदा ली और तय हुआ कि फिर किसी दिन की बैठक में इस बहस को देखा जाएगा।

